॥ श्रीः ॥

# रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

# प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावण-वध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

श्रवण नैन मुख नासिका, हृदय चरण कर शीश ॥
बाण न वेधे इंद्रजित, भागे बचे न कीश ॥ १८ ॥
वालिसुतहि शर अष्टदश, नौ किय नलहि प्रहार ॥
सात मयंदहि पंच गज, ऋच्छपतिहि दशमार ॥ १९ ॥
नीलहि तीस गवाक्ष षट, गंधमादनहिं चार ॥
अपर अमित कपि रीछ तिन, बाणन दिये बिदार ॥ २० ॥
राम लषण सुग्रीव अरु, लंकापति हनुमान ॥
इनहिं जु मारे विशिख शर, तिनको कछु न प्रमान ॥ २१ ॥
भयो सकल कपिदल विकल, आरत करत पुकार ॥
प्राण कंठगत ह्वै परे, बहुरण भूमि मझार ॥ २२ ॥
रघुनंदन तब लषण प्रति, बोले निपट अधीर ॥
नागफांस बंधन कियो, जनु आयो सो वीर ॥ २३ ॥
इमि रघुवर लक्ष्मण अपर, कीश भालु समुदाय ॥
विकल व्यथित शर घातते, बोलत अतिअकुलाय ॥ २४ ॥
कीश ऋच्छ दल को कियो, मेघनाद संहार ।
रुंड मुंड छाये चहूँ, शोणित बहत अपार ॥ २५ ॥
सरसठकोटि सुवीर वर, वानर भालु उदंड ॥
षट घटिका माधि इंद्रजित, बाणन हते प्रचंड ॥ २६ ॥

प्र० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ७४ ॥

सप्तषष्टिर्हताः कोटयो वानराणां तरस्विनाम् ॥
अह्नः पंचमशेषेण वल्लभेन स्वयंभुवः ॥ १ ॥

दोहा—अपर व्यथित कीने अमित, ते बहु मृतक समान ॥
परे भूमि तल विकल अति, भये कंठगत प्रान ॥ २७ ॥
यौं विदारि बाणन सबहि, इंद्रजीत बलवान ॥
निरखि विजय निज मुदितह्वै, कीनो लंक पयान ॥ २८ ॥
वेगि आय पितुचरण गहि, कहो सकल रणहाल ॥
जयकारी पुत्रहि मुदित, उर लायो दशभाल ॥ २९
सकल निशाचर निश्चरी, प्रमुदित कहत निशंक ॥

इंद्रजीत कीनी विजय, अचल भई अब लंक ॥ ३० ॥
उत लंका मधि मोद अति, इत कपि सैन मझार ॥
घायल वीर विहाल बहु, आरत करत पुकार ॥ ३१ ॥
ताही छिन कछु सजग ह्वै, लंकापति वर जोर ॥
जाय सम्हारो सकल दल, धाय धाय चहुँओर ॥ ३२ ॥
तौं लग पवनकुमारहू, लहो चेत कछु वीर ।
बहुरि विभीषण आयकै, दई कपिहि बहु धीर ॥ ३३ ॥
तब हनुमत लंकेश प्रति, बोले अतिहि उताल ॥
चलो सबहि अवलोकिये, को किहि भांति विहाल ॥ ३४ ॥
यौं कहि दोऊ सजग ह्वै, लैकर लूक उजेर ॥
लंकापति हनुमत लखो, दल समस्त चहुँ फेर ॥ ३५ ॥
रुंड मुंड कोटिन परे, कोटिन कहरत वीर ।
कोटिन प्राण सुकंठगत, कोटिन मृतक शरीर ॥ ३६ ॥
यौंहीं हेरत जात दुहुँ, हनुमत निश्चरराय ॥
जे सजीव तिन देत हैं, धीर सुबैन सुनाय ॥ ३७ ॥
चालि हेरे दुहुँ ऋच्छ पति, धरणी परे अचेत ।
नख शिख वेधित शरनते, विकल उसाँस न लेत ॥ ३८ ॥
कही विभीषण जाय ढिग, तात जियत कै नाहिं ।
सुनि सुबैन रिछराजके, चेत भयो हिय माहिं ॥ ३९ ॥
जाम्बवंत तब मंद स्वर, बोले अतिअकुलाय ।
वाणी जानी लंकपति, पै दृगते न लखाय ॥ ४० ॥
कहो विभीषण वेगहीं, हैं सजीव हनुमान ॥
तुम निरखे निज नैनते, किमि है कित बलवान ॥ ४१ ॥
सुनि बोले लंकेश द्रुत, कहा बात यह तात ॥
नहिं प्रभुकी हनुमंतकी, तुम बूझी कुशलात ॥ ४२ ॥
जाम्बवान भाषो तबै, जौ न जियैं हनुमान ॥
तो जीवत जेते बचे, ते सब मृतक समान ॥ ४३ ॥

अरु जीवैं हनुमंत तो, बल प्रभाव बलवान ॥
मृतक भये कपि ऋच्छते, ज्यावैं सबहि सुजान ॥ ४४ ॥
सुनि सुबैन गहि वेगही, जाम्बवंतके पाय ॥
कही पवनसुत कुशल हौं, प्रभु तव कृपा प्रभाय ॥ ४५ ॥
कपिहि लाय हिय ऋच्छपति, बोले वचन उताल ॥
तिहूँलोक तुम सम बली, और न अंजनिलाल ॥ ४६ ॥
याते वीर सुवीरता, कीजै अतिहि उताल ॥
जाय औषधी लाय कै, विरुज करौ कपि भाल ॥ ४७ ॥
हिम गिरि अरु कैलासके, मध्य ऋषभ गिरि नाम ॥
तापरहै वर औषधी, सो लावो बलधाम ॥ ४८ ॥
सुनि सुबैन हनुमंत द्रुत, करि निज रूप विशाल ॥
उछलि चले नभ पंथ ह्वै, धाये अतिहि उताल ॥४९॥
उपल रजत अरु हेममय, लखे शैल अभिराम ॥
अवलोके हनुमंत पुनि, अपर अमित सुर ठाम ॥ ५० ॥
इहि विधि जाय उताल अति, पहुँचे पवनकुमार ॥
ऋषभ कूट हेरो चहूँ, शत योजन विस्तार ॥ ५१ ॥
कपिहि निरखि सो औषधी, गुप्त भई चहुँ ओर ॥
हनूमान तब क्रोध युत, गिरिहि कही करि शोर ॥ ५२ ॥
रे खल रघुवरकाजहित, ओषधि लई दुराय ॥
लखु भूधर मम बाहुबल, धरौं तोहिं युत जाय ॥ ५३ ॥
यौं कहि तिहि गहि धारि कर, उछलि व्योम पथ जाय ॥
आय धरो कपि सैन मधि, युत औषधि गिरि लाय ॥५४॥
लावतहीं गिरि पवन लगि, भे सब विरुज शरीर ॥
अपर जिये कपि भालु ते, भये मृतक जे वीर ॥ ५५ ॥
होत मृतक निश्चर जिते, ते सब सागर माहिं ॥
दशमुख आज्ञाते परत, याते जिये सुनाहिं ॥ ५६ ॥

प्र० वा० यु० कां० ॥ स० ७३ ॥ श्लोक ।

यदाप्रभृति लंकायां युद्ध्यंते हररक्षसाः ॥
तदाप्रभृति मानार्थमाज्ञया रावणस्य च ॥ १ ॥

ये हन्यंते रणे तत्र राक्षसाः कपिकुंजरैः ॥
हता हतास्तु क्षिप्यन्त सर्वएव तु सागरे ॥ २ ॥
दोहा—रैनि समै बहु भालु कपि, मृतक भये कपि जोय ॥
ह्वै सजीव ते दिवस मधि, उठे उठे जनु सोय ॥ ५७ ॥
भये विरुज दुहुँ बंधु युत, वानर भालु अपार ॥
अति आनँद उमँगाय सब, जैरघुवीर पुकार ॥ ५८ ॥
हनूमान पुनि शैल सो, रह्यो जहाँ तहँ धार ॥
नभमारग ह्वै वेगि पुनि, आये सैन मझार ॥ ५९ ॥
राम लषण सुग्रीव अरु, अपर अमित बलवान ॥
बार बार हनुमानको, बल यश करत बखान ॥ ६० ॥

इति श्रीरामरसा० र० वि० यु० इंद्रजितअंतरिक्षयुद्ध
वर्णनो नाम त्रयोदशोविभागः ॥ १३ ॥

---

पद्धरी छंद ।

यों विरुज भई कपि भालु सैन । तब कहे सपदि सुग्रीव बैन ॥
बीतो समस्त दिन भो न युद्ध । हनुमत करौ बल वेगि युद्ध॥१॥
तब हनूमान बहु भट बुलाय । कर लिये लूक पावक दिपाय ॥
धाये अपार सँग भालु कीश । कहि जैति राम जै जै हरीश ॥ २॥
दिन अस्त होत लखि समय सांझ । कूदे सवीर चहुँ लंक मांझ ॥
दीनो लगाय पावक उताल । निश्चरन धाम वर लघु विशाल॥३॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कांडे । सर्ग ७४ ॥ श्लोक ।

अदहत्पावकस्तत्र जज्वाल च पुनः पुनः ॥
सारवंति महार्हाणि गंभीरगुणवंति च ॥ १ ॥

पद्धरी छंद ।

तिहि समै कीन बहु पौन जोर । बाढ़ी उदंड ज्वाला सुघोर ॥
धन धाम वाजि गज रथ अपार । शिशु तरुण वृद्ध वरि होत छार४॥
चहुँ हाय हाय सब करि पुकार । भे विकल कोउ काहु न सम्हार ॥
बहु यातुधान करि कोप चंड । धाये हथ्यार लै लै उदंड ॥ ५ ॥
कपि भालु वीर गहि गहि सुलूक । भिरि जाय दीन निश्चरन फूक ॥
ते यातुधान पुनि पुनि प्रहार । भट ऋच्छ कीश फिर तिनहिं मार६॥

पावक प्रचंड चहुँ लाय दीन। पुनि भालु कीश विध्वंस कीन॥
मर्दत सु भौन अरु लरत जात। बहु धाय धाय दल दरत जात॥ ७॥
पैठे सु जाय दशकंठ धाम। कीनो विहाल कहि जैति राम॥
चहुँ जरत लंक अरु होत युद्ध। कर बहु विनाश कपि भालु उद्ध ८॥

घनाक्षरी-कवित्त।

थंभडारि देहरी उखारि औ कपाट फारि सदन उजारि जारि डारैं रंचहू न भै॥ केसरी किशोर वीर बंकादै उतंका हंका लंकामें फलंका घालि कूदत चहूँ अभै॥ रसिकविहारी जै कपीश ईश गाजैं कीश सुनि दशशीश कर वीस रीस ह्वै चभै॥ चंगुल चपेटि औ लंगूरमें लपेटि मर्दि मर्दत खखेटि रजनीचर भगे सभै॥ ९॥ ठेलैं ठेलि पेलैं पेलि रेलैं रेलि झेलैं फेरि झेलिकै ढकेलैं यौंहीं भौन डारैं मीथि मीथि॥ भारी तेजधारी जे प्रवृद्ध युद्धकारी तेउ वीरन निहारी मानहारी भगैं वीथि बीथि॥ रसिकविहारी विजैकारी कपि रीछ झारी डारी औ विडारी शत्रु सैन मारी झीथि झीथि॥ गुंठित हथ्यार कीने लुंठित करेहैं कर कुंठित कियेहैं दशकंठ कंठ चीथि चीथि॥ १०॥

पद्धरीछंद।

उत करहिं यौं सुविध्वंसलंक। इत राम साजि धनु शर उतंक॥
छोडे अपार सायक उदंड। तिन किये आय गृह खंड खंड॥ ११॥
इमि भालु कीश करि लंक नाश। लै लूकरुद्ध पुर आस पास॥
देखैं परात कोऊ जु ताहि। देवैं बहाय गहि अनल माहि॥ १२॥
दशमौलि देखि गति ह्वै विहाल। दीनी रजाय अतिही उताल॥
वर कुंभकर्ण सुत दोउ वीर। उद्धत निकुंभ अरु कुंभ धीर॥ १३॥
वर शोणिताक्ष यूपाक्ष चंड। कंपन प्रजंघ षट भट उदंड॥
पुनि अपर रैनिचर शस्त्रधार। तिन संग कुपित धाये अपार॥ १४॥
भट भालु कीश अरु यातुधान। भिरि परे दोउ दल क्रुद्ध ठान॥
द्रुम शैल शक्ति शर खड्ग चंड। लगि गिरे वीर ह्वै खंड खंड॥ १५॥
गहि गदा धाय कंपन उताल। अंगदहि घाल भो कपि विहाल॥
पुनि सँभारि कीश किय गिरि प्रहार। सो गिरो मृतक ह्वै रण मझार १६
लखि शोणिताक्ष धायो उताल। किय कपिहि मारि बाणन विहाल॥

तब बालि पुत्र धनु तून छीन। करि खंड खंड महि डारि दीन॥ १७॥
पुनि शोणिताक्ष असि चर्मधार। धायो सुछीन लिय कपिकुमार॥
सो हनी ताहि करबाल तासु। आये प्रजंघ यूपाक्ष आसु॥ १८॥
त्रै यातुधान अंगद अकेल। लखि द्विविद मैंद धाये सकेल॥
इत भये प्लवंगम तीन चंड। तिहुँ उतहु वीर निश्चर उदंड॥ १९॥
तिहुँ कीश कीन बहु तरु प्रहार। ते सब प्रजंघ असिते विदार॥
पुनि अपर शैल द्रुम घाल चंड। यूपाक्ष डार तिन शरनखंड॥ २०॥
निश्चर प्रजंघ गहि खड्गतान। अंगदहि घात किय क्रुद्ध ठान॥
तब कीश रोष भरि मुष्ट मारि। तिहि शीश भांजि महि दीन डारि२१॥
लखिकै प्रजंघ वध रोष आन। यूपाक्ष वीरवर लै कृपान॥
सो द्विविदहीय घाली उताल। तब गहो कीश निश्चरहि हाल॥ २२॥
लखि शोणिताक्ष किय कपिहि घात। गहि गदा कीश तिहि शिर निपात॥
ताछिन मयंद द्रुत धाय आय। यूपाक्ष वीरको दिय गिराय॥ २३॥
भुजन मर्दि लिय प्राण तासु। त्यों शोणिताक्षको द्विविद आसु॥
गहि दशन कोटि तनु नखन फारि। डारो सु भूमि लै प्राण मारि२४॥
इमि दुहूँ कीश दुहुँ भट सँहारि। धाये सुकुंभप्रति कुधर धारि॥
सो यातुधान हन अमित तीर। कीने विहाल कपि द्विविद वीर२५॥
लखि व्यथित भ्रात धाये मयंद। गरु शिला घाल कुम्भहि सुछंद॥
निश्चर सुपंच शर खंड कीन। पुनि कपिहि सायकन भेदि दीन२६॥
पीडित विलोकि मातुलन वीर। द्रुत वालिपुत्र धाये सुधीर॥
तिन कुम्भ कीन बहुशर प्रहार। कपि अमित ताहि द्रुम शैल मार२७॥
पुनि कुम्भवीर शर सप्त मारि। करि बिकल कपिहि दिय भूमि डारि॥
अंगद विहाल गति कीश धाय। भाषी उताल रघुवरहि जाय॥ २८॥
सुनि जाम्बवंत आदिकन राम। दीनी रजाय करि दृग ललाम॥
धाये सु ऋच्छपति अरु सुखेन। कपि वेगदर्शी तिहुँ सुबल ऐन२९॥
अंगदहु चेतलहि चहुँ सुवीर। तरु उपल धारि धाये सुधीर॥
तिन सबहि कुंभ शर विपुल शाल। वेधे समस्त वपु किय विहाल३०॥

धाये सुकंठ सो गति निहार । बहु कुधर कीन कुम्भहि प्रहार॥
ते सकल शैल भट यातुधान।बाणन विदारि किय रज प्रमान॥३१॥
पुनि शरन बेधि डारो सुअंग । तब किय कपीश तिहि चापभंग॥
धनु भंजि कीशपति कर बखान । तुव तेज रूप बल पितु समान ३२
सुनि कुम्भ कुपित भरि लीन बाथ। तब कीन भूरि बल कीशनाथ॥
दुहुँ वीर धीर वर समर उद्ध । अवरुद्ध क्रुद्ध कर मल्लयुद्ध॥ ३३॥
कुम्भहि सुकंठ बहु कोपधार । फेंको उठाय सागर मँझार॥
सो बहुरि आय तुर बांधि पुष्ट। घालो कपीश उर वज्र मुष्ट॥ ३४॥
पीड़ित हरीश पुनि ह्वै प्रचंड । तिहि वज्र मुष्ट मारो उदंड॥
सो लगत वच्छ तच्छनहिं फाट । गिरि गयो भूमि निश्चर उलाट ३५॥
भो मृतक मुष्ट लगि कुम्भ वीर। लखि यातुधान तजि दीन धीर॥
निरखो निकुंभ निज भ्रातहाल। धायो सकोप अतिही उताल॥३६॥
सन्मुख सु आय हनुमंत वीर। कीनो निरुद्ध तिहि समर धीर॥
सो कपिहि परिघ मारो प्रचंड। लगि हृदय शस्त्र भो खंड खंड॥३७॥
तब कीश कोपि तिहि उर मझार । द्रुत पुष्ट मुष्ट कीनो प्रहार॥
विहवल निकुम्भ ह्वै सजगहाल। गहि लयो धाय कपिको उताल ३८
पुनि पवनपुत्र हनि मुष्ट ताहि। भो विलग वीर इक छिनक माहि॥
फिरि तासु परिघ लै कपि उदंड। तिहि दलो धाय करि कोपचंड॥३९॥
हनुमंत फेरि तिहि महि पछार। द्रुत लीन वीर गहि शिर उपार॥
तब भो निकुम्भ तनु प्राणहीन। लखि भालु कीश जैशोर कीन॥४०॥

दोहा—सकल निशाचर जायकै, भाजि लंकपति पास॥
कही नाथ पट भट सदल, रण मधि भये विनास॥ ४१॥
कुम्भ निकुंभादिक मरन, सुनि दशमुख विलपाय॥
पुनि भाषी मकराक्षसों, हिय बहु रोष बढाय॥ ४२॥
जाहु पुत्र द्रुत सैन लै, हतौ सदल रघुवीर॥
अस्त्र शस्त्र वर युद्धमें, हौ तुम निपुण सुधीर॥ ४३॥
तुव पितुको रघुवर हतो, दंडकवन रण माहिं॥
सो खर बदलो लेहु अब, समय विलंब सुनाहिं॥ ४४॥

चौ०-सुनि खर सुत मकराक्ष सुभट्टा ❀ लिये संग वीरनके ठट्टा ॥
शस्त्र कराल कवच तनुसज्जे ❀ यातुधान दुर्मद बहु गज्जे ॥ ४५ ॥
धीर वीर मकराक्ष प्रधाना ❀ स्यंदन बैठि सुकीन पयाना ॥
चलत भूरि अपशकुन जनाये ❀ तिनहिं निदरि निश्चर सब धाये ४६॥
भयो शोर चहुँ ओर अपारा ❀ सुनत राम धनु बान सँभारा ॥
कीश भालु तरु गिरि गहि दौरे ❀ निश्चर भिरे पानवशबौरे ॥ ४७ ॥
शक्ति परिघ असि शरन प्रहारी ❀ यातुधान कपि सैन विदारी ॥
तरु गिरि उपल कीश बहु वरषैं ❀ धीर वीर सो नेक न करषैं ॥४८ ॥
भट मकराक्ष बाहु बल पाई ❀ सबल प्रबल निश्चर समुदाई ॥
खरसुत अमित चंड शर मारे ❀ यातुधान बहु शस्त्र प्रहारे ॥ ४९ ॥
कराहिं भालुकपि रण वरियारा ❀ भये सकल तनु व्यथित अपारा ॥
सो लखि राम भूरि शर चंडा ❀ मारि कीन निश्चर दल खंडा ॥५०॥
खरसुत निज दल विचल निहारा ❀ धाय आय रघुवरहि प्रचारा ॥
कहा ठाढ हो मम पितुघाती ❀ आज निपाति सिराऊँ छाती ॥५१॥
अस्त्र शस्त्र तनु बल जिहि नाहीं ❀ अति अभ्यास होय तुम काहीं ॥
द्वंद्व युद्ध मो संग सु करहू ❀ बहुरि वेगि मम शर लगि मरहू५२॥
सुनि रघुवीर सु उत्तर दीना ❀ हौं तुहि मूढ़ भली विधि चीना ॥
जनि मिथ्या वकबाद बढ़ावै ❀ निज पुरुषारथ करि दरशावै॥५३॥
सुनि मकराक्ष सकोप उताला ❀ छाय दीन रामहि शरजाला ॥
प्रभु ते सकल खंडि महि डारे ❀ अरु प्रचंड निज शर बहु मारे५४॥
ते निश्चर भंजे सब तीरा ❀ इहि विधि हने दुहूँ दुहुँ वीरा ॥
नृपसुत शर निश्चर बहु छाटे ❀ तासु बाण प्रभु अगणित काटे५५ ॥
तब रघुवीर कोप उर धारा ❀ तासु चाप खंडित करि डारा ॥
बहुरि अष्ट शर ते रघुनंदन ❀ किय विनाश सारथि हरिस्यंदन ५६
विरथ होय मकराक्ष सुयोधा ❀ महि धायो गहि शूल सक्रोधा ॥
सबल भ्रमाय सुशस्त्र उताला ❀ ताकि तौलि रघुवर पर घाला५७
सो प्रचंड शूलहि रघुवीरा ❀ भंजो वेगि चार हनि तीरा ॥

लखि मकराक्ष शूल निज खंडा ❋ धायो मुष्टिक बाँधि उदंडा५८॥
तब रघुनाथ अनल शर मारा ❋ गिरो भूमि करि घोर चिकारा॥
भो मकराक्ष मृतक वर वीरा ❋ भागे निश्चर निरखि अधीरा५९॥
सो०—भो मकराक्ष निपात, निरखि भालु कपि मुदित ह्वै॥
बहु कूदत किलकात, कहैं रामजै रामजै॥ ६०॥
इति श्री रा० र० वि० यु० लंकदहन मकराक्षादि
युद्धवधवर्णनो नाम चतुर्दशोविभागः॥ १४॥

---

चामरछंद।

उतालयातुधान हाल रावणै सबै कहो॥ नृपाल ह्वै विहाल त्यौं कराल कोप ते दहो॥ तबै विचार ठानिकै सुइंद्रजीत सों कही॥ सुवीर तो समान वीर आन लंकमें नहीं॥ १॥ कहा विचारि पुत्र तू न आजलों विजै करी॥ मनुष्य भालु कीश कूर आय लंक क्षै करी॥भई भई सु पै अबै विलंब है न कामको॥ उताल हाल जायकै सँहार डार रामको॥ २॥ तबै सुमेघनाद यौं धराय धीर तातको॥ कही न सोच कीजिये कछूक शत्रु घातको॥ सबंधु राम भालु कीश आज हौं नशाय हौं॥ परायहू कहूं बचै न व्योमते खसायहौं॥ ३॥ बखानि इंद्रजीत यौं सुयज्ञ कीन जायकै॥ भयो प्रसन्न सो समस्त सिद्ध साज पायकै॥ उताल अंतरिक्ष ह्वै अलक्ष गो अकेलही॥ कियो विचार आज हौं विजै करौं सकेलही॥ ४॥ विशाल चाप तान कै सँधान बान घालही॥ उताल कीश भालु शीश भाल गात शालही॥ लखै न कोउ ताहि सो समस्तसैन हेरही॥ प्रहारि तीर मारि वीर भूमि मध्य गेरही॥ ५॥ उखार शैल वृक्ष धार कीश ऋच्छ धावहीं॥ लखाय ना कहूं सु व्योम ओरको चलावहीं॥ सुरारि पुत्र गुप्त ह्वै अपार बाण मारिकै। दई गिराय भालु कीश सैनको विदारिकै॥ ६॥ परे विहाल ह्वै अधीर वीर तीर पीर ते॥ करैं सुहाय हाय शोर न्हाय नैन नीर ते॥ सम्हार सार काहुकी न काहु को कछू रही॥ अपार धार रक्तकी समस्त अंगते बही॥ ७॥ सबंधु राम अंग मध्य रोम रोम छेदिगे॥ सुवीर इंद्रजीतके प्रहार तीर

भेदिंगे ॥ भये विहाल दोउ राजपुत्र बाणपात ते ॥ चली अपार रक्त-धार बेसुमार गात ते ॥ ८ ॥ तबै अनंत कोपिकै कही उताल भ्रात-सों ॥ कहा कलेश होय गो बहोरि प्राण घातसों ॥ सुहौं अबै प्रचंड ब्रह्म अस्त्र बाण मारहूं ॥ जिते त्रिलोक यातुधान ते सबै सँहारहूं॥९॥ सकोप देखि बंधुको कृपालु राम यों कही ॥ अराति घात हेत तात बात योगहै यही ॥ परंतु है नरेश पुत्र ना अनीति धारिये ॥ सुएक दुष्टलागि क्यों अनेक प्राण मारिये ॥ १० ॥

दोहा–भगो दुरो लीने शरन, नहिं आयो रण मध्य ॥
करजोरे उनमत्त हो, ये षट सदा अवध्य ॥ ११ ॥
याते उर धीरज धरो, हौं मारौं अब याहि ॥
मायामय बरिवंड खल, जोपै भागि न जाहि ॥ १२ ॥
यौं तिहि दृढ वध ठानिकै, नभ दिशि लखे निशंक ॥
रघुवर हियकी गति समुझि, गयो इंद्रजित लंक ॥१३॥
पुनि घननाद विचार किय, माया रचौं अपार ॥
ठानि हिये बहुरो तुरत, लै सँग सुभट जुझार ॥ १४ ॥
आयो पश्चिम द्वारसो, मायामय सिय रूप ॥
रचि बैठारे संग निज, रथ बिच परम अनूप ॥ १५ ॥
यातुधान दल देखिकै, वानर भालु अपार ॥
क्रोधभये चहुँ ओरते, धाये तरु गिरिधार ॥ १६ ॥
आवतही कपि वृंदको, दशमुख सुत दरशाय ॥
माया सियको बध कियो, गहि कच खड्ग चलाय ॥ १७ ॥
सो लखि हनुमत आदि सब, हाय हाय किय शोर ॥
आरत विकल पुकारहीं, करो कर्म खल घोर ॥ १८ ॥
रुदन करत घननाद पर, धाये पवनकुमार ॥
कहत क्रोधमय दुर्वचन, मूढ तोहिं धिक्कार ॥ १९ ॥
है अवध्य अबला सदा, पुनि अति दुखी अधीर ॥
बहुरि विवश तिहि वध कियो, दुष्ट कहावत वीर ॥ २० ॥

यौं भाषत धाये सदल, किय तरु कुधर प्रहार ॥
तिनहि छिंदि मारत कपिन, इंद्रजीत बरियार ॥ २१ ॥
समर करत हनुमान प्रति, कहे इंद्रजित बैन ॥
रे कपि मुहि तिय घातको, रंचहु पातक है न ॥ २२ ॥
नर नारी कोऊ कहूँ, पीड़ाकारक जोय ॥
ताहि वधेते कैसहू, काहू पाप न होय ॥ २३ ॥
सुनि हनुमत कपि भालु युत, धाये करि बहु क्रुद्ध ॥
तरु गिरि पाहन भूरि हनि, करनलगे रणयुद्ध ॥ २४ ॥
क्रोधित काल करालसम, भये वीर विकराल ॥
पौनपुत्र गहि गरु शिला, घाली अतिहि उताल ॥ २५ ॥
ताछिन रथ लै सारथी, भागो निरखि शिलाहि ॥
गिरि आय सो ठौर तिहि, धसी धरणिके माहि ॥ २६ ॥
बहुरि हनूमत सदल अरु, युत अनीक घननाद ॥
करत युद्ध रव उद्ध भो, मनौ प्रबल घननाद ॥ २७ ॥
हनूमान सोचत हिये, सियहि हती खलवाम ॥
प्रभु रजाय पाये बिना, है अब युद्ध निकाम ॥ २८ ॥
यह विचार दृढ़ ठानिकै, युक्तिहि युक्ति सुधीर ॥
भिरत फिरत निकटत दुरत, गये समर तजि वीर ॥ २९ ॥
इंद्रजीत अवकाश लहि, गयो सदल द्रुत लंक ॥
हनुमत बल दर्पित सकल, निश्चर निपट सशंक ॥ ३० ॥
लंक सिद्धि देवी सु जिहि, है निकुंभिला नाम ॥
करन लगो मख इंद्रजित, करि प्रबंध तिहि ठाम ॥ ३१ ॥
पवनसुवन इत विकल अति, विलपत जाय उताल ॥
कहो सिया वध सुनतही, भूमि गिरे रघुलाल ॥ ३२ ॥
करत विलाप अधीर अति, तन मनकी न सँभार ॥
बहो फेन मुख स्वेद त[illegible], चली दृगन जल धार ॥ ३३ ॥

[illegible]री कवित्त ।

हाय हाय करि रघुराय विलपाय धाये, बोले हाय प्यारी कहाँ वेगहीं बतायदे ॥ जनकदुलारी किनमारी कितडारी हाय आय

हनुमंत फेरि सकल सुनायदे। हौंहू प्राण त्यागौं तहां चलिकै छबीली जहां संगलै उताल तिहिं ठौर पहुँचायदे । होनी ही भई सो आज लाज को न काज हाय कैसहू प्रियाको मोहिं वदन दिखायदे ॥ ३४॥

दोहा–इमि अधीर रघुवीर को, लषण गहे उठि धाय ॥
बैठारे कहि मृदु वचन, समै सरिस समुझाय ॥ ३५ ॥
धीर धरत नहिं रंचहू, बढी विरहकी पीर ॥
बहु विलपत अकुलायकै, कहत वचन रघुवीर ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

रसिकविहारी किमि लगनहुती सो कूर जा छिन छबीलीको उछाहि ब्याहि लायोंमें ॥ कौन कुवरीही वह जावरी प्रियाको संग लैकै त्यागि देशको विदेशहि सिधायोंमें ॥ कैसो दिन अशुभ कराल सो कलेशकारी जादिन समस्त दल साजि इत आयोंमें ॥ जब ते बिछोही तबही ते हाय लाडिलीको सकबेर फेर मुख देखन न पायोंमें ॥ ३७ ॥ प्यारी सुरधामको सिधारी सो सुखारी भई हौंतौ तिहि विरह दुखारी करौं हाय हाय । सुरति बिसारी ना निहारी नेक मेरी ओर रसिकविहारी गई न्यारी चित चाय चाय । होवै हितकारी जो सहाय सो हमारी करै लागी अंग अंग रूप वारी विन लाय लाय॥ ऐसे समै कोऊ आय हनहि कृपान तान त्यागौं प्रान मुदित प्रियाके गुण गाय गाय ॥ ३८ ॥

दोहा–यौं बहु विलपतही विकल, पुनि बोले रघुराय ॥
हनुमत लषण सुकंठ नल, आदिक सबहि सुनाय ॥ ३९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सेवक सुबंधु सखा तन मन वित्त चित्त रसिकविहारी सदानंदमें रहीजियो ॥ हौं तौं अब करत पयान प्राणप्यारी ढिग सकल सुजान सीख येती सुनि लीजियो ॥ लायकै सुदारु भार भूरि बिरचाय शर एकै ठौर धारकै दुहूँको दाह दीजियो ॥ मेरो दृढ नेह औ पतिव्रत प्रियाको सत्य ताको निरवाह सबै अंतलैंग कीजियो ॥ ४० ॥

दोहा–सुनि लछमन रघुचंदको, गहि निज अंक मझार ।
कही तात धीरज धरिय, कीजे समय विचार ॥ ४१ ॥

यौं कहि पुनि रघुवीर सों, बोले कछु [illegible]

राज तजो प्रभु धर्म हित, ताको [illegible] आय ॥ ४२ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

धरमधुरीण नाथ पायो सो कलेश ऐसो यातुधान रावण सुमोद मध[illegible] तूठे हैं॥ परम सुकर्मी प्रभु [illegible] वन डोलें दुखी रावण अधर्मी ताहि राज [illegible] राज पूठे हैं ॥ [illegible]विहारी हौं विचारी निरधारी सत्य, सकल शुभाशुभ त्रिलोकही ते ऊठे हैं॥ धनको प्रभाव एक सत्य है सदाहीं और धर्म कर्म ज्ञान पाप पुण्य सब झूठे हैं ॥ ४३ ॥

॥ प्र० ॥ वा०॥ यु०॥ का०॥ स० ८३ ॥ श्लोक० ॥

समरे युद्ध्यमानानामस्माकं प्रेक्षतां च सः ॥ जघान रुदतीं सीतामिंद्रजिद्रावणात्मजः ॥ १ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवः शोकमूर्च्छितः ॥ निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ॥२॥ तं लक्ष्मणोऽथ बाहुभ्यां परिष्वज्य सुदुःखितः ॥ उवाच राममस्वस्थं वाक्यं हेत्वर्थ संयुतम् ३ शुभे वर्त्मनि तिष्ठंतं त्वामार्य विजितेंद्रियम् ॥ अनर्थेभ्यो न शक्नोति त्रातुं धर्मो निरर्थकः॥४॥भूतानां स्थावराणां च जंगमानां च दर्शनम्॥ यथास्ति न तथा धर्मस्तेन नास्तीति मे मतिः ॥ ५ ॥ यद्यधर्मो भवेद्भूतो रावणो नरकं व्रजेत्॥भवांश्च धर्मसंयुक्तोनैव व्यसनमाप्नुयात्६ तस्य च व्यसनाभावाद्व्यसनं चागतं त्वयि ॥ धर्मो भवत्यधर्मश्च परस्परविरोधिनौ ॥ ७ ॥ यस्मादर्था विवर्धंते येष्वधर्मः प्रतिष्ठितः ॥ क्लिश्यन्ते धर्मशीलाश्च तस्मादेतौ निरर्थकौ ॥ ८ ॥ मम चेदं मतं तात धर्मोयमिति राघव॥ धर्ममूलं त्वया छिन्नं राज्य मुत्सृजता तदा॥ ॥ ९ ॥ हर्षः कामश्च दर्पश्च धर्मः क्रोधः शमो दमः ॥ अर्थादेतानि सर्वाणि प्रवर्तंते नराधिप ॥ १० ॥ इत्यादि ॥

दोहा—यौंहीं लखन अनेक विधि, कहे वचन समुझाय ॥

सुनि गुनि समय स्वरूप कछु, धीर धरी रघुराय ॥ ४४ ॥

चौ०—ताही छिन सब सैन सँभारी ❀ आय विभीषण दशानिहारी॥

विलपत सकल भालु कपिवीरा ❀ लेत उसाँस विकल रघुबीरा४५॥

बूझी लखि लंकेश उताला ❀ बिलखि कहो लछमन सब हाला॥
सुनि भाषी तबसों झहराई ❀ नृप सुत बैठौ क्यों न चुपाई ४६॥
पुनि हनुमतहि लंकपति बोले ❀ है बुधिमंत विचारि न बोले॥
सो मायावी दुष्ट मलीना ❀ मायामय सीतावध कीना ४७॥
यों कहि बहुरि निशाचरराई ❀ रघुबीरहिं बहु धीर धराई॥
राम विभीषण वचन प्रमाना ❀ मायामय सीता बध जाना॥४८॥
पुनि बोले लंकेश उताला ❀ करै इंद्रजित यज्ञ कराला॥
याछिन लछमन सदल सिधारैं ❀ मख विध्वंस होय तेहि मारैं४९॥
सुनि रघुनाथ रजायसु दीनी ❀ सुभट सैन लछमन बहु लीनी॥
कवच अंग बहु शस्त्र सुधारे ❀ जैति जैति जैराम उचारे॥ ५०॥
हनुमानादि सुबीर प्रधाना ❀ जाम्बवन्त आदिक भट नाना॥
धनु शर गदा विभीषण साजे ❀ यातुधान चहुँ विकट सुराजे ५१॥
रामहिं लषण प्रदक्षिण दीना ❀ पद शिर धरि प्रणाम पुनि कीना॥
बहुरि कही प्रण ठानि अनंता ❀ ऐहौं हनि निश्चर बलवंता॥५२॥
यौं कहि लछमन सदल सिधाये ❀ द्रुत निकुंभिला धामहि आये॥
तब बोले लंकेश उताला ❀ लखौ वीर यह वृक्ष विशाला ५३॥
इहि वट तर सु इंद्राजित आई ❀ होत अलक्ष व्यौममाधि जाई॥
याते करि प्रबंध तरु घेरे ❀ निश्चर खडे विकट चहुँ फेरे॥५४॥
सो प्रथमहि बल करि तरु लीजे ❀ बहुरि निशंक समर दृढ़ कीजे॥
सो सुनि लक्ष्मण दई रजाई ❀ धाये कीश भालु समुदाई॥ ५५॥
तरु ढिग रहे निशाचर जेते ❀ कपिन हने बल करि सब तेते॥
मारत मरत लरत बरियाई ❀ गहो सु वट रिपुदलहि नशाई ५६
तिहि तरु तर ह्वै सजग सुधीरा ❀ खड़े लषण युत कोटिन बीरा॥
भिरे अपर निश्चर अरु कीशा ❀ होत समर दुहुँ दिशि करिखीसा५७
भयो चहूँ कोलाहल भारी ❀ उठो न मखते तबहुँ सुरारी॥
लखि कपि भालु धसे बरियाई ❀ यज्ञसाज सब दीन नशाई॥५८॥

दंतन नखन इंद्रजित गाता ❀ फारि केश गहि मारहिं लाता ॥
भो विध्वंस यज्ञ करि क्रोधा ❀ उठो शूल लै निश्चर योधा ॥५९॥
सो बहु वीरन मारि गिराये ❀ अपर भाजि लछमन ढिग आये ॥
यज्ञ भंग सुनि सब हरषाने ❀ भयो अबै खल बध दृढ़ जाने ६०॥
मेघनाद करि क्रोध कराला ❀ धायो स्यंदन साजि उताला ॥
देखो पवनपुत्रकी ओरा ❀ हनत निश्चरन कपि वरजोरा ६१॥

तोमरछंद ।

लखि मेघनाद सुहाल । कपि निकट आय उताल ॥
किय अमित शस्त्र प्रहार । गहि कीशते दलि डार ॥ ६२ ॥
लखि पौनसुतहि लरात । धायो दशानन भ्रात ॥
ढिग जाय करि दृग बंक । कह इंद्रजितहि निशंक ॥ ६३ ॥
रे दुष्ट तू अति उद्ध । करु आज मोसम युद्ध ॥
सुनि मेघनाद रिसाय । बोलो सु भौंह चढ़ाय ॥ ६४ ॥
भो तात बंधु कनिष्ठ । हो मौन कुमति अनिष्ट ॥
महराज बंधु कहाय । भो भिक्षु सेवक जाय ॥ ६५ ॥

दोहा–जो निज सुजन विहाय कै, करै पराई आश ॥
ताको इत उत दोउ दिशि, हो सब काज विनाश ॥ ६६ ॥
इंद्रजीतके वचन सुनि, कहे विभीषण वैन ॥
तू खल पितु युत काल वश, अरु सब निश्चर सैन ॥६७॥
क्रूर कुशील कुकर्म रत, कटुवादी मतिहीन ॥
लुब्ध अधर्मी कुटुम जो, ताको तजै प्रवीन ॥ ६८ ॥
यौं कहि कह लंकेश पुनि, रे खल कुमति कराल ॥
बटतर जान न पायहै, आज होत तव काल ॥ ६९ ॥
सजग दुहूँ इमि परस्पर, कहत हुते कटु बैन ॥
ताछिन हनुमत कंध चढ़ि, धाय लषण युत सैन ॥ ७० ॥
कही आय घननाद सों, रे कायर खल चोर ॥
दुरन न पैहै आज तू, देख पराक्रम मोर ॥ ७१ ॥
सुनि भाषी घननाद तब, भूलि गई वह पीर ॥

नागफाँस कपिसैन युत, महि डारे दुहुँ वीर ॥ ७२ ॥
कही लषण तब हे कुटिल, करी दुराय सु घात ॥
आज प्रगट दरशाव बल, जितो होय तुव गात ॥ ७३ ॥

तोमर छंद ।

सुनि इंद्रजित रिस धारि । निज अस्त्र शस्त्र सँभारि ॥
बोलो बहोरि सुछंद । हो सजग दशरथ नंद ॥ ७४ ॥
यौं भाषि अतिहि उताल । सायक तजे विकराल ॥
सो लागि लक्ष्मण गात । बहु रुधिर धार बहात ॥ ७५ ॥
तब लषण बाणन मारि । तिहि कवच दीन विदारि ॥
सोऊ महारिस ठान । भंजन कियो तनु त्रान ॥ ७६ ॥
पुनि राम अनुज उदंड । द्रुत पंच शर वर चंड ॥
घाले सबल धनु तान । तिहि उर विधे बिच आन ॥ ७७ ॥
घननाद युद्ध प्रवीन । लै विषम सायक तीन ॥
मारे सपदि करि लच्छ । वेधे सुलच्छनवच्छ ॥ ७८ ॥
यौं विविध उद्धत बान । दुहुँ हनत दुहुँ बलवान ॥
पुनि अपर शस्त्र अपार । दुहुँ करत दोऊ प्रहार ॥ ७९ ॥
इक एक करत अधीर । पुनि सँभरि युद्धत वीर ॥
दुहुँ शस्त्र भंजत दोउ । इमि भिरत फिरत न कोउ ॥ ८० ॥
दुहुँ शस्त्र ताकि ताकि घाल । दुहुँ अंग विधत कराल ॥
इमि लषण अरु घननाद । कर समर युत अह्लाद ॥ ८१ ॥
बहु यातुधान कराल । कपि ऋच्छ वीर विशाल ॥
वर शस्त्र तरु गिरि धार । कर धाय धाय प्रहार ॥ ८२ ॥
कपि भालु निश्चर झार । भो दोउ दलहि सँहार ॥
महि बही शोणित धार । भे रुंड मुंड पहार ॥ ८३ ॥
कपि भालु निश्चर सैन । इमि करत युद्ध हटैन ॥
त्यों लषण अरु घनगाद । किय समर हिय न विषाद ॥ ८४ ॥
तब राम बंधु उदंड । उर गुनो भट वरिबंड ॥
यौं करि विचार उताल । पुनि हने बाण कराल ॥ ८५ ॥

सो लगत भो मुख दीन। लखि लंकनाथ प्रवीन॥
बोले लषण प्रति ठान। अब मरिहि खल दृढ़ जान॥ ८६॥
तब इंद्रजीत रिसान। लछमनहिं सप्त सुबान॥
मारे बहुरि दशतीर। हनुमतहि वेध सुवीर॥ ८७॥
तब कोपि लक्ष्मण चंड। छोडे सुअस्त्र उदंड॥
तिमि इंद्रजीत अपार। किये विविध अस्त्र प्रहार॥ ८८॥
इमि अस्त्र शस्त्र अनेक। घाले जु एकहि एक॥
भे दोउ विह्वल वीर। पै तजत नहिं रणधीर॥ ८९॥
लंकेश लषणहि हेरि। धाये धनुष सजि फेरि॥
द्रुत इन्द्रजीतहि आय। शर हने कोप बढाय॥ ९०॥
पुनि अपर निश्चर भूर। दिय तिनहिं बाणन पूर॥
सँग यातुधान जु चार। ते करहिं समर प्रचार॥ ९१॥
लंकेश समर मझार। कह भालु कपिन प्रचार॥
यहि खलहि मारहु बंक। फिरि और वीर न लंक॥ ९२॥
सो सुनि भये भट क्रुद्ध। किय प्रबल औरहु युद्ध॥
लषणहिं लिये निज पीठ। कर समर हनुमत ढीठ॥ ९३॥
लै भालु दलहि रिछेश। करशत्रु यूथनिशेश॥
भो घोर शोर अपार। दुहुँ ओर भट वरियार॥ ९४॥
तब इन्द्रजीत सुबाय। रथते उतरि महि आय॥
रिछपतिहि शक्ति प्रहार। लगि बही शोणित धार॥ ९५॥
तब जाम्बवंतहु धाय। पद पकरि भूरि भ्रमाय॥
फेंको रिसाय निशंक। गो इन्द्रजित गिरिलंक॥ ९६॥
लज्जित सु ह्वै घननाद। पुनि आय करि घननाद॥
रथ बैठि कीन सु युद्ध। रव घोर दुहुँ दल उद्ध॥ ९७॥
सुनि शोर पुनि दुहुँ वीर। धाये भिरे रणधीर॥
घननाद लछमन उद्ध। ठानो समर भरि क्रुद्ध॥ ९८॥
तब लषण हनि शर चार। रथ बाजि तासु विदार॥
पुनि सूतहू हंति दीनं। सारथ्य सो निज कीन॥ ९९॥

तब धाय कपि वरियार। डारो तुरँग चहुँ मार॥
सो धाय लै रथ आन। आयो जु कोउ न जान॥ १००॥
तिहि लाघवी लखि सोय। भे चकित चित सब कोय॥
पुनि इन्द्रजित धनुधार। किय कपिन बाण प्रहार॥ १०१॥
भागे प्लवंगम धीर। कहि पाहि लक्ष्मण वीर॥
तब रामबंधु प्रचंड। किय इन्द्रजित धनुखंड॥ १०२॥
निश्चर शरासन आन। लै हने अगणित बान॥
लखि राम अनुज सुवीर। भंजे सकल तिहि तीर॥ १०३॥
घननाद तब सहरोष। द्रुत धाय करि बहु घोष॥
पितु बन्धु हीय मझार। शर तीन कीन प्रहार॥ १०४॥
तबहीं विभीषण धाय। गहि गदा चंड भ्रमाय॥
सह सारथी रथ वाजि। विध्वंस कीन सु गाजि॥ १०५॥
ह्वै इन्द्राजित रथ हीन। गरुचंड शक्ति शुलीन॥
घाली तिनहिं बहु डाटि। द्रुत दीन लषण सु काटि॥ १०६॥
पुनि मेघनाद रिसाय। दिय लषण कवच गिराय॥
तब राम अनुज उदंड। तनु त्रान तिहि किय खंड॥ १०७॥
पुनि दोउ वीर प्रवीन। बहु शस्त्र संयुग कीन॥
फिरि अस्त्र करत प्रहार। दुहुँ दलत दुहुँ वरियार॥ १०८॥
तब ऐंद्र अस्त्र उडंद। संयुत लषण शरचंड॥
संधानि तानि सु चाप। भाषी बढाय प्रताप॥ १०९॥
जो राम दशरथ नंद। सत धर्म सत्य सुछंद॥
हैं तौ लगत यह बान। हो इन्द्रजित बिन प्रान॥ ११०॥
यौं सुमिरि दृढ़ प्रण ठान। सो अस्त्र संयुत बान॥
किय इंद्रजितहि प्रहार। अति उठी पावकझार॥ १११॥
सो जायके शरचंड। किय तासु शिर भुज खंड॥
हाराम कहि घननाद। तनु तजो करि घननाद॥ ११२॥
तिहि रुंड भो महि पात। निश्चर भगे विललात॥
ह्वै कीश भालु अनंद। कह जैति दशरथ नंद॥ ११३॥

सब देववृंद उताल। नभ आय युत सुरपाल ॥
वरषे प्रसून अनंद। कहि जैति रघुकुल चंद ॥ ११४ ॥
बहु भांति विनय सुनाय। सुरगये निज निज ठाय ॥
प्रमुदित कही सुरराज। निर्भय भये हम आज ॥ ११५ ॥
दोहा—मेघनाद वध करि लषण, लहो अनंद अपार ॥
चले सदल रण भूमितें, कहि जैराम उदार ॥ ११६ ॥
हनूमान लंकेशके, कन्ध लषण धरि हाथ ॥
सिथिल गात शोणित सनो, चले सुमिरि रघुनाथ ॥११७॥
राम बन्धु विजयी मुदित, इंद्रजीत कहँ जीति ॥
सकल सैन युत आयकै, प्रभुपद गहे सप्रीति ॥ ११८ ॥
उठि रघुवर हिय लायकै, बैठारे निज गोद ॥
बहु सराहि सनमानिकै, कहे बैन भरि मोद ॥ ११९ ॥
महावीर हो इन्द्र जित, युद्ध प्रवीन निशंक ॥
ताको वध कीनो अनुज, जीति लई अब लंक ॥ १२० ॥
तीन रैनि दिनलों लषण, ठानो समर अभंग ॥
दुष्कर कृत कीनो अनुज, भयो सकल दुख भंग ॥१२१॥
यौं रघुवर आनंद भरि, लिये बन्धुको अंक ॥
लषण वीरता सबहि प्रति, वर्णन करत निशंक ॥ १२२ ॥
ताही छिन श्रीराम ढिग, मेघनादको शीश ॥
लाये भट अवलोकिकै, मुदित ऋच्छ अरु कीश ॥ १२३ ॥
सो विशाल शिर तेजमय, निरखतहीं रघुनाथ ॥
कही धरौ मर्याद युत, है सुवीरको माथ ॥ १२४ ॥
यौं कहि पुनि लखि अनुजको, शोणित व्यथित शरीर ॥
श्रीरघुवर कोमल हृदय, भरि आये दृग नीर ॥ १२५ ॥
ताही छिन वर औषधी, वेगहि लाय सुखेन ॥
किये विरुज लषणहि सदल, तुरत लहो सब चैन ॥ १२६॥
अनुज सैन युत विरुज लखि, राघव भये अनंद
कीश भालु किय शोरचहुँ, जै जै जै रघुचंद ॥ १२७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० मेघनादयुद्धवध
वर्णनो नाम पंचदशोविभागः ॥ १५ ॥

दोहा—सुनत दशानन पुत्र वध, धरणि गिरो मुरझाय ॥
हाय इंद्रजित वीर वर, कहि रोवत अकुलाय ॥ १ ॥
सकल निशाचर निश्चरी, करत विलाप अपार ॥
छयो शोर चहुँ लंकमें, आरत होत पुकार ॥ २ ॥
पुत्र मरन दुख दुसह लहि, छायो क्रोध अखंड ॥
लै कृपाण धायो सपदि, सिय वध हित खल चंड ॥ ३ ॥
बरजत धाये सचिव सँग, पहुँचो सियढिग जाय ॥
तिहि विलोकिकै मैथिली, भई सभय विलपाय ॥ ४ ॥
बहु मंत्री गण रावणहि, सविनय नीति बुझाय ॥
लाये सदन बहोरिकै, बैठारो समुझाय ॥ ५ ॥
इत दशमुख दुख रोष भरि, मंत्रिन मिलि विलपात ॥
उत सबतिय रोवैं विकल, बहु उर शीश धुनात ॥ ६ ॥
इत रण मध्य सु इंद्रजित, जबहि भयो महिपात ॥
तासु तीय तब महल उत, लखी अनोखी बात ॥ ७ ॥

दोवई छंद ।

नागसुता तिय इंद्रजीतकी है सुलोचना नामा ॥
परमरम्य सो दृढ़ पतिव्रता बैठी हुती सुधामा ॥
औचकही ता छिन शर छिंदित मेघनाद भुजभारी ॥
नभ मग आय परी तिहि सन्मुख विशद विभूषण धारी ॥ ८ ॥
उझकि उठी अकुलाय हेरितिय धाय वेगि ढिग आई ॥
निज पति भुज अनुमानि हाय करि गिरी धरणि मुरझाई ॥
घोर शोर करि रोवन लागी सखिन ताहि समुझाई ॥
तब स्वामी बल गुणि सुलोचना हिय कछु धीरज लाई ॥ ९ ॥
छिन भुज पेषि विकलह्वो छिन पति गुणहि सुमिरि रहि जावै ॥
कियो विचार नारि दृढ़ जाते सब संदेह मिटावै
दुहुँ कर जोरि ध्यान धरि पतिपद वचन विनय युत बोली ॥
नाह बाहु तौ लिखौ भूमि जो हौं निज धर्म न डोली ॥ १० ॥
तब भुज निज गति लिखी सकल महि लखि पियवध दृढ जानी ॥

करि विलाप बहु निरखि कु औसर पुनि धीरज उर आनी ॥
सत्य प्रेम पति धर्मधारिनी उठि धन वित्त लुटाई ॥
सहित बाहु तनु सजि शिबिका चढि सखिन समेत सिधाई ११॥
दशमुख पास जाय बहु विलपत भाषे वचन कठोरा ॥
कहि बल पुत्रबधुहि समुझाई रावण सहित निहोरा॥
ताहि निदरि सो जाय सासु ढिग पगपरि कियो विलापा ॥
मंदोदरी गोदलै रोवै बढो हृदय संतापा ॥ १२ ॥
पुनि मयसुता वधू जियकी गति नेह धर्म लखि लीनी ॥
जाय लेहु रघुवरते पति शिर यों कहि शुभ सिख दीनी ॥
सासु रजाय पाय सो सखि गण संगहि वेगि सिधारी ॥
आय राम ढिग माथ नायकै मंजुल गिरा उचारी ॥ १३ ॥
प्रभु समर्थ उर अंतर्यामी मो रुचि पूरण कीजे ॥
हौं निज सत्य धर्म निरवाहौं याहितं पति शिर दीजे ॥
नेह धर्म दृढ़ लखि रघुनायक तिहि सो शीश दिवायो ॥
उठि लै पियमस्तक सुलोचना हृदै सप्रेम लगायो ॥ १४ ॥
ताछिन हँसि कपीश यौं बोले निश्चर माया भारी ॥
छिंदित मृतकबाहु लिखि देवै यह मिथ्या गति सारी ॥
जोपै सत्य भुजा लिपि कीनी तोपै अब यह शीशा ॥
याछिन हँसै बात तब मानै नत प्रपंच सब दीशा ॥ १५ ॥
सुनि बोले रघुवर सुकंठ सों सखा न मिथ्या मानौ ॥
लिखी भुजा सो सत्य बात अरु शिरहु हँसै दृढ जानो ॥
मो हिय ध्रुव प्रतीत याते यह है पतिव्रता नारी ॥
पातिव्रत धर्म प्रभाव अमित सो इती बात कह भारी ॥ १६ ॥
सुनि हिय अमरष सोच सकुच युत धरि सन्मुख पति माथा ॥
हँसो नाथ लज्जा मम राखो कही जोरि युग हाथा ॥
विनय करतही हँसो वेगि सो लखि सब अचरज आयो ॥
दशमुख पुत्र वधू हरषीलजि कपिपति शीश नवायो ॥ १७ ॥
पुनि सु राम लछमन लंकेशहि सविनय शीश नवाई ॥

लैशिर धरि शिबिका अरूढ ह्वै वेगि लंक मधि आई ॥
सुथल उताल रचाय सविधि सर लै भुज शीश सुवामा ॥
ह्वै निशंक तनु दहो सपति सो गमन कियो सुरधामा ॥ १८ ॥
दोहा–मेघनाद बल वीरता, अरु सुलोचना धर्म ।
देव अदेव सराहहीं, निरखि दुहूँ दृढ कर्म ॥ १९ ॥
लंकापति निश्चर सकल, विकल अधिक अकुलाय ॥
हाय हाय करि रोवहीं, इंद्रजीतगुण गाय ॥ २० ॥
कहत निशाचर निश्चरी, विलपि विलपि पछिताय ।
हाय दशानन का कियो; डारी लंक नशाय ॥ २१ ॥
इहि विधि लंका मध्य सब, सोचैं निश्चर वृंद ॥
इत रघुबर दल माहिं चहुँ, छायो परमानंद ॥ २२ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० सुलोचना सत्य
वर्णनो नाम षोडशोविभागः ॥ १६ ॥

---

तोटक छंद ।

दशकंठ सुमौन उसास भरै । घननाद बिना बहु सोच करै ॥
धरि धीर बहोरि विचार कियो । इत मोबिन है नहिं और वियो १॥
वर वीर जिते बहु लंक रहे । सब राम शरानल ज्वाल दहे ॥
अब है महिरावण आवहि सो । छलते बलते जय पावहि सो ॥२॥
इमि ठानि शिवालय माहिं गयो । जपि मंत्र महाबलिदान दियो ॥
तिहि सिद्धि प्रभाव उतालहिते । महिरावण आय पतालहिते ॥ ३ ॥
दशमाथहि वेगि मिलो सु तबै । तिहि ते वरणो तिन हाल सबै ॥
सुनिकै महिरावण रावणको । बहु धीर दई जै पावनको ॥ ४ ॥
पुनि यौं अहिरावण बात कही । हरिलै हतिहौं दुहुँ भ्रात सही ॥
जब राम सबंधु रहैं न यहीं । तबही कपि भालु बचैं सु कहां ॥ ५ ॥
इक याम सु औरहु धीर धरौ । पुनि धाय विजयःनिरसंक करौ ॥
हरि दोउ पताल सिधावहुँगो । बलि देविहि जाय चढ़ावहुँगो ॥ ६ ॥
जब भूरि प्रकाश दशौदिशिमें । दिनको सम देखि परै निशिमें ॥
तब जानि लियो ध्रुव काज भयो । अहिरावण लै दुहुँ बंधु गयो ७॥

इहि भांति बुझाय चलो खल सो । दशमाथ सहर्ष गयो थल सो ॥
महिरावण आय उताल तहां । निरखी कपि सैन प्रबंध महा ॥ ८ ॥
हनुमंत सुपुच्छ बढ़ाय घनी । चहुँ कोट कियो बिच मुख्य अनी ॥
सुचमू मधि राम सुबंधु लसे । पुनि संनिध वीर सचेत गसे ॥ ९ ॥
कपि ऋच्छ सुयूथप सैन लिये । सहचेत फिरैं चहुँ चक्र दिये ॥
गति कीट पतंगहुकी न तहां । प्रभुके ढिग जाय सु और कहां १०॥
हनुमंत लँगूर सुकोट चहूं । नहिं काहु दिशा मधि पंथ कहूं ॥
इक पौन तनै ढिग ते मग है । तितहूँ कपि रोपि रहो पग है ॥ ११॥
महिरावण ठाम अगम्य लखो । तब रूप विभीषणको सुरखो ॥
द्रुत पौन तनै ढिग जाय कही । कपि राघव जागत हैं कि नहीं १२॥
दुरि भेद लगावन लंक गयो । तिहिते मुहिं आज विलंब भयो ॥
प्रभु पास जु वेगहि जावहुँ मैं । सब हाल इकंत सुनावहुँ मैं ॥ १३ ॥
इमि भाषि चलो सु अनंद लहो । निज जानि कछू नहिं कीश कहो॥
हनुमंत भुलायगये छलमें । निरशंक सुजात भयो दलमें ॥ १४ ॥

दोहा—जाय लखे सब दूरिते, राम लषण कपिराज ॥
गज गवाक्ष लंकेश अरु, अपर समस्त समाज ॥ १५ ॥
सहित प्रबंध सचेत बहु, शोभित सब सरदार ॥
अपर पाहरू भालु कपि, निज निज ठौर हुस्यार ॥ १६ ॥
सो लखि महिरावण तबै, काज समैं अनुमान ॥
कीनो कामा देविको, मंत्र पठन युत ध्यान ॥१७॥
सो निश्चरमाया विवश, सबही भये अचेत ॥
छाई निद्रा घोर बहु, काहू कछू न चेत ॥ १८ ॥
तब महिरावण राम ढिग, गयो निशंक उताल ॥
जाय लखो दुहुँ बंधुको, तनुसुख तेज विशाल ॥ १९ ॥
गुनि कीनो दोऊनको, तंभन बगलामंत्र ॥
प्रभु मर्यादा पाल सो, सब विधि भये निजंत्र ॥ २० ॥
माया करि इहि भाँतिसो, अहिरावण हरषाय ॥
राम लषण हरिलै गयो, नभ मग वेगि दुराय ॥ २१ ॥

ताछिन भयो प्रकाश बहु, दिन समान चहुँओर ॥
सो विलोकि सब चकित भे, मिटो रैनतम घोर ॥ २२ ॥
सो प्रकाश है तुरत पुनि, मिटो भयो अँधियार ॥
उझकि उठे जित तित चहूँ, वानर भालु अपार ॥ २३ ॥
उत रावण हरषो लखो, महिरावण किय काज ॥
इत कपिदल खर भर परी, नहिं सबंधु रघुराज ॥ २४ ॥

मोतीदामछंद ।

सुकंठ विभीषण आदि अपार । लखैं चहुँ एकहि एक पुकार ॥
भयो कपि सैन कुलाहल शोर । कहैं कितगे दुहुँ राजकिशोर ॥२५॥
बिहाल फिरैं सबही दुख ग्रस्त । भये कपि भालु हिये बहु त्रस्त ॥
सुकंठ विभीषण औ रिछराय । सुबूझत भे हनुमंतहि धाय ॥ २६ ॥
कही तब कीश विभीषण पाहि । गये अबहीं तुम और सुनाहिं ॥
जु लंकपती सुनि चक्रित होय । कही हम जानि लयो छल जोय२७॥
धरे मम रूप न और लखाहि । पताल रहै महिरावण आहि ॥
वही हरि लीन दुहूँ नृपनंद । सुजानत है अतिही छलछंद॥२८॥
विभीषणके सुनि बैन कपीश । रिच्छेश हनूमत आदिक कीश ॥
सबै अकुलाय जु कीन विचार । मिलैं किमि दोउ सु राजकुमार२९॥
कहे तब बैन सुकंठ उताल । समर्थ सबै विधि अंजनिलाल ॥
सु आतुर धावहु वीर पताल । लखौ सह बंधु कहा रघुलाल ॥३०॥
तबै हनुमंत सुरूप दुराय । उठे सबही बहु धीर धराय ॥
कही अबहीं महिरावण मार । सुआवहुँ लै दुहुँ राजकुमार ॥ ३१ ॥
सु यौं कहि कूदि अकाशहि जाय । चले पितु वेगहि रोष बढाय ॥
लखो तरु एक जु मारग माहिं । तहां खग गिद्धनि गिद्ध रहाहिं ३२॥
सगर्भिनि गिद्धनि गिद्धहि टेरि । कही नर आमिष लावहु हेरि ॥
तबै वरणी वह धीर धराय ॥ घनो तुहि देहुँ सुप्रातहि लाय ॥३३॥
पताल रहै अहिरावण वीर । सबंधु हरे सु अबै रघुवीर ॥
प्रभात करै तिनको बलिदान । विशुद्ध धरौं वह आमिष आन॥३४॥
सुने इमि बैन प्रभंजन पूत । पताल गये द्रुतहीं अवधूत ॥

सुखोजिलियो महिरावण धाम। प्रबंध महा निरखो तिहि ठाम ३५॥
लखो तहँ द्वार महा वरिवंड। खडो इक वानर बाल प्रचंड॥
सुपौनतनै कहँ जान न दीन। भिरे दुहुँ युद्ध परस्पर कीन॥३६॥
समीरतनै तिहि पुच्छहि माहि॥ निबंध कियो पुनि गे गृह मांहि॥
सुनो न गुनो न लखो कछु कोय। लगे निज काज अनंदित होय३७
तहां द्रुतजाय समीरकुमार। अलक्ष भये सब लीन निहार॥
सजो बहुसाज समाज अपार। महामख होत उठै सिखिझार ३८॥
लसै वरमंडप मध्य सु देवि। यथोचित हैं सबही जन सेवि॥
धरी चहुँ पूजन सौंज अपार। जुरे नर नारि निशाचर झार॥३९॥
समीरतनै लखि ठानि विचार। महा लघुकीट सुरूपहि धार॥
प्रसूनन माहिं दुरे द्रुतजाय। सु भेद परो नाहिं काहु लखाय॥४०॥
सुफूल भये महिरावण हस्त। जु देविहि दीन चढ़ाय समस्त॥
चढावतही द्रुत अंजनिलाल। तहां प्रगटो तिय रूप कराल॥४१॥
दई पगते तिहि देविहि चापि। गई वह तो धरणी धसि काँपि॥
खड़ो तहँ वीर बड़ो मुख फारि। प्रसन्न सबै सुचरित्र निहारि॥४२॥
परस्पर बोल समस्त समाज। प्रसन्न भई वरदायनि आज॥
सहर्ष तबै महिरावण धाय। कियो बहु पूजन प्रीति बढाय॥ ४३॥
घने पकवान फलादिक भोग। सुरा पल शोणित लाय सुयोग॥
हजार हजार भरे घट थार। धरे कपि सो सब कीन अहार॥४४॥
तबै अहिरावण वेगहि धाय। सुठाम जु राम सबंधुहि लाय॥
कही सुमिरौ दुहुँ जो तुव होय। हतौं अबहीं बलि देवि हि होय॥४५॥
सुने तिहिके दुहुँ बंधु जु बैन। परस्पर हेरि भरे जल नैन॥
तबै सुमिरो हनुमानहि राम। गुनो मनमें कपि है बलधाम॥ ४६॥
तिही छिन काढि कृपाण कराल। चहो महिरावण घाल उताल॥
तबै कपि वेगि सुरूप विहाय। प्रसिद्ध भये निज देह दिखाय॥४७॥
सरोष ततक्षण सर्व समाज। सँहारि कियो कपि घोर गराज॥
तबै अहिरावण चंड कृपान। हनी हनुमंत हिये कर तान॥ ४८॥
समीर तनै द्रुत सो असि छीन। कियो महिरावणको शिर छीन॥

बहोरि बचे तहँ जे नर नारि। सुते बलवंत समस्त संहारि॥ ४९॥
लिये दुहुँ बंधु सुकंध चढाय। चले हनुमंत अनंद बढाय॥
प्रमोद भरे अवधेशकुमार। सराहत कीशहि बारहि बार॥ ५०॥
लखो पुनि द्वार प्रभंजन लाल। बँधो निज पुच्छहि सो कपिबाल॥
दियो तब छोरि दया हिय लाय। कही इत राज करौ तुम जाय५१॥
सुनी मकरध्वज तात रजाय। सहर्ष सुराज कियो तहँ जाय॥
उतै दुहुँ बंधुहि कंध सुधार। गयो कपि वेगहि सैन मझार॥ ५२॥
सुजै रघुवीर कही करि शोर। सुनो कपि भालु उठे चहुँ ओर॥
लखे हनुमंतहि राम समेत। सचेत भये सब हे जु अचेत॥ ५३॥
सहर्ष मिले हनुमानहि धाय। गहे दुहुँ बंधुनके सब पाय॥
भयो अति आनँद सैन मझार। छयो चहुँ जय जय शोर अपार५४॥
सुनो दशकंधर हाल समस्त। कियो बहु शोक भयो दुखग्रस्त॥
कही पुनि तीय घनी विधि ताहि। सिया कहँ देहु सुमानत नाहि ५५॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० यु० महिरावण वध
वर्णनो नाम सप्तदशोविभागः॥ १७॥

---

दोहा—महिरावण वध सुनि अतिहि, सोच विवश दशभाल॥
खेद रोष युत प्रातही, आयो सभा उताल॥ १॥
व्यग्रचित्त इत उत लखत, बैठो मौन उदास॥
कर कपोल छिन शीश धरि, दृग भरि लेत उसास॥ २॥
सो विलोकि बहु वीर वर, उठि बोले कर जोर॥
होय रजाय सुजाय हम, समर करैं अति घोर॥ ३॥
राम लषण प्रभु अनुज युत, सह सुकंठ हनुमान॥
सबकर करि संहार पुनि, वेगि लखैं पदआन॥ ४॥
सो सुनि हिय कछु धीर धरि, दशमुख आज्ञा दीन॥
मुख्य वीर लै भूरि दल, साजि गमन द्रुत कीन॥ ५॥
तिनहि निरखि कपि भालु भट, धाये तरु गिरि धार॥
भयो समर अति घोर चहुँ, हाहा होत पुकार॥ ६॥

प्राणआश तजि रैनिचर, परे अनी बिच धाय ॥
मारि विडारे भालु कपि, लिये घने गहि खाय ॥ ७ ॥
विकल भयो कपि ऋच्छ दल, भभरि भगे तजि धीर ॥
जाय पुकारे राम ढिग, पाहि पाहि रघुवीर ॥ ८ ॥
तब रघुवर धनु साजि द्रुत, धाय हने बहु बान ॥
राम नराचनते व्यथित, निश्चर दल बिचलान ॥ ९ ॥
पुनि धरि धीर सु रजनिचर, धाये एकहि बार ॥
तिनहिं राम ते रामपर, किय बहु शस्त्र प्रहार ॥ १० ॥
राम गंधरव अस्त्र शर, छाँडो परम प्रचंड ॥
जाते कोटिन रजनिचर, होन लगे शतखंड ॥ ११ ॥
पुनि रघुवर कौतुक कियो, प्रगटे रूप अपार ॥
इक राक्षस प्रति राम इक, बाणन करत प्रहार ॥ १२ ॥

प्र० वा ॥ यु० का० ॥ स० ९४ ॥ श्लो० ॥

ते तु रामसहस्राणि रणे पश्यन्ति राक्षसाः ॥
पुनः पश्यन्ति काकुत्स्थमेकमेव महाहवे ॥ १ ॥

दोहा—यातुधान सो चरित लखि, चकित विकल अकुलाय ॥
बहुरि छिनक माधि देखहीं, लरत एक रघुराय ॥ १३ ॥
यहि विधि श्रीरघुवीर वर, निश्चर सुभट जुझार ॥
युग घटिका पदहीन माधि, किये सकल संहार ॥ १४ ॥
द्वै लख पदचर अयुत रथ, वसु दश सहस मतंग ॥
सहस चतुर्दश वाजि वर, इक इक यूथपसंग ॥ १५ ॥
इमि यूथप अति मुख्यवर, सहस कोटि बलधाम ॥
तिनहिं सदल पूरब कथित, वध कीने श्रीराम ॥ १६ ॥
निरखि विजय जय शोर भो, लखि प्रभुबाण प्रभाव ॥
चकित चित्त हनुमंत सों, बूझी निश्चरराव ॥ १७ ॥
कहौ वीर रघुवीर शर, कढ़त तूनते एक ॥
कहा हेत सो जायकै, निश्चर हनत अनेक ॥ १८ ॥

तबै विभीषण प्रति कही, हनुमत बुद्धिनिधान ॥
प्रभुकर परशत शर बढत, ज्यौं सुपात्रको दान ॥ १९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

तूनमधि एकै दशहोत कर धारतही करत संधान शतरूप प्रगटावैहै ॥ साजत शरासन पै रचत सहस्र गात गमन समै में ह्वै सुलक्ष वपुजावै है ॥ लागत करोरि त्यौं बहोरि अर्व खर्व होवै अमित उदंड खलझुंडन नशावै है॥रसिकबिहारी राम सायक प्रताप भारी दुष्टदल मारी सो निषंग फिरि आवै है ॥ २० ॥

दोहा–सुनत विभीषण कपि वचन, कही राम शरधन्य ॥
धन्य नाथ धनि ते सुजन, जे प्रभु भक्त अनन्य ॥ २१ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० मूलदल युद्धवधवर्णनो
नाम अष्टादशोविभागः ॥ १८ ॥

---

दोहा–इत प्रमुदित सब राम दल, कह जै सीतानाथ ॥
उत वीरनको निधन सुनि, दुखित भयो दशमाथ ॥ १ ॥
कहत दशानन हौं नहीं, सुनो विभीषण सीख ॥
भाषी जिती सुबंधु सो, मोहिं परी सब दीख ॥ २ ॥
पै अब तौ प्रण है यही, होय विजय तौ नाम ॥
जो तनु त्यागौं युद्धमें, बसौं जाय सुरधाम ॥ ३ ॥
यौं कहि बहु विधि वचन पुनि, दशमुख रोष बढाय ॥
हौं चलिहौं सब सजहु यौं, मंत्रिन दई रजाय ॥ ४ ॥
सुनत महोदर वीरवर, महापार्श्व वरिवंड ॥
विरूपाक्ष आदिक सकल, समर उदंड प्रचंड ॥ ५ ॥
सजो लंकपति संगहित, दल चतुरंग अभंग ॥
यातुधान बलवान बहु, गाजैं युद्ध उमंग ॥ ६ ॥

चौपैया छंद ।

करि विविध प्रकारा युक्ति अपारा भूषण वसन हथ्यारा ॥
सजिकै दशभाला सुरथ विशाला बैठ बजाय नगारा ॥

निज सैन निहारी मुदित सुरारी कहत राम कह बाता ॥
दोऊ धनुधारी सह कपि झारी करिहौं आज निपाता ॥ ७ ॥
स्यंदन शंत लक्षा गज दश लक्षा पदचर अगणित घोरा ॥
खर ऊंट तुरंगा सजे सुढंगा तीसहि तीस करोरा ॥
इमि सैन मझारा रथ असवारा दशमुख कीन पयाना ॥
ताछिन चहुँधाई परे लखाई अशकुन भये जु नाना ॥ ८ ॥
दोहा—इत रावण आगमन सुनि, कीश भालु वरि बंड ।
चले सजग ह्वै समरहित, लै तरु कुधर प्रचंड ॥९॥
उत रावण इत राम दल, प्रबल अभंग अपार ॥
चले दुहूँ दिशिते दुहूँ, सहि न सकै महिभार ॥ १० ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

स्यंदन सवार ह्वै अपार उत यातुधान कवच मढे हैं अंग नख शिख झंफि झंफि॥रसिकविहारी इत भालु कपि भारीभीर चलत चमूके धूरि पूरि भानु छंफि छंफि ॥ दोऊ दल भार भूमि डगमग होत चहूँ दिग्गज सु दब्बै पग्ग शुंडनते चंफि चंफि॥जोरते सहस्र शीश जोरत फनीश तऊ बोझनते बार बार जात फन लंफि लंफि ॥ ११ ॥

चौपैया छंद ।

आवत दशशीशा लखि भट कीशा धाये करि अतिरीसा ।
सो कोपि विदारा कपि दल सारा गहि धनु शर भुजवीसा ॥
पुनि निश्चर नाना बहु बलवाना ऋच्छ प्लवंगम खाये ।
निज प्रभुबल पाई चहु दिशि धाई शस्त्रन मारि गिराये ॥ १२ ॥
सो लखि कपिराजा बल करि गाजा गहि तरु कुधर अपारा ॥
निश्चरन प्रहारैं हति महि डारैं मर्दत रिपुदल सारा ॥
करि क्रोध तमीचर कीशपतीपर वर्षेहिं शस्त्र घनेरे ॥
ते सबधरि भंजैं पुनि खल गंजैं वालिबंधु चहुँ फेरे ॥ १३ ॥
सो०—निरखत निज दल शाल, विरूपाक्ष योधा प्रबल ॥
करि बहु कोप कराल, तजिरथ गज आरूढ भो ॥ १४ ॥

चौपैया छंद ।

सो अतिहि उताला बाण कराला बहु सुग्रीवहि मारे ॥
संप्रथन निहारी ले तरु भारी हनि करि अंग विदारे ॥
पुनि वनचरपाला धरि शुंडाला खैंचो धनुष प्रमाना ॥
तिहि पकरि पछारो दंत उखारो हतिडारो बलवाना ॥ १५ ॥

दोहा—विरूपाक्ष गजघात लखि, धायो लै करबाल ॥
तापर कपिपति वेगही, घाली शिला बिशाल ॥ १६ ॥
विरूपाक्ष तिहि खड्गते, खंडित कीन उताल ॥
हनी कृपान बहोरि लगि, कपिपति भयो विहाल ॥ १७ ॥

चौपैया छंद ।

पुनि सँभारि कपीशा करि बलरीसा मुष्टि तासु उर घाली ॥
निश्चर अकुलाई पुनि तुर धाई असि सुकंठ तनुशाली ॥
तब कीश उताला शिला विशाला हनि तिहि भूमि गिरायो ॥
सो वीर कराला भयो विहाला वेगि प्राण बिनशायो ॥ १८ ॥

दोहा—विरूपाक्ष को मरन लखि, कुपित महोदर वीर ॥
धाय हने सुग्रीवके, अंग अमित खर तीर ॥ १९ ॥

चौपैया छंद ।

लगि बाण विहाला भे कपिपाला तबहि महोदर धाई ॥
हनि शस्त्र प्रचंडन करि करि खंडन दिय कपि भालु नशाई ।
पुनि सँभारि कपिंदा तिहि तनु भिंदा बहु तरु कुधर प्रहारे ॥
ते कछु तनु लागे कछु लगि भागे कछु विभंजि महिडारे ॥ २० ॥
तबहीं कपिपाला परिघकराला लियो उठाय उताला ॥
सोहनि हरि स्यंदन कीन निकंदन पुनि निश्चर शिर घाला ।
सो भूतल आई गदा भमाई किय कपिहीय प्रहारा ।
बहुरो कपिराई परिघ फिराई तासु हृदय मधि मारा ॥ २१ ॥
सो परिघ प्रचंडा गदा उदंडा दुहूँ शस्त्र दुहुँ खंडे ॥
तहँ विविध हथ्यारा भूमि मझारा परे सु लैरण मंडे ॥
फिरि कीश उतंका निश्चर बंका दोऊ भिरे सु योधा ।
तल मुक्कन लत्तन नख्खन दन्तन नाशत वपु करि क्रोधा ॥ २२ ॥

तब निश्चर हाला खड्ग कराला हनो कीशके अंगा ॥
सो लै करबाला वनचरपाला कियो तासु शिर भंगा ॥
करि घोर पुकारा अवनिमझारा गिरो महोदर वीरा ॥
तिहि निधन निहारी निश्चर धारी कियो विलाप अधीरा ॥२३॥
सो०—निरखि महोदर अंत, महापार्श्व बहु क्रोध भरि ॥
सायक शालि अनंत, कीन कपीशहि व्यथित अति ॥२४॥
पुनि अंगदहु सुधाय, सहित भालु कपि सैन बहु ॥
बाणनमारि थकाय, करन लगो सब दल विचल ॥२५॥

चौपैया छंद।

तब अगंद धाई परिघ उठाई कीनो वेगि प्रहारा ॥
सारथी समेता होय अचेता गिरो सु भूमि मझारा ॥
ताछिन ऋछनाथा निज दल साथा गहितरु भूधर धाये ॥
तिहि स्यंदन तोरा शिला कठोरा हनि वर वाजि नशाये ॥ २६ ॥
दोहा—ताछिन सँभरि उताल उठि, महापार्श्व वर वीर ॥
सदल ऋच्छपति अंगदहि, विकल किये हनि तीर ॥ २७ ॥

चौपैया छंद।

कपि ऋच्छ विहाला निरखि उताला अंगद परिघ प्रहारा ॥
तिहि लागत निश्चर करते धनु शर गिरिगो धरणि मझारा ॥
सो कोपि प्रंचडा फरस अखंडा वालितनय पर घाला ॥
करि दाँव बचाई पुनि तिहि धाई वज्रमुष्ट उरशाला ॥ २८ ॥
सो०—लागत मुष्ट प्रचंड, महापार्श्व वरिबंड भट ॥
हृदय भयो शतखंड, गिरो मृतक ह्वै समर महि ॥ २९ ॥
ताहि निधन करि वीर, धाय हनत बहु निश्चरन ॥
भये सु निपट अधीर, आरत करत पुकार अति ॥ ३० ॥

चक्रछंद।

यांतुधान ईश हेरि यातुधान नाशही ॥ कोपि, सारथीहि यौं कही सुलै उसासही ॥ देख देख भालु कीश मारि मारि भज्जहीं ॥ मोसमस्त सैन को सँहारि घोर गज्जहीं ॥३१॥ वेगि कीश ऋच्छभीर मध्यवाह

स्यंदनै ॥ मारहूँ समेत सेन आज राजनंदनै ॥ यौं चलाय रथ्थ वीस हथ्थ चाप बानलै ॥ घाल घाल तीर वीर वीरडार प्रानलै॥३२॥ देखि लंक ईश रीस कीश युद्ध तज्जिकै ॥ त्राहि त्राहि बोलहीं सु राम पास भज्जिकै॥जानिकै सुरारिचंड दोउ बंधु क्रुद्ध ह्वै ॥चाप बाण साजिकै सुरारि भे निरुद्ध ह्वै॥३३॥वेगते प्रचंड बाण दोउ वीर छंडहीं ॥ यातुधान ईशके समस्त शस्त्र खंडहीं ॥ वीसबाहु बाहुलाघवी चली न नेकहू ॥ कीन जे प्रहार ते बचे न तीर एकहू ॥ ३४ ॥ फेरि लंकपाल पै तजे प्रचंडबानजे॥ सोउ खंडि खंडि कीन रेणुकी समानते॥यातुधान वीरके सु अंगतीर छेदिगे॥दोउ भ्रात गातमें प्रचंडमंडभेदिगे ॥३५॥ कौशलाधिराज निश्चराधिराज क्रुद्धमें॥दोउभेनिरुद्ध उद्ध बुद्ध अस्त्र युद्धमें ॥ लंकनाथ राम अस्त्र शस्त्र भंजि डारहीं ॥ राजपुत्र तासु अस्त्र शस्त्रते सँहारहीं ॥ ३६ ॥ सर्व अस्त्र शस्त्रमें प्रवीन दोउ वीर हैं ॥ युद्धमें प्रबुद्धमें सु दोउ वीर धीर हैं॥काहु के न अस्त्र काहु काहु पै प्रचंड भे॥ह्वै रहे समान जो अखंड खंड मंड भे॥ह्वै रहे समान जो अखंड खंड मंडभे॥३७॥हेरिकै अनंत ह्वै सरोष बाण छंडिकै॥ सूत केतु चाप तासु डारि दीन खंडिकै॥तासमै विभीषणौ गदा प्रहार धायकै ॥ रथ्थ वाजि मारि दीन भूमिमें गिरायकै ॥ ॥३८॥ देखि सो सुरारि शक्ति बंधु पै प्रहारकीन॥ ताहि भंजि बाणते जु राम बंधु डारदी ॥ कोपि लंकनाथ यों अनंत सों तबै कही ॥ क्यों बचै विभीषणै सु मृत्यु आपनी चही ॥ ३९॥ भाषि यों सुरारि ब्रह्मदत्त शक्ति धारिकै ॥ कीन्ह सों प्रहार राम बंधु पै प्रचारिकै ॥ तासुभंग हेतु लै अनेक बाण तज्जही ॥ पै अभंग है उदंड शस्त्र नाहिं भज्जही ॥ ४० ॥ शक्ति सो प्रचंड राम बंधु हीय छेदिगी ॥ पातभे विहाल ह्वै सुभूमि मध्य भेदिगी ॥ देखि भ्रात घात राम शोकसिंधु डूबिकै॥ धीर धार औसरै विचार प्राण ऊबिकै ॥ ४१ ॥ वेगही उखारि शक्ति भंजिकै बहाय दी ॥ भूरिभारचंड देवदत्तसों नशायदी॥ जो लगे सुराम शक्ति भंग की नतौ लगे ॥ शालि दीन लंकनाथ

बाण अंगसों लगे ॥ ४२ ॥ फेरि राम बंधुको सुखेन बोलि सौंपिकै॥ रावणै प्रहारकीन भूरि बाण कोपिकै ॥ लंकपाल वीर तीर शक्ति शूल घालही ॥ होत है विहाल ह्वै सचेत शस्त्र शालही ॥ ४३ ॥ तासमै प्रचंड घोर शोर भो अपारही ॥ कीश भालु यातुधान मर्दिकै विदारही ॥ औधनाथ लंकनाथ दोउ क्रुद्ध छै गये ॥ कै अराम कै अरावणै यही हृढै लये ॥ ४४ ॥ राम कोपि कोपिकै प्रचंडबान जे हने ॥ ते समस्त लंकनाथ गातमें विधे घने॥ तासमै निशाचरेश हीयमें विचारही ॥ हौं करौं जु युद्ध कोउ तीर ये निसारही ॥ ४५ ॥ ता समै जु रामचंद्र बंधुनेह लायकै ॥ कीन यों विचार भ्रात देखि आउँ धायकै ॥ फेर हौं सुरारिको सुरारि ठान मारहूँ ॥ वेगि भंजि याहि भूमिभारको उतारहूं ॥ ४६ ॥ यों विचार ठानि रामबंधु पास धायगे ॥ देखिकै विहाल क्रुद्ध बुद्धिसों भुलायगे॥ तासमै सुलंकनाथ औसरै निहारिकै ॥ ह्वै अलक्ष गो उताल धामको सिधारिकै ॥ ४७॥

दोहा–जाय लंकपति लंकमधि, बैठो रहसि निकेत ॥
रामसायकन व्यथित सो, दीह उसाँस न लेत ॥४८॥
ताछिन तिहि मंदोदरी, समुझायो पुनि भूर ॥
कही कंत अजहूं भली, करो सकल हठ दूर ॥ ४९ ॥
सियहि साथ लै नाथ द्रुत, मिलहु जाय रघुनाथ ॥
जाते हौं आनंद मय, प्रभुयुत रहौं सनाथ ॥ ५० ॥
सुनि दशमुख मंदोदरिहि, गहि लाई निज अंक ॥
बहु विधि धीर धरायकै, कहे बैन निश्शंक ॥ ५१ ॥
हौं जानौ सब भामिनी, पै हैं अकथ सुभेद ॥
युद्धाकियेही मोर भल, ह्वैहै करो न खेद ॥ ५२ ॥
तब बोली तिय लखहु पिय, अब कह जयकी आश॥
कुंभकर्ण घननादसे, समरथ भये विनाश ॥ ५३ ॥
बंधु पुत्रको नाम सुनि, दशमुख भरि जलनैन ॥
पुनि बहु कोप बढायकै, भाषे उद्धत बैन ॥ ५४ ॥
हौं अबहीं द्रुत जायकै, करि मख रैनिमझार ॥

कालि मध्य दिन साजिदल, संयुग ठनौं अपार ॥ ५५ ॥
इष्ट कृपा ते जीतिहौं, रामहि सदल उताल ॥
यौं कहि गमनो साज सजि, यज्ञशाल दशभाल ॥ ५६ ॥
इत लछमनहि विलोकि कै, राघव करत विलाप ॥
बोले अति विह्वल हृदय, बढो महासंताप ॥ ५७ ॥
हाय लषण हा बंधु प्रिय, नेक लखौ मम ओर ॥
कहौ वचन कछु क्यौं कियो, ऐसो हियो कठोर ॥५८॥
मोहिँ अकेले त्यागि इत, जनि जावो सुरधाम ॥
हौं तुव संग सिधारिहौं, अब मोजियन निकाम ॥ ५९ ॥
जाति मित्र धन धाम तिय, पाइय देश विदेश ॥
गयो सहोदर बंधु फिरि, मिलै न काहू देश ॥ ६० ॥
यौं विलपत बहु रामसों, कह सुखेन वर बैन ॥
धीरज धारौ नाथ उर, सोच समै यह हैन ॥ ६१ ॥
पुनि हेरौ तनु लषणको, नहीं श्याम नहिं सीत ॥
मुख प्रफुल्ल कर पद अरुण, तजौ नाथ सब भीत ॥ ६२ ॥
सुनि बोले रघुवीर अब, बंधु लहै किमि चैन ॥
जाम्बवंत ताछिन कहे, समय सरिस वरवैन ॥ ६३ ॥
लंकामाधि सद वैद्य वर, है सुषेन जिहि नाम ॥
तिहि आये सब भाँति ते, सिद्धि होय निज काम ॥ ६४ ॥
पवनसुतहि जो भेजिये, बहुरि सु औषधि हेत ॥
तौन बनै अब छिनहि छिन, लछमन होत अचेत ॥ ६५ ॥
तब रघुवर हनुमंत सों, बोले निपट अधीर ॥
जाहु लंकते वैदसो, कैसहु लावो वीर ॥ ६६ ॥
तब हनुमंत तुरंतही, लंकहि जाय उताल ॥
सदन समेत सुषेणको, लाय धरो ततकाल ॥ ६७ ॥
तब सुवैद्य लखि लषणको, कहे विचारि सुबैन ॥
वर विशल्यकर सद्यबिन, आन सु भेषजहै न ॥ ६८ ॥

सो विशल्य कर औषधी, द्रोणाचल मधिभूर ॥
पवनपुत्र द्रुत लावहीं, हैं कपि बहु बल पूर ॥ ६९ ॥
सो सुनि वीर तुरंतही, धरि वर रूप विशाल ॥
उछलि चले नभपंथ ह्वै, गर्जत अंजनिलाल ॥ ७० ॥
ताछिन सुनि कपि गर्जना, रावण दूत बुलाय ॥
वेगि पठायो भाषि यौं, लखौ शोर कहँ आय ॥ ७१ ॥
सो चर कपि वपु धारिकै, लियो भेद सब आय ॥
रैनि समैं कोउ न लखो, बहुरि गये तहँ धाय ॥ ७२ ॥
वीर गमन वरणो सुनत, दशमुख उठि अकुलाय ॥
कालनेमि निश्चर सदन, आयो अति अतुराय ॥ ७३ ॥
कही वेगि तुम जाय द्रुत, करि कछु युक्ति विचार ॥
मग बिच माया ठानिकै, रोको पवनकुमार ॥ ७४ ॥
होय विलंब न आवही, जो औषधि निशि माहिं ॥
प्रात होय तब कैसहू, फेरि न लषण बचाहि ॥ ७५ ॥
कालनेमि सुनि तब कही, हनुमत शिव अवतार ॥
को समर्थ तिन रोक सक, कीजे हिये विचार ॥ ७६ ॥
सुनत दशानन कुपित भो, कालनेमि तब शोच ॥
क्यौं न मरौं हरिदास कर, खल कर वध अति पोच ॥७७॥

चौ०-यौं गुनि कालनेमि द्रुत जाई ❀ मग बिच निज माया प्रगटाई ॥
सर आराम सदन वर साजा ❀ बनि बैठो निश्चर मुनिराजा७८॥
तहँ केसरी सुवन जब गयऊ ❀ ऋषिहि देखि अति प्रमुदित भयऊ ॥
जाना राम भक्तवर आही ❀ विन इहि मिले जाब भल नाहीं७९

दोहा-राम भक्त द्विज देव गुरु, पितृ स्वामि लखि कोय ॥
जो न नमत गमनत विमुख, तिहि भल कबहुँ न होय ॥८०॥

चौ०-यौं विचारि कपि मुनि ढिग जाई ❀ जैसियराम कही शिरनाई ॥
सो करि जै स्वागत बैठारा ❀ कीन यथोचित बहु सतकारा८१ ॥
कपट रूप ऋषि कही बहोरी ❀ हे कपि दिव्य दृष्टिहै मोरी ॥
महि सब देखि परै इहि ठाई ❀ लंक होय जिहि भाँति लराई८२ ॥

पुनि तुम जात काज सो जानौं ❀ सुनौ सत्य भवितव्य बखानौ ॥
मरै लंकपति प्रभु जै पैहैं ❀ निश्चर नाथ विभीषण ह्वै हैं॥८३॥
सो सुनि कपि आनंद अघाना ❀ पुनि मुनि प्रति भाषी हनुमाना ॥
तृषा विवश मो चित्त अधीरा ❀ आयसु होय पियौं शरनीरा॥८४॥
सो सुनि कही करौ जलपाना ❀ आवो वेगि कहौं कछु आना ॥
गति भविष्य युत विशद चरित्रा ❀ कपि सुनि लैयो कथा विचित्रा८५
सुनि सानंद वेगि सर आई ❀ पैठि पियो जल सरस अघाई ॥
ताछिन तहँ मकरी इक धाई ❀ गहि लीनो कपिपद वरियाई॥८६॥
कपि अकुलाय दाबि तिहिं दीनी ❀ भई मृतक सो परम मलीनी ॥
पुनि वह दिव्य नारि वपुधारी ❀ गई गगनवर गिरा उचारी ॥८७॥
हे कपि यह निश्चर मुनि नाहीं ❀ बैठो छलन हेतु तुम काहीं ॥
सो सुनि हनूमान रिसलाई ❀ ह्वै करालवपु पुच्छ बढ़ाई ॥ ८८॥
ताहि लंगूर लपेटि उठाई ❀ करि बल पटको भूमि भमाई ॥
कालनेमि भो मृतक तुरंता ❀ कियो गमन वेगै हनुमंता ॥ ८९॥
जाय देखि गिरिकीन विचारा ❀ हेरत औषधि लागै बारा ॥
यौं गुनि कुधर वामकर धारा ❀ धाये नभपथ वेग अपारा ॥ ९०॥
मारग व्योम अवध ढिग आये ❀ प्रलै पौन सम वेग जु छाये ॥
सो सुनि भरत उठे अकुलाई ❀ रैनि समय लखि नभ चहुँघाई९१
हेरो कछु न व्योम अँधियारा ❀ तब ताकि शब्दवेध शर मारा ॥
बिन फल सायक लगत तुरंता ❀ गिरे भूमि नगयुत हनुमंता॥९२॥
गिरत कीश कह हा सिय रामा ❀ सुनि धाये भूपति बलधामा ॥
कपिहि भरत बूझो लखि हाला ❀ सो सूक्षम सब कहो उताला ॥९३॥
सुनि कैकयीसुवन पछिताने ❀ सुमिरि लषण सिय प्रभु दुखसाने॥
कुसमय जानि धीर उरधारी ❀ गदगद कंठ सु गिरा उचारी॥९४॥

दोहा—व्यथित भये इहि हेतुते, गिरि युत अंजनिलाल ॥
उठि बैठो ममबाण पर, भेजौं अतिहि उताल ॥ ९५ ॥
सो सुनिकै कपि चकित ह्वै, मनमहँ कीन विचार ॥
लेंउ परीक्षा किमि चलै, शर गिरि युत ममभार ॥ ९६ ॥

यौं गुनि गिरि युत पवनसुत, बैठबाणपर आय ॥
तबहिं भरत शर धनुष धर, चाहो देहुँ चलाय ॥ ९७ ॥
लखि अपार बल भरतसों, कही वेगि हनुमान ॥
प्रभु न परिश्रम कीजिये, जैहौं बाण समान ॥ ९८ ॥
कपि हिय रुचि लखि भूप तब, दीनी वेगि रजाय ॥
लै गिरि कर कूदे गगन, भरत चरण शिरनाय ॥९९॥
उत रघुवर लखि लषणको, विलपत करत विचार ॥
रैनि चली आयो न कपि, कहा लगाई बार ॥ १०० ॥
नंदग्रामते तासमै, गिरियुत पवन कुमार ॥
नभमग घटिका अर्ध मधि, आये सैन मझार ॥ १०१ ॥
लखि हनुमंतहि गिरि सहित, मुदित भये रघुचंद ॥
अपर भालु कपि सैन सब, लहो परम आनंद ॥ १०२ ॥
तब सुवैद्य लै औषधी, लषणहि सविधि सुँघाय ॥
करतहि सो अघ्रानके, उठे वीर हरषाय ॥ १०३ ॥
मिटे सकल व्रण तुरतही, दूर भई सब पीर ॥
विरुजेहेरि वर बन्धु बहु, सुखपायो रघुवीर ॥ १०४ ॥
प्रेम सहित वर अनुजको, लीनो अंक लगाय ॥
पुनि बोले हनुमंत सों, ह्वै अधीन रघुराय ॥ १०५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

प्रथम सुकंठ ते मिलायो सिंधु नांघो सीय शोधी दल ल्यायो निज नैनन निहारो मैं ॥ रसिकबिहारी महिरावण ते लायो इमि भूरि सबही ते यह अधिक विचारो मैं ॥ तुब उपकारहैं अनेक प्राण पंच एक प्रति उपकार हेत सो तौ वारि डारो मैं ॥ येहो हनुमान बल वानहौं बखानौं सत्य आज ते रहौं गो सदा ऋणिया तिहारो मैं १०६

प्र० ॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक ॥

एकैकस्योपकाराणां प्राणान्दास्यामि ते कपे ॥
प्रत्यक्ष क्रियमाणो वै शेषस्य ऋणिनो वयम् ॥ १ ॥
दोहा—सुनि प्रभु बैन समीरसुत, गहे राम पद धाय ॥
करी विनय बहु राजसुत, कपिहि लियो उर लाय १०७ ॥

पुनि रघुवीर सुखेन को, कीनो मान बखान ॥
बहुरि हिये रुचि जानिकै, दियो अभै वरदान ॥ १०८ ॥
पुनि प्रभु रुख लखि पवनसुत, गिरि अरु सगृह सुषेन ॥
निज निज थल दुहुँ धरि तुरत, आय गये मधि सैन १०९
अपर भालु कपि जे रहे, पीड़ित मृतक शरीर ॥
शैल पवनके परशते, विरुज उठे सब वीर ॥ ११० ॥
उठि बोले सब राम जै, जैति लषण वर जोर ॥
जै कपीश हनुमंत यौं, करैं भालु कपि शोर ॥ १११ ॥
रसिकबिहारी मुदित अति, रहे सकल सुख पूर ॥
राम कृपा ते ह्वै गये, तन मनके दुख दूर ॥ ११२ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्धकालनेमि वध
वर्णनो नाम एकोनविंशोविभागः ॥ १९ ॥

---

दोहा—रैनिसमै उत दशवदन, कालनेमि पठवाय ॥
करनलगो मख सविधि वर, वेगि यज्ञ थल जाय ॥ १ ॥
यज्ञ करतही कपिनको, सुनो सु जै जै शोर ॥
जानि गयो लै औषधी, आयो कपि वरजोर ॥ २ ॥
ताही छिन चर आय कै, वर्णन कियो समस्त ॥
सुनि रजाय दीनी तबै, वर दल सजै प्रशस्त ॥ ३ ॥
मध्य दिवस अभिजित समै, संयुत सकल सुसाज ॥
मख पूरण करि वेगही, चालि हति हौं रघुराज ॥ ४ ॥
यौं रजायदैके सविधि, करन लगो मख फेर ॥
मद आमिष अज कृष्ण युत, मंत्रन आहुति गेर ॥ ५ ॥
उत निश्चर साजन लगे, वाहन कवच हथ्यार ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, लंका नगर मझार ॥ ६ ॥
निज निज दल सजि यूथपति, जुरन लगे सब आन ॥
रंग रंग फहरात ध्वज, गर्जत घुमारि निशान ॥ ७ ॥
ताछिन भेद मँगाय कै, वेगि विभीषण जाय ॥
कही रामसों मख करै, याछिन निश्चरराय ॥ ८ ॥

सो प्रभु वेगि पठाइये, हनुमानादिक वीर ॥
करैं जाय विध्वंस मख, छूटै दशमुख धीर ॥ ९ ॥
मध्य दिवस मधि धायहै, समर हेत मम भ्रात ॥
याते मख विध्वंस भल, अबहीं समय प्रभात ॥ १० ॥
सुनि रघुवीर सुकंठ सों, कही वेगि भट जाय ॥
करै लंकपति यज्ञ सो, डारैं सकल नशाय ॥ ११ ॥
सो०—ताही छिन कपिराज, ऋच्छराजके संग करि ॥
भट कपि भालु समाज, भेजे समर सुधीर बहु ॥ १२ ॥
चले सुभट कपि ऋच्छ, हनुमानादि प्रवीन अति ॥
सकल युद्ध गति शिच्छ, अस्त्र शस्त्र निर्भय निपुण ॥ १३ ॥
समर बाजने घोर, बजत शोर चहुँ नगरमें ॥
भालु कीश वरजोर, ह्वै सकोप धाये सपदि ॥ १४ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

डंकाकी धुकार सुनि लंकामें सुहंका करि कूदे कपि भालु दै फलंका भिरे जूटि जूटि ॥ निरखि निशंका रजनीचर सशंका भये बंका वीर हाथते हथ्यार गिरे छूटि छूटि ॥ रसिकविहारी कहै राम जै उतंका सबै ढंका दै ढहाये भौन भंका परे टूटि टूटि ॥ शोणित की पंका पाय छंका काक कंका धाय धाय खाय रंका औ मलंका धरैं लूटि लूटि ॥ १५ ॥

तोमरछंद।

इमि भालु कीश प्रचंड । करि प्रबल रिपु दल खंड ॥
गे यज्ञशालहि धाय । देखो सुनिश्चरराय ॥ १६ ॥
चहुँ बहु प्रबंध समेत । मख करत बैठ निकेत ॥
लखि भालु वानर धाय । भट भिरे निश्चर आय ॥ १७ ॥
शर शक्ति परिघ कृपान । द्रुम उपल सब अरु जान ॥
दुहुँ ओर होत प्रहार । भट गिरत भूमि मझार ॥ १८ ॥

अमृतध्वनिछंद।

उद्धत मरकट विकट भट झपट तर पट उच्छल्ल ॥
हिय हरषत धरषत खल न दरखत वरषत मल्ल ॥

मल्लन गंजत भल्लन भंजन हल्लन करि करि ॥
लथ्थन रद्दत मथ्थन मद्दत हथ्थन धरि धरि ॥
कट्टत दंतन फट्टत अंतन दट्टत रुद्दत ॥
भज्जत रिपु बल छज्जत कपि दल गज्जत उद्धत ॥ १९ ॥

तोमरछंद।

इमि सकल दल बिनशाय। कपि भालु पुनि रिस लाय ॥
मखशाल दीनढहाय। नहिं उठो निश्चरराय ॥ २० ॥
पढ़ि मंत्र आहुति देत। सो अनत चित्त न देत ॥
तब पौननंदन कूदि। गहि लियो तिहि मुख मूंदि ॥ २१ ॥
दलि चरणते सब साज। कीनो सुघोर गराज ॥
सुनि अपर ऋच्छ सुकीश। धाये चहूँ करि खीस ॥ २२ ॥
दिय अनल कुंडहि फोरि। साकल्य सकल बिथोरि ॥
मल मूत्र करि करि भूर। सो यज्ञ थल चहुँ पूर ॥ २३ ॥
पुनि वीर वर हनुमान। तिहि हनो इकतल तान ॥
द्रुत धाय कुपित रिछेश। गहि लीन दशमुख केश ॥ २४ ॥
रावण तबै अकुलान। गहि लीन दुहुँ बलवान ॥
पद पकरि पटकन चाह। तब तिन मरोर सुबाँह ॥ २५ ॥
भुज मुरत तिन दिय छोरि। ते दंत नखत न छोरि ॥
तहँते उछलि प्रभुपास। आये सदल सहुलास ॥ २६ ॥
दशकंठ किय अनुमान। अब नहिं बचै मम प्रान ॥
पुनि धीर धरि बलवंत। लै विशिख शस्त्र अनंत ॥२७॥
तनु वसन भूषण धार। स्यंदन भयो असवार ॥
चतुरंग सैन अपार। लै चलो उत्तर द्वार ॥ २८ ॥
तिहि समय मधि चहुँ ओर। बहु होत अशकुन घोर ॥
है कालवश दशभाल। तिन निदरि जात उताल ॥ २९ ॥

दोहा—गिरो गिद्ध ध्वज यान पर, अरु इकश्वेतकबंध ॥
रुधिर सिक्त महि पतन भो, लखो निकट दशकंध ॥ ३० ॥
शोणित वरषो व्योम ते, भयो भूर भू कंप ॥

घोर पवन रजते तबै, गई दशौ दिश झंप ॥ ३१ ॥
विज्जुपात भो मेघ बिन, प्रगटी पावक ज्वाल ॥
मृग लोवा अरु श्वान खर, रोदन करत शृगाल ॥ ३२ ॥
पंथ चलत महि अरुझिकै, गिरैं यान भट भार ॥
बहुरि आपही ते सहज, करते खसे हत्यार ॥ ३३ ॥
चलैं न वाहन रुकत सब, पुनि भट मुख रति हीन ॥
दीन चित्त गदगद गिरा, भये अंग बल छीन ॥ ३४ ॥
बिन घन झंपो भानु नभ, फरक वाम भुज नैन ॥
पुनि पुनि बोलहिं लूक अरु, शिवा सृगाल डरै न ॥ ३५ ॥
पल आहारी द्विज फिरैं, ऊपर मंडल वाम ॥
पुनि दक्षिण मुख केतु पर, बैठो गिद्ध निकाम ॥ ३६ ॥
घोर गर्जना मेघ कर, पशुरथ त्यागि परात ॥
कसा सारथी हाथते, वाहत भो महिपात ॥ ३७ ॥
गिरो ध्वजा रथ शिखर महि, वाहन दृग जल जात ॥
गर्दभ दरशो क्रूर स्वर, सन्मुख शोर करात ॥ ३८ ॥
सन्मुख आयो रिक्त घट, शुष्क काष्ठको भार ॥
तिय विधवा अरु नग्न गज, रुदन करत शिशु चार ॥ ३९ ॥
विप्र लखो इक नैन को, तैलकार घटकार ॥
तीन मिले ब्राह्मन बहुरि, रोवत तिया अपार ॥ ४० ॥
बहु पक्षीगण पल भषी, शीशन पै मडरात ॥
चुंच हनत बैठत भजत, वाहन भभरि परात ॥ ४१ ॥
इनहि आदि अशकुन विविध, लखे सुरारि प्रबुद्ध ॥
सो न गिनै कछु मृत्युवश, भो अबुद्ध भरि क्रुद्ध ॥ ४२ ॥

तोमर छंद।

इमि यातुधान प्रचंड। करि कढे शोर उदंड ॥
सब कहत जै दशमाथ। जै जैति निश्चरनाथ ॥ ४३ ॥
लखि दूरिते रिपु सैन। कह राम राजिव नैन ॥
इंहि लंक नगर मझार। है वीर को नाहिं पार ॥ ४४ ॥

पुनि भूरि अचरज और । देखो परै इहि ठौर ॥
जैसे नशे रण माहिं । तैसे बहुरि दरशाहिं ॥ ४५ ॥
सुनि राम बैन उताल । भाषो बिभीषण हाल ॥
कह लंकपति पुनि ईश । है एक इक दशशीश ॥ ४६ ॥
अरु भूरि निश्चर आन । बहु रूप नाम समान ॥
हैं एक सरिस अनेक । जिन माहिं भेद न नेक ॥ ४७ ॥
इमि लंकपति रघुराज । कह निरखि लंक समाज ॥
ताछिन भयो अतिशोर । धाये निशाचर घोर ॥ ४८ ॥
सो सुनि उठे रघुनाथ । सजि वेगि धनु शर भाथ ॥
लछमनहु चाप निषंग । धारण लगे निज अंग ॥ ४९ ॥
सो लखि कही रघुराज । तुम युद्ध करहु न आज ॥
सुनि बंधु कह कर जोर । यह नाथ धर्म न मोर ॥ ५० ॥
बोले बहुरि रघुवीर । हौ बंधु अति रणधीर ॥
पै हौं करौं प्रण आज । ध्रुव हतौं निश्चरराज ॥ ५१ ॥
याते सु जाय अकेल । हों करों युद्ध सकेल ॥
हैं भालु कपि बहुवीर । हनुमंत आदिक धीर ॥ ५२ ॥
उत सदल इक दशमाथ । इत सदल इक रघुनाथ ॥
जो लरिय मिलि दुहुँ भाय । तो आज उचित न आय ॥ ५३ ॥
इमि राम दृढ़ प्रण ठान । किय गमन सजि धनुबाण ॥
भट कीशभालु अपार । धाये कुधर तरुधार ॥ ५४ ॥
रामहि निरखि दशभाल । करि वीस लोचन लाल ॥
सन्मुख सु आय उताल । बोलो सकोप कराल ॥ ५५ ॥
हे राजसुत रणधीर । हौ भानुवंश सुवीर ॥
पुनि अस्त्र शस्त्र प्रवीन । सब भाँति हौं लखि लीन ॥ ५६ ॥
पै मोर रावण नाम । जानो भली विधि राम ॥
हौं तुमहिं अब यमलोक । पठवाय होत विशोक ॥ ५७ ॥
याते प्रथम तुम भूर । करि लेहु निज बलपूर ॥
अभिलाष तुव न रहाय । तब लखो मम बल आय ॥ ५८ ॥

सो सुनि कही रघुवीर। हे लंकपति छल वीर ॥
क्यों करहु मिथ्यहि गर्व। है विदित तव बल सर्व ॥ ५९ ॥
जब हरी सीतहि चोर। तब गयो बल किहि खोर ॥
अब करत बात बढ़ाय। निज सुयश निज मुख गाय ॥ ६० ॥
हौं आज दृढ प्रण ठान। नहिं बचहि अब तव प्राण ॥
हो सकल छलबल जौन। दरशाव वेगहि तौन ॥ ६१ ॥
दोहा—राम वचन सुनिकै तबै, हँसिभासी दशमाथ ॥
हौं याही हित ठानिकै, युद्ध करों तुव साथ ॥ ६२ ॥
हों साँचो रावण जु पै, हो साँचे तुव राम ॥
दुहुँ प्रभाव साँचो अबै, लखो परै इहि ठाम ॥ ६३ ॥
कै हौं तुमहिँ सँहारिकै, अबहीं होत विशोक ॥
कै रणमें तनु त्यागि कै, वसों जाय सुरलोक ॥ ६४ ॥
सो०—तब सुनिकै रघुनाथ, भाषी मृदु मुसक्यायकै ॥
तुव छल निश्चरनाथ, हौं जानो सब हीय को ॥ ६५ ॥
याते तुव रुचि जोय, समर मरनकी है सु अब ॥
वेगहि पूरित होय, जो न जाहु रणभूमि तजि ॥ ६६ ॥

तोमर छंद।

सुनि राम बैन मुरारि। करि क्रोध बंक निहारि ॥
करि वेगि धनु शर धारि। धायो प्रचंड प्रचारि ॥ ६७ ॥
किय अमित बाण प्रहार। भंजे सु राजकुमार ॥
तिन खंडि अतिहि उताल। सायक तजे रघुलाल ॥ ६८ ॥
लाघव दशानन वीर। खंडित किये सब तीर ॥
इमि दोउ दुहुँ बलवान। हठि हनत अगणित बान ॥ ६९ ॥
तिहि समय युद्ध निहार। चहुँ होत जैति पुकार ॥
सुरपाल यह चित दीन। हैं राजसुत रथहीन ॥ ७० ॥
तब मातलीहि बुलाय। दीनी उताल रजाय ॥
तुम वेगि मम रथ साज। लै जाहु ढिग रघुराज ॥ ७१ ॥
सुनि सूत सहित उमंग। सजि रथहि हरित तुरंग ॥
बहु शस्त्र विशद विशाल। भेजे प्रभुहि सुरपाल ॥ ७२ ॥

सो सहित स्यंदन लाय । रघुवीरही शिरनाय ॥
करि विविध अस्तुति गूढ । कह होउ प्रभु आरूढ ॥ ७३ ॥
मुनिकै प्रदक्षिण लाय । पुनि रथहि शीश नवाय ॥
बैठे सु दशरथ लाल । युत कवच शस्त्र विशाल ॥ ७४ ॥
तिहि समय व्योम मझार । सुर लखत समर अपार ॥
रामहि रथी अविलोक । भे सकल भक्त विशोक ॥ ७५ ॥
दशवदन हेरि रिसान । शर छाय दशहु दिशान ॥
दिय राम स्यंदन झंप । तिहि समय भो महि कंप ॥ ७६ ॥
तब आग्नि शर रघुवीर । तजि किये भस्म सु तीर ॥
कपि भालु चहुँ दिशि धाय । दिय अपर दल बिचलाय ॥ ७७ ॥
पुनि यातुधान प्रचंड । गहि विविध शस्त्र उदंड ॥
कीशन सु ऋच्छन मार । तरु कुधर तेउ प्रहार ॥ ७८ ॥
भिरि राम रावण वीर । वर्षहिं अपार सु तीर ॥
तिहि समय दुहुँ दल युद्ध । अति होत अनुपम उद्ध ॥ ७९ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

ठोंकि भुज दंड वीर प्रबल प्रचंड भिरे उद्धत विरुद्ध रुद्ध क्रुद्ध दल दंडि दंडि । अट्टत सुभट्ट औ दपट्टत उचट्ट चट्ट भट्टन के ठट्ट कट्ट कट्टत हैं खंडि खंडि । हत्थ लथ्थ हत्थनते मथ्थ गथ्थ मथ्थनते मथ्थत समथ्थ पथ्थलेत रथ छंडि छंडि । रसिकविहारी राम जैति जै उदंड शोर छावै नवखंड नभमंडलमें मंडि मंडि ॥ ८० ॥
टिकत न वीरनके प्राण रण भूमि मध्य क्रुद्ध बुद्ध रुद्ध उद्ध युद्धते गये अघा ॥ इष्ट बल पाय फेरी प्रबल वरिष्ठ भिरे झुंड झुंड रुंड मुंड गिरत दुहूँ जघा ॥ यातुधान कपिन कपिंद गहि यातुधान भंजत भ्रमाय फारि फेकत अनी नघा ॥ चारहू दिशान बान वरषत आन आन रसिकविहारी झरि लाई हैं मनो मघा ॥ ८१ ॥

दंडक ।

दोउ दल उद्ध यौं क्रुद्ध अवरुद्ध ह्वै करहिं बहु युद्ध नहिं शुद्ध तन प्रानकी ॥ दंत कट कटत भट भालु मर्कट विकट कटत फिरि अटत

जै रटत बलवानकी ॥ गजन गज मर्दकै रथन रथ गर्दकै वाजि वाजीन हनि शस्त्र शस्त्रन दलैं ॥ रुंड रुंडन झटकि मुंड मुंडन पटकि झुंड झुंडन झटकि चापि कर पद मलैं ॥ ८२ ॥ रैनिचर चंड शर शक्ति कर खंडते कीश ऋच्छन सु उद्दंड खंडित करैं । उच्छलत पुच्छ गुच्छाहि धरि धरणिमें पटकि तिन पट्ट शिर कट्ट प्राणन हरैं ॥ होत यौं समर थर हरत धर धर धरा रुधिर धारा तबहिं धरणि नहिं मावहीं।शीश कर चरणके ढेर चहुँ फेर ते बहुलरनभूमिमें मेरुसे छावहीं ॥८३॥ खग्गगण मुदित नभ मग्ग ह्वै धायकै मुंड कर पग्गलै सग्ग उडि भग्गहीं ॥ योगिनी वृंद सानंद नच्चैं सुभरिखप्परन रुधिर करि पान अनुरग्गहीं ॥ शोर चहुँ घोर छाई कबंधन धरा छिनहि छिन उठत फिरि गिरत लरि गज्जिकै ॥ प्रबल निश्चरन दल दलत कपि ऋच्छ भट सबल अरु अबल भज्जत समर तज्जिकै ॥ ८४ ॥ यातुधानेश लखि सबल दल विचल निज भालु कपि छलन हित प्रबल माया ठनी ॥ अमित हनुमंत सुग्रीव अंगद लषण प्रगटते आपनी आप वालैं अनी ॥ ऋच्छ वानर भये चकित तब रैनिचर निधन किय तिनहिं अवकाश लहि ता घरी ॥ वीर रघुवीर सो हेरि अति वेगही एकही तीर ते सकल माया हरी ॥ ८५ ॥ फेरि बहु कोपि कै धाय रथ लाय ढिग राम निज चंड कोदंड मंडित लियो ॥ सायकन घाल बलशाल दशभालको सहित धनुबाण तनत्राण खंडित कियो ॥ क्रोध भरि चाप लै आन तिहि तान कै लंकपति अमित शर आतुरी ते हने ॥ सर्व रघुवीर ते तीर निज तीर ते भंजि पुनि तासु तनु तीर वेधे घने ॥ ८६ ॥

हरिगीतिका छंद ।

तब क्रोध भरि दशभाल ठानो अस्त्र युद्ध अपार सो ॥
रघुवीर ते सब भंजि डारे कीन अमित प्रहार जो ॥
पुनि लंकपति शतबाण मारे भो विकल सुर सारथी ॥
कर धार तिहि वेग उठायो रामचंद्र महारथी ॥ ८७ ॥
जो लग उठायो राम सूतहि दशवदन तौलग घने ॥
शर घालि रथको केतु काटो वेगि चहुँ वाजी हने ॥

लखिकै तुरंगहु राजपुत्र सँभारि स्यन्दनमें सजे ॥
ताही समै भुजवीस राघव गात पै बहु शर तजे ॥ ८८ ॥
रघुवीर कछु दुख पाय पुनि ह्वै सजग बाणन खँडिकै ॥
रथ सारथी ध्वज वाजि तासु नशाय डारे खंडिकै ॥
द्रुत आन स्यन्दन बैठि घालो घोर शूल प्रचारि कै ॥
रघुवीर सुरपति शक्ति छोडी भस्म दुहुँ दुहुँ जारिकै ॥ ८९ ॥
पुनि क्रोध कर शरतीस वेधे वीस भुज दशशीशमें ॥
तब भये अंतरधान निश्चर ईसभरि बहु रीसमें ॥
रहि गुप्त घाले बाणवर बहु व्योमतें आवन लगे ॥
ते विविध रूप कराल भालु कपीन चहुँ खावन लगे ॥ ९० ॥
ह्वै बाण शूकर सिंह श्वान शृगाल अहि गज धावहीं ॥
मारत पछारत भखत मर्दत सकल सैन नशावहीं ॥
पुनि वृष्टि कीन अपार सिक्ता उष्ण सब व्याकुल भये ॥
फिर लागि वरषै आगि सब भट भागि प्रभु शरणै गये ॥ ९१ ॥
द्रुत वरुण अस्त्र चलाय राघव सकल छल किय दूरसो ॥
पुनि वीर विद्या आसुरी प्रगटी दशानन भूर जो ॥
बहु भूत प्रेत पिशाच योगिनि खड्ग खप्पर धारिकै ॥
चहुँ ऋच्छ कीशन भक्षिवे हित धावहीं मुख फारिकै ॥ ९२ ॥
तिन देखि वानर ऋच्छ इतर विहाल डारि डारि भाजहीं ॥
हनुमंत आदिक वीर ते बहु मर्दि मर्दि सु गाजहीं ॥
पुनि अपर माया कीन दशमुख पवनसुत प्रगटे घने ॥
ते धारि तरु गिरि उपल रामहिं धाय चहुँ दिशि ते हने ॥ ९३ ॥
रणधीर श्रीरघुवीर पावक तीर संपदि चलायकै ॥
माया हरी सब निरखि दौरे सुभट हिय हरषायकै ॥
तरु शैल हानि हानि निश्चरन पुनि भालु कपि गंजन लगे ॥
दंतन नखन तल मुष्टि लातन कोपकरि भंजन लगे ॥ ९४ ॥
भट विकट मर्कट ऋच्छ युद्धत क्रुद्धह्वै उद्धत महा ॥
अब करहु निश्चर हीन लंक निशंक यों सबही कहा ॥

तिय पुरुष बालक तरुण वृद्ध सु यातुधान न छंडिये ॥
जे नगर अरु रण मध्य होवैं वेगि ते सब खंडिये ॥ ९५ ॥
ताछिन दशानन आय प्रगटो रूप कोटिन धारिकै ॥
चहुँधाय लच्छन कीश ऋच्छन करत भच्छन मारिकै ॥
इक एक वानर भालुपै इक एक रावण धावही ॥
धर मार फार पछार यौं बहु घोर शोर मचावही ॥ ९६ ॥
तिहि समय राम सुकंठ हनुमत अंगदादिक वीरजे ॥
करि कोप बहु दशमुखनको भंजैं निशंक सुधीरते ॥
सुरवृंद निरखि अनेक रावण विकल ह्वै भागन लगे ॥
लै लै विमानन हाय करि करि व्योमते भागन लगे ॥ ९७ ॥
तब सुरन व्याकुल जानि राघव प्रबल अस्त्र प्रहारिकै ॥
इक बाणते दशकंठके सब रूप लोपे जारिकै ॥
सो हेरि बहुरे देव प्रमुदित छाय नभ जै जै करी ॥
अवलोकि धायो व्योम दिशि बहु कहत वाणी रिसभरी ॥९८॥
रे खलहु तुम कहँ एकही मैं कोटि सम आयो अबै ॥
पुनि करत हाहाकार नभते देवगण भागे सबै ॥
तब कूदिकै कपि वीर अंगद ताहि पदगहि जोरते ॥
झकझोरि वेगहि भुमिडारो खैंचिकै नभ ओरते ॥ ९९ ॥
पुनि उछलि अंगद वेगि रघुवर पास पहुँचे जायकै ॥
दशकंठ उठि रथ बैठि धायो कुपित चाप चढायकै ॥
हनिबाण अगणित रामको तनु त्रान खंडित कीनसो ॥
तब वीर रघुवर शरनते किय तासु दशशिर छीनसो ॥ १०० ॥
शिर गिरत दशहू और नूतन फेरि प्रगटे तैसही ॥
सोऊ विभंजे राम सबही बहुरि उपजे वैसही ॥
इमि रामशर शतवार खंडे माथ दश दशमाथके ॥
ते कटत होत नवीन लखि हिय आचरज रघुनाथके ॥ १०१ ॥

प्र० वा० ॥ युं० कां० स० १०९ ॥ श्लोक० ॥

रावणस्य शिरोच्छिंदच्छ्रीमज्ज्वलितकुंडलम् ॥ तच्छिरः पतितं भूमौ दृष्टं लोकैस्त्रिभिस्तदा ॥ ११ ॥ तस्यैव सदृशं चान्यद्रावण-

स्योत्थितं शिरः ॥ तत्क्षिप्रं क्षिप्रहस्तेन रामेण क्षिप्रकारिणा ॥ २ ॥
द्वितीयं रावण शिरश्छिन्नं संयति सायकैः ॥ छिन्नमात्रं च तच्छीर्षं
पुनरेव प्रदृश्यते ॥ ३ ॥ तदप्यशनिसंकाशैश्छिन्नं रामस्य सायकैः ॥
एवमेवं शतं छिन्नं शिरसां तुल्यवर्चसाम् ॥ ४ ॥ इत्यादि ॥

पद्धरीछंद ।

शिर कटत फेरि प्रगटात और। भो मुदित लंकपति निरखि डौर ॥
हौं अमर सत्य दृढ ठान लीन। यों गुणि निशंक पुनि युद्ध कीन१०२
सुर कीश भालु लखि सकलत्रस्त। सुनि भई जानकी शोकग्रस्त ॥
निश्चर समस्त आनंद छाय। रण रुपे बोलि जै लंकराय ॥ १०३॥
रावण सकोप शर तान तान। रामहिं प्रहार कर आन आन ॥
रघुवीर सर्व करि खंड खंड। घालत अपार इषु चंड चंड ॥१०४॥
प्रभु निकट विभीषण शस्त्र धार ॥ रथ संग धाय निश्चरन मार ॥
लखि कुपित होय दशमुख उताल। गरु भूर शक्ति घाली कराल१०५
लखि वेगि राम ह्वै अग्र आप। झेलीस्वहीय सो शक्ति दाप ॥
निज गुणि विभीषणै अभय कीन। दृढ शरणपाल प्रण राखि लीन१०६
सो शक्ति हीय बेधी कराल। मुर्च्छित कछूक भे नृपति लाल ॥
लै गदा विभीषण कोप धार। तुरधाय भ्रांत उर किय प्रहार॥१०७॥
दशकंठ व्यथित गिरि धरणि माहिं।पुनि उठिपछारि तिहि पकरि बाहिं॥
सो सँभरि फेरि भिरि कीन युद्ध। दुहुँ क्रुद्ध वृद्ध अवरुद्ध उद्ध १०८॥
भे कछुक विभीषण श्रमित अंग। हनुमंत वीर हेरो सु ढंग ॥
घालो प्रचंड गिरि धाय गाजि। डारे नशाय रथ सूत वाजि ॥१०९॥
दशमुखहि कीन पुनि पद प्रहार। सो त्यागि बन्धु कहँ रोषधार ॥
धायो सुकीश परजंग जोम। हनुमान वेगि कूदे सु व्योम ॥११०॥
उच्छलत लंकपति पकरि पुच्छ। भाषी सु खैंचि कहँ जाहि तुच्छ ॥
वरवीरकीश भुजवीश युक्त। गो गगन सो न लंगूर मुक्त ॥१११॥
दुहुँ भिरे वीरनभ अंतरिक्ष। हैं सबल सर्व रण रीति शिक्ष ॥
करि कोप एक एकहि प्रहार। नाहिं गिरत कोउ तन बल अपार११२॥

तब सुमिरि राम कपि कीन घात। भो विकल भूमि दशवदन पात ॥
तहँ आय कीश पुनि किय प्रहार। सो सँभारि फेरि हनुमतहि मार ११३
बजरंग कोपि तिहि मुष्टघाल। भो लगत लंकपति कछु विहाल ॥
तिहि समय कूदि कपि कुधरधार। चहुँ धाय धाय निश्चरन मार ११४
दशमौलि सजग ह्वै आनरथ्थ। द्रुत ह्वै अरूढ़ धनुबाण हथ्थ ॥
धायो कपीन भंजत उताल। तिहि समय क्रोध भरिऋच्छपाल ११५
तिहि लात घात कीनो प्रचंड। मुरझाय गिरो भो चापखंड ॥
दशमुखहि सारथी बिकल हेरि। गहि भुज बिठाय रथ मध्य फेरि ११६
घटिका सु एकमधि चेत लाय। ह्वै सजग फेर लंकाधिराय ॥
करि घोर शोर भरि क्रोध वीर। छाँडे प्रचंड बहु विशिख तीर ११७॥
रघुराज पत्र पत्रीन छाय। ध्वज वाजि रंचहू नहिं लखाय ॥
दशमथ्थ रथ्थहू बाणजाल ॥ चहुँ झंपि दीन दशरथ्थ लाल॥११८॥
इमि द्वंद्व युद्ध पुनि होत भूरि। दशहूँ दिशान गे बाण पूरि ॥
तब रामचंद्र दश शर कराल। वेधे उताल दशभाल भाल ॥ ११९ ॥
तिन लगत भयो विह्वल अपार। सारथि प्रवीन सो गतिनिहार ॥
रथ वाहि वेगि लै गो सु दूरि। रावण अचेत जल नैन पूरि॥१२०॥
द्वै दंड मध्य आयो जु होस। लखि सारथीहि भाषो सरोस ॥
रणविमुख कीन रे मूढ मोहिं। सेवक विचारि नहिं वधहुँ तोहिं१२१॥
रथवाह वेगि पुनि राम पास। हौं करौं आज रिपुकर विनाश ॥
तब कही सारथी जोरि हाथ। अपराध क्षमिय प्रभु लंकनाथ १२२॥
है सूत कर्म यह धर्म तात। महि समय लखै जय अजय घात ॥
लखि प्रभुहि विकल बहु समर माहिं। लायो उताल स्यंदनहि वाहिं१२३
सुनि सूत बैन दशमुख सराहि। दीनो जु हस्त भूषण उमाहि ॥
धारण सुकीन लै नाय मथ्थ। पुनि वाहि वेगि लायो सु रथ्थ १२४॥
दशकंध बेगि वर धनुषधार। रघुवरहि कीन बहु शर प्रहार ॥
ते सकल राम तिहि दीन काटि। वेधे अनेक निज बाण डाटि१२५ ॥
पुनि शक्ति शूल शर खड्ग चंड। गहि गदा चक्र तोमर उदंड ॥
इमि अपर शस्त्र अरु अस्त्र भूरि। दशमौलि रामपर दीन पूरि १२६॥

ते सकल रामभंजन करात। पुनि विशिष बाण तिहि हनत जात ॥
त्यों हीं बहोरि लंकेश वीर। तिन खंडि फेरि वेधत सु तीर ॥१२७॥
तिहि समय राम रावण सु वीर ॥ छिन हो अधीर छिन धरत धीर ॥
कीनो अभूत दुहुँ समर घोर। छायो अपार तिहिं लोक शोर १२८ ॥

ह० गी० छंद।

इमि राम रावण युद्ध देव विलोकिकै सब चकित भे ॥
कपि भालु निश्चर निकर दुहुँ बल हेरिकै अति चकित भे ॥
सुर कहत अबलग याहि राम समान नहिं भेटो वियो ॥
दशमुख बहत्तर चौयुगी भरि राज बहु संयुग कियो ॥ १२९ ॥

प्र० ॥ सुंदर रामायणे लंकाकांडे ॥ सर्ग ५१ ॥ श्लोक।

राज्यं चकार लंकेशो द्विसप्ततिचतुर्युगम् ॥
त्रिषुलोकेषु नप्राप्तस्तंरामसदृशो बली ॥ ६ ॥

ह० गी० छंद।

तिहि समय वेगि अगस्त्यऋषि श्रीराम संनिधि आयकै ॥
आदित्यहृदय अनूप किय उपदेश अतिहि दुरायकै ॥
दै सविधि उत्तम कवच मंत्र उताल मुनि पुनि जात भे ॥
रघुवीर लहि जय अस्त्र अतुल अमोघ अति हरषात भे ॥१३०॥
ताछिन विभीषण राजसुत सों विलखि यौं वाणी कही ॥
दशकंठ नाभी मध्य एक पियूष कुंड विराजही ॥
जौलों न प्रभु तिहि सोषि हो तौलों न यह खल नाशि है ॥
बरिवंड चंड सुरारि छिन छिन भालु कीशन त्रासि है ॥१३१॥
सुनिकै विभीषण बैन शर इकतीस श्रीरघुवीर लै ॥
आदित्यहृदय उचारि विधि युत लंक पतिहि सुधीर दै ॥
ते कालदंड समान बाण प्रचंड धनुपर तानिकै ॥
कीने सपदि संधान प्रभु बलवान दृढ प्रण ठानकै ॥ १३२ ॥
तिहि समय झंपी सकल दिशि कंपी अपार वसुंधरा ॥
चहुँ उठी पावक दाह रावण गात ह्वै बहु थरहरा ॥
श्रीराम छोडे चंड सायक चलत अमित प्रकाश भो ॥
अति घोर शोर उदंड महि पाताल मध्य अकाश भो ॥ १३३ ॥

ते प्रबल शर इकतीस चलि दशशीश के दशशीशमें ॥
इक नाभि शर शोषो अपर लागे सपदि भुज वीसमें ॥
शिर बाहु लै नाराच गवने रुंड रावण कंपिकै ॥
द्रुत गिरत भो रणभूमि मध्य सु भूरि दुहुँ दल चंपिकै ॥ १३४ ॥
बिन मुंड रुंड बहोरि उठि बहु गार्जि धायो मंडिकै ॥
रघुवीर तिहि युग खंड करि महि डारि दीनो खंडिकै ॥
भुव गिरतही अति शोर किय हा राम हाहा जानकी ॥
यौं कहत निकसो जीव पूजी आश सब बलवानकी ॥ १३५ ॥
तिहि समय पावकझार रावण अंग ते अनुपम कढी ॥
बहु तेज विशद प्रकाश अद्भुत तासु द्रुत ज्वाला बढी ॥
सो आय अतिहि उताल कीन प्रवेश मुख श्रीरामके ॥
सब निरखि चकृत कहत भेद अलक्ष प्रभु गुण ग्रामके ॥१३६॥
तिहि समय रावणवध विलोकि समस्त सुर आनँद लहे ॥
जै राम जै रणधीर जै रघुवीर जै जै सब कहे ॥
बहु भाँति अस्तुति करहिं प्रभुपर सुमन वर वरसावहीं ।
दुंदुभि बजाय बजाय श्रीरघुनाथको यश गावहीं ॥ १३७ ॥
कपि भालु कूदैं जैति जै करि शोर चहुँ विलकारहीं ।
पुनि धाय धाय अनंद भरि भरि राम वदन निहारहीं ॥
तिहि समय लछमन दौरि भ्रातहि अंकभरि हुलसायकै ।
नखशिख विलोकैं प्रेमयुत वर विजय मोद अघायकै ॥ १३८ ॥
सुग्रीव अंगद ऋच्छपति लंकेश हनुमतनील जे ।
इन आदि अपर अपार वानर भालु हैं बलशील ते ॥
सबको महाआनंद कविपै कौन विधि कहिजाय जो ।
ज्यों होत प्रमुदित भाषि सकहि न मूक मिष्टहि खाय सो १३९॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सरसिज सुभट समूह वर फूल चारु पूरण प्रतापसो प्रकाश अति ही जयो ॥ निशिचर सैन रैन तम दशमाथ भारी विनाशि समस्त शोक लोक तिहुँ ते गयो ॥ रसिकविहारी देवलोक वृंद भे अनंद दशहू

दिगंतमें अनंत जैति जै छयो ॥ कौशलाधिराज रघुराज उदयाचलतें तेज पुंज विजय दिवाकर उदै भयो ॥ १४० ॥

हरिगी० छंद ।

इत मोद इमि उत लंक निश्चर निश्चरी अकुलावहीं ।
दशमाथके गुण गाथ कहि धुनि माथ बहु विलपावहीं ॥
मंदोदरी आदिक अनेक सुतीय विह्वल धायकै ।
बेहाल आय उताल रोवत गिरीं पतिपद धायकै ॥ १४१ ॥
दोहा—निरखि विभीषण भ्रात गति, कियो विलाप अपार ॥
तिनहि धीर दीनी विविध, दशरथ राजकुमार ॥ १४२ ॥
पुनि भाषी लंकेश प्रति, रघुवर दीनदयाल ॥
मृतककर्म दशकंठ को, सविधि करौ ततकाल ॥ १४३ ॥
तबहि विभीषण जोरि कर, कही छुवौं नहिं याहि ॥
तव निंदक पुनि शत्रु मम, अरु अधर्म रत आहि १४४ ॥
सुनि बोले रघुवंश मणि, यह मम निंदक नाहिं ॥
अरु अधर्मरतहू न है, हौं जानौं मनमाहिं ॥ १४५ ॥
वैर जियतलों राखिये, मरण भये नहिं मान ॥
अंत समै रिपु मित्र सम, जानै वही सुजान ॥ १४६ ॥
याते सविधि निशंक सब, करौ भ्रात कृत जाय ॥
जाते तव रावण सहित, दोनों लोक बनाय ॥ १४७ ॥
राम रजायसु शीश धरि, सकल तियन समुझाय ॥
मृतक कर्म दशकंठके, किये विभीषण जाय ॥ १४८ ॥
सविधि कृत्य करि तियनको, लंका मध्य पठाय ॥
वेगि विभीषण राम ढिग, आय खरे सचुपाय ॥ १४९ ॥
तब रघुवर शर तून धनु, कवच कृपाण उतार ॥
रथते आये भूमि पर, सप्तम दिवस मझार ॥ १५० ॥
चले देव निज निज भवन, राम रजायसु पाय ॥
शीश नाय स्यंदन सहित, गयो सूत हरषाय ॥ १५१ ॥
हरषि राम सुग्रीवसे, कहे बैन भर अंक ॥

तव सहाय बलते सखा, पाई विजय उतंक ॥ १५२ ॥
यों कहि पुनि अवधेश सुत, सकल भालु कपि मान ॥
यथाउचित सादर निरखि, किय बहु विशद बखान ॥१५३॥
निरखि विभीषण ओर पुनि, लषणहि कही बुझाय ॥
लंकापति अभिषेक द्रुत, करो सदल तुम जाय ॥ १५४ ॥
तव सुकंठ हनुमंत अरु, अपर भूरि बलवंत ॥
सहित विभीषण लंकमें, आये लषण तुरंत ॥ १५५ ॥
बोलि सचिव द्विज ज्ञाति सब, सविधि साज सजवाय ॥
किय अभिषेक विभीषणै, लंक निसान बजाय ॥ १५६ ॥
श्वेत छत्र चामर विजन, साज समाज समेत ॥
चले विभीषण लषण सँग, रामदरशके हेत ॥ १५७ ॥
आय वेगि प्रभुपद गहे, उठि रघुवर उर लाय ॥
प्रीति रीति नृप नीति युत, दीन मान हुलसाय ॥ १५८ ॥
दास भाव कर जोरि कै, ठाढे निश्चरनाह ॥
निरखि राम उठि फेरि तिन, बैठारे गहि बाँह ॥ १५९ ॥
रीत प्रीत नृप नीति मय, कहे राम बहु बैन ॥
सो सुनि निश्चर भालु कपि, सब हिय छायो चैन ॥ १६०॥
पुनि तहँते उठि सैन युत, आनंदित श्रीराम ॥
चलि सुवेल गिरि पै सुथल, आय कियो बिश्राम ॥ १६१॥
रसिकबिहारी आजते, भयो परम आनंद ॥
सब सुर मुनि भाषैं,मुदित, जैजै दशरथ नंद ॥ १६२ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० युद्ध० रावणयुद्धवध
वर्णनो नाम विंशोविभागः ॥ २० ॥

---

दोहा–राम लषण लंकेश अरु, अपर समाज अपार ॥
शोभित शैल सुवेल पर, विजै मोद उर धार ॥ १ ॥
तब हनुमत दिशि हेरिकै, बोले रघुकुल चंद ॥
हे कपि रिपु दल जीति अब, भये सकल सानंद ॥ २ ॥

महाराज लंकेश की, लै रजाय तुम जाय ॥
सियहि सुनावो जै कुशल, कहो तासु पुनि आय ॥ ३ ॥

म० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ११४ ॥ श्लो० ।

ततः शैलोपमं वीरं प्रांजलिं प्रणतं स्थितम् । उवाचेदं वचो रामो हनुमंतं प्लवंगमम् ॥१॥ अनुज्ञाप्य महाराजमिमं सौम्य विभीषणम् ॥ प्रविश्य नगरीं लंकां कौशलं ब्रूहि मैथिलीम् ॥ २ ॥

दोहा–सुनि हनुमत लंकेश प्रति, बूझि गये द्रुत धाय ॥
शीश नाय सीतहि कही, विजै कुशल हुलसाय ॥ ४ ॥
जनकसुताके हिय भयो, ताछिन इमि अहलाद ॥
मुदित मयूरी होत जिमि, सुनि पावस घननाद ॥ ५ ॥
कही सीय संदेश सम, कछु न तिहूँ पुर माहिं ॥
कहा देउँ कपि तोहिं अब, कबहुँ उऋण मैं नाहिं ॥ ६ ॥
कही कीश कर जोर तब, हौं पायो सब मात ॥
महाराज विजयी भये, आप लखी कुशलात ॥ ७ ॥
पै जननी इक मोहिँ ये, रुचि सो कीजै पूरि ॥
हो रजाय तौ निश्चरिन, हनौं कुटिल ये भूरि ॥ ८ ॥
सुनि सिय कोमल हिय कही, करौ पुत्र जनि रोष ॥
पराधीन सिगरी कहा, इन दीननको दोष ॥ ९ ॥
भये मौन हनुमंत पै, तिनै विलोकत वंक ॥
सिय पाछे बैठीं सबै, मिलि इक ठौर सशंक ॥ १० ॥
कही तबै कर जोरि कपि, करिय मातु उपदेश ॥
वेगि जाय भाषौं सकल, प्रभुसों तव संदेश ॥ ११ ॥
सुनि सिय बोली पवनसुत, अंतर्यामी नाथ ॥
सब जानत हैं हीय की, कहा कहौं बहु गाथ ॥ १२ ॥
मो दिशिते पद परसिकै, विनय करीजो तात ॥
दरश बिना इक एक छिन, कोटि कल्प सम जात ॥ १३ ॥
सुनि कपि गमनो नाय शिर, आयो रघुवर पास ॥
सिय दिशि ते प्रभुचरण गहि, कहो सकल स हुलास ॥ १४ ॥

सुनिकै प्रिया सँदेश प्रिय, हिलकि हृदय भरि लाल ॥
दीह श्वास दृग जल उमड़ि, ह्वै सनेह बेहाल ॥ १५ ॥
महि विलोकि लंकेश सों, कहे सु मंजुल बैन ॥
सिय अन्हवाय शृँगारि कै, द्रुत आनौ मति ऐन ॥ १६ ॥
पाय रजाय सु रामकी, लंकापति मतिधाम ॥
जाय सीय ढिग मातु गुनि, किय कर जोरि प्रणाम ॥१७॥
पुनि रघुवर आज्ञा सकल, वरणी शीश नवाय ॥
सुनि लंकेशहि सिय कही, अतिअनंद उमगाय ॥ १८ ॥
सुन मो उर अभिलाष यह, प्रभुपद प्रथम विलोक ॥
पुनि मंजन शृंगार हौं, करौं जु होय विशोक ॥ १९ ॥
सुनत बिभीषण पुनि कही, जननी हो सर्वज्ञ ॥
तव सन्मुख मैं कह कहौं, अति अयान अल्पज्ञ ॥ २० ॥
पै कछु बिनवौं दीन ह्वै, क्षमियो मम अपराध ॥
जानतहौं हे स्वामिनी, है हिय कृपा अगाध ॥ २१ ॥
नेम धर्म जप योग तप, ज्ञान ध्यान अरु दान ॥
पति आज्ञा पालन सरिस, सुखद सुकृत नहिं आन ॥२२॥
याते मो विनती यही, जो प्रभु कही पठाय ॥
सोई करिवो उचितहै, पुनि जिमि होय रजाय ॥ २३ ॥
इमि कहि रुचि लखि निश्चरिन, दी लंकेश रजाय ॥
विशद विभूषण वसन ते, लाईं साज सजाय ॥ २४ ॥
तब सिय पिय रुचि गुणि कियो, मंजन सकल शृँगार ॥
पुनि बैठी शिबिका सुभग, पतिपद हियबिच धार ॥ २५॥
विशद निश्चरी यूथ बहु, सहित साज भट भीर ॥
राम दरश हित सिय चलीं, संग विभीषण धीर ॥ २६ ॥
सिय आगम सुनि दरश हित, वानर भालु अपार ॥
अपर निशाचर निश्चरी, धाये जैति उचार ॥ २७ ॥
वेतपाणि रक्षक तिनै, वारन करत दुराय ॥
शिबिका सह आवरण वर, प्रभु ढिग चले लिवाय ॥ २८ ॥

ताछिन भो बहु शोर चहुँ, दूरहि ते लखि राम ॥
कह लंकेशहि बोलि द्रुत, करि दृग दोउ ललाम ॥ २९ ॥
कीश भालु मेरे सकल, प्राणहु ते प्रिय भूर ॥
पुनि हैं मम सुत बन्धु सम, तिनहिं निवारत दूर ॥ ३० ॥
कहा हेत आवर्णको, कह शिबिकाको काज ॥
मम समीप आगमनमें, काह मैथिलिहि लाज ॥ ३१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश प्रति, भाषी राम सप्रीत ॥
समय पाय सोहै सबै, भीति रीति नृप नीत ॥ ३२ ॥
बहुरि होत याते कहो, जो नहिं निर्मल जीय ॥
शुभ अरु अशुभ समस्त कृत, निभत आपने हीय ॥ ३३ ॥

सवैया-कवित्त ।

हो न कछू बहु वस्त्र न शस्त्रसे धाम न कोटकी ओट लियेते ॥
माषनते कटु भाषनते जन लाषनते न कपाट दियेते ॥
हैं रसिकेश घने नृप साज सु और अनेक प्रबंध कियेते ॥
नाहिं रहै तियकी परदा जु न राखहि सो निज आप हियेते ॥ ३४ ॥
दोहा-सो विचार यह हीयको, पै जगरीति जु होय ॥
यदपि उचित सब भांति है, तदपि समय लखि सोय ॥ ३५ ॥

सवैया-कवित्त ।

भूरि विपत्ति परै जबहीं अरु पीड़ित होय महारुज माहीं ॥
औ मख व्याह स्वयंवर युद्ध गुरू नृप मातु पितापति पाहीं ॥
ऐसे समय शुभ रीति समेत लखै तिय काहुकि कोउ कहाहीं ॥
नारि विलोकनको रसिकेश कहौं दृढ रंचहु दूषण नाहीं ॥ ३६ ॥
दोहा-सो सीता या छिन दुखी, तिनहिं लखे कह रोष ॥
पुनि मोढिग कोऊ कबौं, दरश लहै निरदोष ॥ ३७ ॥

प्र० वा० ॥ यु० कां० ॥ स० श्लोक ११६ ॥

न गृहाणि न वस्त्राणि न प्राकारास्तिरस्क्रियाः ॥ नेदृशा राजसत्कारा वृत्तमावरणं स्त्रियः ॥ ३ ॥ व्यसनेषु न कृच्छ्रेषु न युद्धे न

स्वयंवरे ॥ न क्रतौ न विवाहेषु दर्शनं दूष्यते स्त्रियः ॥ ४ ॥ सैषा विपद्गता चैव कृच्छ्रेण च समन्विता ॥ दर्शनेनास्तिदोषोऽस्या मत्समीपे विशेषतः ॥ ५ ॥

दोहा—याते अबहीं सीयको, शिबिकाते उतराय ॥
वेगि पियादे लावहू, लखैं सबै शुचि भाय ॥ ३८ ॥
सुनि लंकापति मौन ह्वै, सकुचि प्रभुहिं शिरनाय ॥
तिमि लाये सीतहि यथा, रघुवर दई रजाय ॥ ३९ ॥
आय सियापति चरण गहि, लज्जित वसन समेटि ॥
बैठीं हेरि सुवाम दिशि; आनंदित भुजभेटि ॥ ४० ॥
झीने पट ह्वै लखति सिय, पियको वदन मयंक ॥
राजकिशोर विलोकहीं, सकुचि बिलोकन बंक ॥ ४१ ॥
ह्वै प्रमुदित लखि सीय सों, वचन कहे रघुराज ॥
राजसुता मम सफल भो, सकल परिश्रम आज ॥ [illegible] ॥
यों कहि राम सुनीतिवर, अंतर नेह अपार ॥
प्रगट वचन कटु जानकिहि, कहे लोक अनुसार ॥ ४३ ॥
सुनहु मैथिली तुमहि लखि, मों हिय उपज कलेश ॥
कछु न काज मम निकट अब, जाहु रुचै जिहि देश॥४४॥
दशमुख सबल महीप पुनि, युत ऐश्वर्य अकर्म ॥
युवा सुन्दरी तिहि सदन, रहो न ह्वैहै धर्म ॥ ४५ ॥
याते तुव दे वर तिहूं, पुनि सुकंठ लंकेश ॥
अथवा और जु रोचहीं, तिहि मिलि रहो हमेश ॥ ४६ ॥

म० ॥ वा० ॥ यु० कांडे । सर्ग ११७ ॥ श्लोक ।

तां तु पार्श्वस्थितां प्रह्वां रामः सम्प्रेक्ष्य मैथिलीम् ॥ हृदयान्तर्गतं भावं व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥६॥ प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता दीपो नेत्रातुरस्येव प्रतिकूलासि मे दृढा ॥ ७॥ तद्गच्छत्वनुजानेद्य यथेच्छं जनकात्मजे॥एता दशादिशो भद्रे कार्यमस्ति न मे त्वया॥८॥ तदद्य व्याहृतं भद्रे मयैतत्कृतबुद्धिना ॥ लक्ष्मणं वाथ भरते कुरु बुद्धिं यथासुखम॥९॥शत्रुघ्ने वाथ सुग्रीवे राक्षसे वा विभीषणे ॥ निवेशय मनः

सीते यथा वा सुखमात्मनः ॥१०॥ न हि त्वां रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम्॥मर्षयत्यचिरं सीते स्वगृहे पर्यवस्थिताम्॥११॥इत्यादि ॥

दोहा–सुनि सीतापति वचन कटु, लागी करन विलाप ॥
लज्जित बोली मंद स्वर, बढो हृदय संताप ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

ये हो प्रभु इतर तियान सम जान मोहिं दोष अनुमान कटु बैन इमि बागौना ॥ रसिकविहारी तुव नारी पति धर्मचारी काहूके सिखाये धनुधारी नेक लागौना ॥ विवश परी हौं घरी युगसी भरी है लाल हृदय जुडानो आज फेरी दुख दागौना ॥ हाय श्यामसुंदर सुजान सरवज्ञनाथ करुणा अगाध अपराध बिन त्यागौना ॥ ४८॥

चौ०यौं कहिसिय पियरुख अनुमानी ❀ बोली विलखि लषणसों वानी
राजपुत्र द्रुत सर रचि देहू ❀ अब नहिं मैं राखों यह देहू ४९
लछमण रामहि लखि रुख जानी ❀ विरचो सर वेगे निज पानी ॥
पावक ज्वलित देखिकै सीता ❀ उठिपियपदगहिकहीअभीता ५०

दोहा–जो अनन्य मन वच करम, हौं सेये श्रीराम ॥
तौ रक्षो मुहिं अनल तुम, व्यापक हो सब ठाम ॥ ५१ ॥

चौ०यौं कहि सर प्रवेश सिय कीना ❀ निजपति चरण चित्त दृढदीना
ताछिन भयो शोर बहु घोरा ❀ हाहाकार करत चहुँ ओरा ५२॥
सकल सुरासुर करत पुकारा ❀ है अदोष सीतावर दारा ॥
ताछिन शिव ब्रह्मादिक आई ❀ रामहि बहु विधि विनय सुनाई ५३॥
तब पावक सुदिव्य तनु कीने ❀ सीतहि मुदित अंक निजलीने ॥
सरते प्रगटि राम ढिग आई ❀ कही उच्च स्वर सबहि सुनाई५४॥
परम शुद्ध यह सीता देवी ❀ सदा राम पतिपद दृढ सेवी ॥
यौं कहि राघव ढिग बैठारी ❀ सब हर्षे जै जैति उचारी ॥ ५५ ॥

दोहा–सीताराम चरित्र यह, भयो काहको जान ॥
दंडकवन उत लंक इत, गुप्त प्रगट गतिमान ॥ ५६ ॥

चौ०ताछिन भूपति बैठि विमाना ❀ आये देखि हृदय हुलसाना ॥
पितहि विलोकि वेगि उठि रामा ❀ सिया बंधु युत कीन प्रणामा॥५७॥

महाराज तिहुँ अंक लगाई ❀ विषम विरहकी ताप सिराई ॥
बहुरि परस्पर प्रेम अघाई ❀ गये धाम वर दशरथ राई ॥५८॥
ताछिन देवराज हुलसाई ❀ कही राम कह होत रजाई ॥
तब बोले रघुवर हुलसाई ❀ मृतक जियैं मम भट समुदाई ५९
अरु जहँ बसैं ऋच्छ कपि भूरी ❀ रहै अशन जल तहँ नित पूरी॥
ये द्वै वर सुरनायक दीजे ❀ सकल मनोरथ पूरण कीजे६०॥
सुनि कह एवमस्तु सुरराजा ❀ जिये सकल कपि भालु समाजा॥
जल फल फूल पत्र तरुछाये ❀ निरखि राम आनंद अघाये६१

दोहा—बहुरि जोरि कर विनय युत, सुरन बिदा किय राम ॥
ते सबही शिरनायकै, गमने निज निज धाम ॥ ६२ ॥
जनककिशोरी राजसुत, दोऊ दुहूँ निहार ॥
प्रगट सकुच जन मध्य पै, अंतर प्रेम अपार ॥ ६३ ॥
लषण कीशपति लंकपति, हनुमानादिकवीर ॥
रसिकविहारी मुदित सब, निरखि सिया रघुवीर ॥ ६४ ॥
कहत सबै जै राम सिय, जैति लषण कपिराज ॥
जै हनुमंत सुवीर वर, जै जै जै सुरराज ॥ ६५ ॥

इति श्रीरा० र० यु० विधाने श्रीसीताराम मिलन
वर्णनो नामएकविंशोविभागः ॥ २१ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे युद्धचरित्र
वर्णनो नाम षष्ठोविधानः ॥ ६ ॥

---

दोहा—श्रीसीता रघुवर लषण, अपर समाज अपार ॥
शोभित शैल सुवेल पर, विजय मोद उरधार ॥ १ ॥
इहि विधि बीते द्वै दिवस, रावणवध उपरंत ॥
राम लषण सीता निरखि, सबहि अनंद अनंत ॥ २ ॥
तब लंकापति रामसों, कहे बैन कर जोरि ॥
तजिय सहानुज मुनि वसन, है प्रभु यह रुचि मोरि ॥ ३ ॥
अरु धन भूषण वसन गृह, देश ग्राम वर नाम ॥
कपि ऋच्छनको दीजिये, पूरित लंक ललाम ॥ ४ ॥

सुनि बोले प्रभु हे सखा, तुमते बिलग न नेक ॥
भरत सहित तनु साजहूँ, सो राखो मम टेक ॥ ५ ॥
अरु ये प्यारे प्राण सम, हैं कपि ऋच्छ अपार ॥
सबहीको सब भाँति ते, करौ उचित सत्कार ॥ ६ ॥
बहुरि चाहिये जतन वह, द्रुत हम करहिँ पयान ॥
नतरु अवधि बीते भरत, नहिं राखैं निज प्रान ॥ ७ ॥
सुनि भाषी लंकेश तब, पुष्पकयान विशाल ॥
तामधि प्रभु पधराय हौं, चलिहौं अवध उताल ॥ ८ ॥
यौं कहिकै लंकेश द्रुत, जाय सु लंक मझार ॥
धारे पुष्पकयान मधि, भूषण वसन अपार ॥ ९ ॥

दोवई छंद ।

लै पुष्पक वर नभ मंडल ह्वै वेगि विभीषण आये ॥
अंतरिच्छ ते अमित अनूपम भूषण वसन लुटाये ॥
कीश ऋच्छ सब राम रजायसु पाय मनुज तनु धारे ॥
सजि सजि अंग उमंग रंगते प्रभुहि जुहारत सारे ॥ १० ॥
पुनि पुष्पकविमान लंकापति वेगि राम ढिग लाये ॥
तामधि लषण सीय युत रघुवर बैठे लखि हुलसाये ॥
तब सबही सनमानि यथोचित बोले वच अभिरामा ॥
सकल भालु कपि प्राणपियारे जाहु सु निज निज ठामा ॥ ११ ॥
ऋच्छराज कपिराज लंकपति तिहूँ सखा मम प्यारे ॥
वसिहौ रैनि दिवस हिय अंतर ह्वैहो छिनहु न न्यारे ॥
अब सब निज निज धाम सिधारो करौ राज निरशंका ॥
आवत जात अवध मधि रहियो सहित वीर वर बंका ॥ १२ ॥
सुनि प्रभु बैन ऋच्छ कपि सिगरे तिहुँ नृप युत हनुमंता ॥
गदगद कंठ अवध दरशनहित कीनी विनय अनंता ॥
तब रघुवीर धीर दै वनचर विपुल बिदा करि दीने ॥
यूथपमुख्य शोधि तिहुँ भूपति सह सेवक सँग लीने ॥ १३ ॥

पुष्पकयान प्रभाव अनूपम जेते होयँ सवारा ॥
यथायोग सबहेत सुखद वर तितो रहै विस्तारा ॥
ता माधि कोटिन कीश भालु युत सिया लषण रघुलाला ॥
लंक ऋच्छ कपिपति केसरि सुत बैठे सदल उताला ॥ १४ ॥
ताछिन पुष्पक इच्छा चारी उत्तर दिशाहि सिधायो ॥
सियहि राम सब ठाम दिखाये सागर दरश करायो ॥
तब लखि सेतु लषण इमि भाषी जो यह सदा रहाई ॥
तो पयोधि अरु लंक दुहूँ की ह्वै है अति लघुताई ॥ १५ ॥
सुनि रघुवीर रजायसु दीनी अनुज वेगि सजि तीरा ॥
कीनो भंग सेतु तहँ जलमें परी भौंर गंभीरा ॥
भो खंडित बहु ठोर जहां जहँ तहँ तहँ भँवर महाना ॥
इक इक भँवर सिंधु जलमाहीं योजन योजन माना ॥ १६ ॥
तिन ऊपर नभ पंचकोशलग पक्षिहु नाहिं उडाई ॥
महावेगते भँवर सिंधुमधि अगम पंथ चहुँघाई ॥
इमि प्रबंध करिके पुनि तहँ ते पुष्पक वेगि चलायो ॥
सेतु भंग मग अगम लंक गुणि लंकपाल सुख पायो ॥ १७ ॥
दोहा—सेतु शिवालय सीयको, दरशायो रघुनंद ॥
तिनकी महिमा अमितविधि, भाषी अतिसानंद ॥ १८ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ कां० ॥ स० १२५ श्लोक।

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः ॥
एतत्तुदृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥ १ ॥
सेतुबंधे इति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम् ॥
एतत्पवित्रं परमं महापातकनाशनम् ॥ २ ॥

दोवई छंद।

सिंधुतीर रामेश्वर दरशन पूजन सबही कीना।
बहुरि उताल चले श्रीरघुवर भरत नेम चित दीना ॥
अतिहि सपदि किष्किन्धा आये नभ मग है दरशायो ॥
जनकसुता रुचि पाय राजसुत तहँ विमान बिलमायो ॥ १९ ॥

तब सिय कही राम सों प्रभु मो हीय एक रुचि भारी ॥
तारा रुमा चलैं मो सँग अरु अपर ऋच्छ कपिनारी ॥
सुनि रघुचंद सुकंठहि भाषी वेगि सकल ते आवैं ॥
जनकनंदिनी प्रीति मानिकै अवधहि साथ सिधावैं ॥ २० ॥
सुनि सुग्रीव ऋच्छ कपि संयुत जाय वेगि सब आनी ॥
नारि रूपते सकल वानरी तिमि अनूप दुहुँरानी ॥
यथायोग सियमिलि बैठारी पुष्पकयान मँझारी ॥
बहु आनंदसहित पुनि अवधहि किय पयान धनुधारी ॥ २१ ॥
भरद्वाज आश्रम मधि आये तिथि पंचमी प्रमाना ॥
ताही दिन मनुवर्ष सु पूंजे भानु अंशते जाना ॥
सहित समाज मुनिहि शिरनाई बूझी गृह कुशलाई ॥
अवध कथा तब सकल सुमंगल ऋषि रघुवरहि सुनाई ॥ २२ ॥
सुनि सब कुशल मुदित मुनितें पुनि वर माँगो रघुराई ॥
नाथ भालु कपिगण हित बहु तरु फूलैं फलैं सदाई ॥
एवमस्तु कहि ऋषिवर तादिन प्रभुहि सु आश्रम राखे ॥
तब हनुमंतहि अवध गमनके अर्थ राम द्रुत भाषे ॥ २३ ॥

प्र० ॥ वा०॥ यु० कां० स० १२६ ॥ श्लोक ॥

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां भरताग्रजः ॥
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववंदे नियतो मुनिम् ॥ ३ ॥

दोवई छंद ।

तब अंजनि सुत मुदित सिधाये धरि द्विज रूप अनूपा ।
प्रभु आगम कहि मिलि निषादसों जाय लखे तुरभूपा ॥
शीश नाय भरतहि इमि भाषी सिय सबंधु प्रभु आये ।
सुनि उठि सपदि कपिहि सो भेंटे अति आनंद अघाये ॥ २४ ॥
कथा बूझि सब कपिहि भरत अति वेगहि सचिव बुलाये ।
चहूँ ओर पुर सरित बाग मग अनुपम साज सजाये ।
राम लषण सिय आगम सुनिकै महामोद भो भारी ।
अकथ अपार अनंद मातु उर भे चर अचर सुखारी ॥ २५ ॥

पुर परिजन नर नारि साज साजि सकल दरश हित धाये ॥
राम पादुका भरत शीश धरि वेगि चले हुलसाये ।
उत हनुमंत जाय सब भाषी सुनि मुनि पद शिरनाई ।
गमने राम निषाद लखे मग आये अवध तुराई ॥ २६ ॥
दोहा—लखि सुरसारिहि प्रणाम करि, मज्जन अरु जलपान ॥
सिया सविधि पूजी सरित, पूरव कथित प्रमान ॥ २७ ॥

दोवई छंद ।

चले वेग लखि अवध लषण सिय युत समाज श्रीरामा ॥
उठि करजोरि नवाय शीश सब कीनो पुरिहि प्रणामा ॥
सरयू अवध महातम रघुवर वर्णत विविध अपारा ।
आये नंदिग्राम सन्निध तहँ पुष्पकयान उतारा ॥ २८ ॥
दोहा—लषण सिया प्रभु निरखिकै, धाये सब नर नारि ॥
राम भरत दृग जुरत दुहुँ, उमगे दुहूँ निहारि ॥ २९ ॥
भरत धाय प्रभु पद परे, राम लिये उरलाय ॥
मिले परस्पर प्रेम युत, यथा उचित चहुँ भाय ॥ ३० ॥
भरत हरषि सो पादुका, रामचरण पधराय ॥
पुनि सबंधु सियके गहे, पद पंकज हुलसाय ॥ ३१ ॥
राम लषण सीता सहित, गुरु द्विज पद धरिशीश ॥
विनय करी करजोरि बहु, पाई सुखद अशीश ॥ ३२ ॥
राम लषण हुलसायकै, जाय जाय उमगाय ॥
गहेमातु गणके चरण, सबहि लये उरलाय ॥ ३३ ॥
मात सुमित्रा कौशला, ताछिन जो आनंद ॥
कहि न सकैं सो कल्प शत, शेष शारदा वृंद ॥३४॥
सखा यूथ प्रमुदित मिले, अपर अमित नर नारि ॥
यथायोग सिय लषण प्रभु, भेंटे सबहि निहारि ॥ ३५ ॥
ताछिन चरित अनूप भो, जे जन सकल अपार ॥
इक इक प्रति छिनमें उचित, भेंटे राजकुमार ॥ ३६ ॥
भये मुदित चर अचर सब, अमित नारि नर वृंद ॥

सो न भेद कोऊ लखौ, कह जै जै नृप नंद ॥ ३७ ॥
सुग्रीवादि नृपाल तिहुँ, हनुमानादिक वीर ॥
भरतादिक सब सबहि सों, मिले यथोचित धीर ॥ ३८ ॥
सिय सासुनके पग परीं, सब लीनी उर लाय ॥
भगिनी पुरवासिनि सखी, मिलीं हीय हुलसाय ॥ ३९ ॥
तारादिक सब तीय वर, उचित रीत युत नीत ॥
मिलीं परस्पर नारि बहु, यथायोग सह प्रीत ॥ ४० ॥
मिले परस्पर सबहि सब, यथा उचित हरषाय ॥
राम कही तब भरत सों, प्रमुदित सबहि सुनाय ॥ ४१ ॥
सखा ऋच्छपति लंकपति, दृढ अंजनिसुत दास ॥
प्राणहुते प्रिय अपर सब, कीश भालु बलरास ॥ ४२ ॥
हम तुम लछमन शत्रुहन, तिमि सुकंठ कपिराज ॥
मिले पंच भ्राता अबै, सुखद समै शुभ आज ॥ ४३
इहि विधि अतिहि अनंद दै, पुष्पक सबहि बिठार ॥
आये श्रीरघुवंश मणि, नंदिग्राम मँझार ॥ ४४ ॥
तहां आय उतरे तबै, कही पुष्पकहि राम ॥
जब सुमिरैं तब आइयो, जाहु सु पूरव धाम ॥ ४५ ॥
राम रजायसु शीश धरि, गो कुबेर ढिग यान ॥
निरखि धनेश अनंद ह्वै, कियो तासु बहु मान ॥ ४६ ॥

चौ०—इमि सबमिले परस्पर लोगा ❀ मिटेसकलदुखजनितवियोगा ॥
नंदिग्राम बहु जुरो समाजा ❀ बैठे जन युत अगणित साजा॥४७॥
तब उठि भरत राम पहँ बोले ❀ धर्म सत्य मय वचन अमोले ॥
मातु पिता आज्ञा जो दीना ❀ सो प्रभु अरु मैं शिर धरि कीना४८॥
अब मम विनय मानिये ताता ❀ राज दीन मो कह पितु माता ॥
निज दिशिते हौं देहु सु लीजे ❀ येती कृपा दीन लखि कीजे॥४९॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥ स० १३० ॥ श्लोक।

अब्रवीच्च तदा रामं भरतः सकृतांजलिः ॥
एतत्ते सकलं राज्यं न्यासं निर्यातितं मया ॥ ४ ॥

अमित विनय सुनि दीन दयाला ❀ भरतहि बोले बैन रसाला ॥
नेह धर्म तव अति वरियारा ❀ याते करौं सु अंगीकारा ॥५०॥
राम वचन सुनि सब नरनारी ❀ कह जै जै अति भये सुखारी ॥
भरत हुलसि प्रभुपद शिरनायो ❀ रघुवर बंधुहि अंक लगायो ५१॥
पुनि तिहुं बंधु जटा रघुनाथा ❀ किये सप्रीति विलग निजहाथा॥
प्रेम सहित सबही अन्हवाये ❀ विशद विभूषण वसन सजाये५२
पुनि तिहुँ बंधु सविधि सजिसाजा ❀ मिलि बहु सेवक सखा समाजा॥
राम जटा निरवारि सुधारे ❀ वर मंजन कराय तनु सारे ५३॥
भूषण वसन अमोल अनूपा ❀ नख शिख सज शृंगार सुरूपा ॥
तन छिन चहुँ इमि लगत सुहाये ❀ चहूँ वेद जनु तनु धरिआये५४॥

दोहा—पुनि रिपुहन द्रुत साजलै, सेवक सखा प्रवीन ॥
तिहुं नृप कपिपति आदिको, सकल शृंगार सु कीन ॥५५॥
रामसखा सेवक अपर, यथायोग चहुँ जाय ॥
कीश ऋच्छ निश्वरनको, सजे अमल अन्हवाय ॥ ५६ ॥
उत कौशल्यादिक सकल, सियहि मुदित अन्हवाय ॥
नख शिख भूषण वसन सुठि, साजे प्रीति बढाय ॥ ५७ ॥
तारादिक जे सकल तिन, पुत्र बधू सम जान ॥
राम मातु सखि गण उचित, सजी सहित सनमान ॥५८॥
सियभगिनी अरु आलिगण, पुनि सबही नर नारि ॥
साजे वर शृंगार निज, उचित सु साज सवाँरि ॥ ५९ ॥

चौ०—इमि सबही शृंगार सुधारे ❀ भोजन पान कीन शुचि सारे॥
पुनि किय अवध चलन तैयारी ❀ अति आनंद सकल नरनारी ६०
मंगलमय सब साज सुधारे ❀ रथ तुरंग गज विविध सँवारे ॥
तिन पर यथायोग असवारा ❀ भये भयो चहुँ जैजैकारा ॥ ६१ ॥
नव सहस्र वर कुंजर साजे ❀ तिनपर भूरि भालु कपिराजे ॥
वाहन अपर अनेक अपारा ❀ यथायोग जन भये सवारा॥६२॥

शिबिका सुभग अनेक अनूपा ❀ बहु सिय युत तिय बैठि सुरूपा ॥
हरि सहस्र मय स्यंदन साजा ❀ तिहि सोहे सबंधु रघुराजा ॥६३॥
बजे बाजने अमित अनूपा ❀ नृत्यगान ठानो वर रूपा ॥
बंदीजन बहु विरुद बखाने ❀ ध्वज फहरत घहरात निसाने ६४
तड़पाहिं तोप घोर बहु छायो ❀ दीपावली प्रकाश सुहायो ॥
छत्र चमर व्यजनादि नवीने ❀ बंधु सखा सेवक चहुँ लीने ६५ ॥
इहि विधि पुर प्रवेश किय रामा ❀ बैठी अटन अमित वर वामा ॥
रोचन लाज सुमन बरसावैं ❀ मंगल गीत मनोहर गावैं ॥६६॥
दरश देत सबहीको रामा ❀ आये सन्ध्या समय सुधामा ॥
धन भूषण वारे मन माहीं ❀ परे कोउ तिन बूझत नाहीं॥६७॥
माता करि आरती उतारे ❀ सहित समाज भवन पगधारे ॥
पूजन दान मंगलाचारा ❀ नृप गृह नगर सु भये अपारा ॥६८॥

दोहा—तब सुरनायक भरतसों, कही समस्त बुझाय ॥
सबहि निवास सुपास युत, वेगि करावहु जाय ॥ ६९ ॥

चौ०—राम बंधु तब आतुर जाई ❀ संग सचिव सेवक समुदाई ॥
सबहि यथोचित दीन निवासा ❀ सदन साज करि सकल सुपासा७०
वर अशोक वाटिका विशाला ❀ तहँ राखे सुकंठ हरिपाला ॥
रंग भवन लंकेश रहाये ❀ वन प्रमोद ऋच्छेश टिकाये ॥७१॥
अंगदराज बागके माहीं ❀ विशद कोट अंजनिसुत काहीं ॥
अपर धाम आराम मझारा ❀ यथा योग कपि ऋच्छ अपारा७२
अवधि विचारि अवध मधि आये ❀ देश देश के भूप सु छाये ॥
सरयू तट निषाद किय वासा ❀ अपर सकल चहुँ सहित सुपासा७३
विविध ऋच्छ कपि नारि अपारा ❀ तिन सबही रनिवास मँझारा ॥
यथा योग वर दीन निवासा ❀ बहु प्रकार करि सकल सुपासा७४

दोहा—इहि विधि सबहि निवास भो, सादर सहित सुपास ॥
उमगो अति आनँद अवध, घर घर होत विलास ॥ ७५ ॥
तिहुँ नृप कपिपति आदि अरु, वानर भालु जु भूरि ॥
सबहीको यश अमल बहु, रहो अवधमें पूरि ॥ ७६ ॥

लंक विजय करि ते सबै, वानर भालु अपार ॥
धरे मनुजतनु सुभगवर, आये अवध मझार ॥ ७७ ॥
त्यौंहीं बहु निश्चरन युत, लंकापति नर रूप ॥
तिलक भाल गलमाल वर, शोभित सुभग अनूप ॥ ७८ ॥
तिमि तारादि रुमादि सब, सुभग मानुषी रूप ॥
कीश ऋच्छ तिय सुंदरी, सजे शृँगार अनूप ॥ ७९ ॥
तिनके गुण गण सुनत सब, पुरवासी नर नारि ॥
धाय लखत निज गति सरिस, चकृत होत निहारि ॥ ८० ॥
प्रात राम अभिषेक सुनि, सब हिय भरी उमंग ॥
होत जागरन सदन प्रति, नृत्यगान सुखरंग ॥ ८१ ॥
रसिकबिहारी प्रातही, होय राज अभिषेक ॥
ताहित निज निज साज सब, साजत सुभग अनेक ॥ ८२ ॥

इति श्री रा० र० वि० अ० श्रीरामचंद्र अवध आगमन वर्णनो नाम प्रथमोविधानः ॥ १ ॥

---

दोहा–आये श्रीरघुवर अवध, भयो परम आनंद ॥
घर घर होत वधावने, मुदित नारि नर वृंद ॥ १ ॥
ताही निशि गुरु सचिव अरु, सेवक सखा अनंत ॥
सकल साज अभिषेकके, लीने साज तुरंत ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद।

गुरु भरत मंत्री अपर जन बहु प्रात साज समेतसो ॥
कीने सविधि सतकर्म जो अभिषेकके हित हेतसो ॥
दिन मध्य औसर जानि आये देव सकल हुलासमें ॥
श्रीराम राज उछाह वर अवलोकिवेकी आशमें ॥ ३ ॥
शुभ समय जानि वसिष्ठ द्विज वर सविधि सीतारामको ॥
अभिषेक कीनो विप्रगण युत मंत्र पढ़ि पढ़ि सामको ॥
शृंगारि पुनि दोऊ विराजे रत्न सिंहासन जबै ॥
वर ब्रह्म निर्मित क्रीट रघुवर शीश गुरु धारो तबै ॥ ४ ॥
पुनि गंध अक्षत तिलक कीन वसिष्ठ गुरु रघुरायके ॥

सुर विप्रवृंद महीप दीनो भाल जग सुखदायके ॥
तिहिसमय जै जै शोर भो नभदुंदुभी देवन हनी ॥
गुण गान करि उर प्रेम भरि वर सुमन झरि लाई घनी ॥ ५ ॥
अतिमुदित निर्तहिं अप्सरा वरबाजने बहु बाजहीं ॥
सुर नाग नर गंधर्व निज निज कलाकरि छबि छाजहीं ॥
सुखकौशला सिय हीयको कहि शेष पार न पावहीं ॥
सब मातु पुर परिजन अनंदित अमित वित्त लुटावहीं ॥ ६ ॥
कंचनमई शत कंजमाला विशद वर अनुपम नई ॥
सो पवनदेव प्रसन्न ह्वै पहिराय श्रीरामहि दई ॥
बहु रत्न युक्त विशाल मुक्ताजाल सयुंत हारसो ॥
सुरपाल गल रघुलालके धारो सुक्रांति अपार जो ॥ ७ ॥
तिहिसमय चारहु वेद निज निज रूप विशद सुधारिकै ॥
आये नवायो शीश रघुवर छटा अमित निहारिकै ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि नारदादिक एक ठौर समग्र ह्वै ॥
अस्तुति करत हैं राम-सियकी चहूँ निगमन अग्रकै ॥ ८ ॥

मणिप्रवाल रीति ॥ कुमारदंडकछंद ।

जयति जय सज्जनानंद कर धर्म धुर चंड कोदंड धारी खरारी प्रभो पाहि पूर्णावतारी कृपाले ॥ जैति लंकाधिपति शमन सीतारमण सर्व देवाधि राजेश अवधेश सुत भक्त अनुरक्त जैजक्तपाले ॥ जयति गर्वापकर्षण प्रहर्षण प्रणत कारुणीकात्म सौंदर्य्य रूपावधी स्वेच्छया-नंत लीला विहारी॥जैति दुष्पार पाथोध बंधान कृत क्रुद्ध युद्धावरुद्धोद्ध भट भीम वपु दुष्ट दल दलन दृढ विजयकारी ॥९॥ जैतिसद्बुद्धि विद्या विचक्षण विपुल अस्त्र शस्त्रादि संहार वारणनिपुणस्वक्ष सर्वात्म विज्ञान सिंधो ॥ उद्भव स्थिति प्रलय कर्म कर्ता प्रबल धैर्य सौर्य्याधिपाधीश सिद्धीश वर कौश लाधीश दीनार्तबंधो॥काम क्रोधोद्भवा पार क्लेशापहर जन्म जन्मार्जितानेक पापघ्न ध्रुव भुक्ति मुक्त्यादि स्वेच्छार्थ दाता॥ चंड कालानल ज्वाल दग्धा कुलित तप्त त्रैताप तापार्त पाहीतिक श्रीपते तासु भक्ता सुत्राता ॥ १० ॥ सकल संगीत गांतज्ञ गौरव

महा सर्व शृंगार सारावधीच्छा जनित कोटि कंदर्प दर्पापहर्ता ॥ राम श्यामांगनीलोत्पलो फुल्ल द्युति दिव्य पीतांबरा भरण शर चाप धृत राज राजेन्द्र त्रैलोक भर्ता ॥ सदय जन हृदय सर हंस नृप मौलि मणि भानु वंशावतंशाति क्रांतीशवर सत्य व्रत शुद्ध प्रेमानुगामी ॥ अखिल ब्रह्मांड व्यापक चराचर प्रभो जानकीनाथ सद्गाथ रक्षक प्रणत दीन दासोस्मि मां पातु स्वामी ॥ १६ ॥ जयति जनकात्मजा जक्तजननी प्रबल असुर संहार कारणि उधारणि धरा राम राजेन्द्र पद पद्मसेवी ॥ नाग नर यक्ष गंधर्व किन्नर अमर कन्यकाभिस्त्वमपि वंदनीया सदा त्वच्चरण सर्व पूज्यादि देवी ॥स्वक्ष सद्गीत ज्ञेया सिध्येया सित्वं रूप लावण्य स्वेच्छावपुषधारिणी धर्मधर प्रीतमाज्ञानुवर्ती ॥ रामरामाभिरामारमाधीश्वरी शुभ्र सिंहासनारूढ सौभाग्यनीराघवे वामभागानुवर्ती ॥ १२ ॥

दोहा—कुरु कुशलं प्रणमोस्तुते, देहि भक्ति निष्काम ॥
बंधुभिश्च सहसीतया, मम हृदये श्रीराम ॥ १३ ॥

सो०—इमि सुर निगम अपार, करी विनय सिय राम प्रति ॥
होत सु जैजैकार, भयो राज अभिषेक लखि ॥ १४ ॥

हरिगीतिका छंद ।

तिहि समय रघुवर लक्ष धेनु सवत्स विधियुत साजिकै ॥
दीनी सु विप्रन विनय पूरक राज गादी राजिकै ॥
पुनि तीसकोटि सु हेममुद्रा दान कीनो रीतिसे ॥
गज वाजि स्यंदन वसन भूषण अमित दिये बहु प्रीतिसे ॥१५॥
पुनि पवनदत्त सु माल दीनी हर्षिकै कपिराजको ॥
भुजबंद चन्दसमान दीनों वालिसुत युवराजको ॥
वरहार जो वासव समर्पित हुलसि सो सीतहि दयो ॥
जिहिको उजास प्रकाश बहु आवासमें चहुँ दिशि छयो ॥१६॥
कछु बार धार उतार पुनि सो हार सियकर धारिकै ॥
छिन लखहिं हनुमत ओर छिन रहि जाहिं पियहि निहारिकै ॥
सो समुझि हियकी श्याम बोले देहु जिहि जिय भावही ॥
लखि लीन हम तब अंतरीगति जाहि उर उमगावही ॥ १७ ॥

तब सिय सकुचि हनुमंतको वह माल दीनी प्रेमते ॥
उठि कीश लै धरि शीश धारी कंठ निज दृढ नेमते ॥
पुनि तासु मणि मुक्ता अमोल सु एक एक निहारही ॥
तिन दाबि दंतन फेर हेर निवेरकै कर धारही ॥ १८ ॥
सो देखि सिय हिय कहतिहै कपिरत्नगुण कह जानही ॥
अनमोल माणि मुक्ता अनूपम तिनहि दंतन भानही ॥
यौं गुणिं जु सीता मधुरबूझी वीर काह निहारहू ॥
क्यों विमलमाल विशाल दशननशाल सकल विदारहू ॥ १९ ॥
हनुमान तब कर जोर भाषी मात और न पेखहूँ ॥
या में खचितकै नाहिं है श्रीराम नाम सु देखहूँ ॥
सुनि सीय मृदु मुसक्याय बूझी कहौ कपि तव गातमें ॥
कह नाम लिपि है सो लखौं उर माथमें कै हाथमें ॥ २० ॥
हनुमंत तब निज नखनते उर बाहु चर्म विदारिकै ॥
कर जोरिकै सीतहि दिखायो चकित अंग निहारिकै ॥
हेरो सिया कपिगात अंतर राम नामहि लिपि चहूँ ॥
तिल मानहू भुज हीयतिहि वि[illegible] वपुष नहिं [illegible]नो कहूँ ॥ २१ ॥
हनुमंत भक्ति अनन्य सत्य विलोकि सिय हर्षित भई ॥
चिरुजियहु ईश प्रसीदहीं सुत सपदि वर आशिष दई ॥
सो लखि समस्त समाज सुर नर कपिहि धन्य [illegible] ॥
ते धन्य जन जे प[illegible]सुतको ध्यान निज उर आनहीं ॥ २२ ॥
सो०–इहि विधि सकल समाज, लखि कपिभक्ति अनन्य दृढ ॥
　　कहत भक्त शिरताज, हैं हनुमान सुजान वर ॥ २३ ॥
　　होय राम जय शोर, तिहूँ लोक अति सुख छयो ॥
　　दान मान चहुँ ओर, नीति प्रीति शुभ रीति मय ॥ २४ ॥
　　पुनि प्रमुदित श्रीराम, वसन विभूषण विशद बहु ॥
　　भूमि ग्राम धन धाम, कपि ऋच्छन दीने उचित ॥ २५ ॥
　　लंकापतिहि अनूप, सहित निशाचर वृंद बहु ॥
　　दीनों रघुकुल भूप, यथा उचित नृप साज सजि ॥ २६ ॥

जाम्बवन्तको राम, मणिन जटित भूषण विविध ॥
वसन अनूप ललाम, दीने संयुत प्रीत बहु ॥ २७ ॥
पुनि बहु याचक बृंद, किये अयाची सकल विधि ॥
इमि श्रीदशरथनंद, दान म[illegible]न तोषै सबै ॥ २८ ॥

चौ०—पुनि रघुवीर हिये हुलसाई ❀ [illegible]णहि कही सनेह बढाई ॥
करों बंधु तुम कहँ युवराजा ❀ [illegible] मध्य समस्त समाजा२९॥
सुनि लछमन बोले कर जोरी [illegible] विनती है मोरी ॥
हौं लघु भरत जेठ मम भ्[illegible]त पदवी यह ताता३०
तब प्रमुदित भरत[illegible]क कीन युवराजा ॥
लषण अधीन सकल दल र[illegible]त्रुदमनहि भाखा३१
वृद्ध सुजन प्राचीन प्रव[illegible]कट करि दीने ॥
अपर अपार समस्त प्रधाना [illegible]त माना॥३२॥
जे जन दशरथ नृप ढिग केरे ❀ [illegible]निज नेरे ॥
दान मान प्रथमहुते भूरी ❀ सबकी [illegible]भिलाष सु पूरी३३
बाल सखा सेवक बहुतेरे ❀ उचित मान कीने सब [illegible]
इमि सुर नर अनंद माधि फूले । निज निज धाम काम सुख भूले३४

दोहा—सप्त दिवसको एक दिन, भयो न अथये भान ॥
रामराज आनंदमें, कछू न कोऊ जान ॥ ३५ ॥
पुनि नट नर्तक कौतुकी, अपर अनेक समाज ॥
नर नारी तिन भूरि धन, दीनो कौशलराज ॥ ३६ ॥
ताछिन द्वै गंधर्व जे, चित्रसेन इक नाम ॥
दूजो विश्वावसुगुणी, दोऊ वर मतिधाम ॥ ३७ ॥
ते रामहि कर जोरिकै, उठि बोले हुलसाय ॥
महाराज रघुवंश मणि, मम विनती यह आय ॥ ३८ ॥
पंचवर्ष वय नाथकी, रही तबै हम आन ॥
महाराज अवधेश ढिग, कियो दुहूँ बहु गान ॥ ३९ ॥
ताछिन प्रभु तिहुँ बंधु युत, पितु ढिग रहे विराज ॥
सुर गुरु मंत्री नृप सखा, सेवक सकल समाज ॥ ४० ॥

इंद्रसभा औसर निरखि, हम किय गमन विचार ॥
तब प्रभु अति बिमने भये, भरि आये द्दगवार ॥ ४१ ॥
महाराज अवधेश लखि, हमहिं जान नहिँ दीन ॥
करो गान पुनि मुदि मन, वेगि रजायसु कीन ॥ ४२ ॥
यौं कहि लिखि इव का, सपदि बाँधि शर माहि ॥
ताही छिन धनु भेजो सुरपति पाहि ॥ ४३ ॥
अति उताल गयो भूपति पास ॥
उत्तर लायो सखास ॥ ४४ ॥
तामधि हम ॥
रहैं गंधरव दाय ॥ ४५ ॥
अरु गंध विशद अपार ॥
यूथ भूप दरबार ॥ ४६ ॥
हम , सेवैं चरण सदाय ॥
अपर अप्स गंधरव, नित सेवा करि जायँ ॥ ४७ ॥
सो प्रभु शिशुताते करी, इहि विधि कृपा अपार ॥
आज समै लखि याचहीं, दीजै सोइ उदार ॥ ४८ ॥
नाथ कृपाते सकल है, दुहूँ लोक आनंद ॥
निज अनन्य दृढ़ भक्ति वर, दीजे रघुकुलचंद ॥ ४९ ॥
सुनि प्रसन्न ह्वै राम तिन, दीनी भक्ति अनन्य ॥
सुर नर मुनि जैजै करी, कही धन्य दुहुँ धन्य ॥ ५० ॥
इहि विधि सबहि अनंद दै, उठे समय लखि राम ॥
सिया सहित गुरु विप्रपद, पूजे कियो प्रणाम ॥ ५१ ॥
पुनि तहँते आये महल, सखा बन्धु सिय संग ॥
सब मातनके पग परे, प्रमुदित सहित उमंग ॥ ५२ ॥
जननी देहिँ अशीश बहु, प्रमुदित अंक लगाय ॥
करैं निछावर आरती, वित्त अपार लुटाय ॥ ५३ ॥
कीश नाथ ऋच्छेश अरु, लंकापति हनुमान ॥
अपर नील नल आदिजे, सुहृद सु वीर प्रधान ॥ ५४ ॥

ते सब सब जननीनके, गहे पाँय हुलसाय ॥
दई अशीश सुमात तिन, पुत्र सरिस सतभाय ॥ ९५ ॥
सन्माने सब प्रीति युत, हिय अनंद उमगात ॥
अपर नारि नर उचित बहु, परितोषे वरमात ॥ ९६ ॥
इहि विधि परम अनंद युत, भयो राम अभिषेक ॥
नृत्य गान दानादि बहु, घर घर होत अनेक ॥ ९७ ॥
तिहूँ लोक आनंद भो, सबते अवध अपार ॥
छयो शोर चहुँ जैति जै, दशरथ राजकुमार ॥ ९८ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रन्थे अभिषेक विधाने श्रीरामचंद्रराज्याभिषेकवर्णनो नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

---

हरिगीतिका छंद।

श्रीरामराज अनंद तीनहु लोक सब सुख छायगे ॥
दुख दोष दुष्ट दरिद्र दुष्कृत द्वेष सकल नशायगे।
बहु भूप सुर मुनि नारि नर दशहूँ दिशाते आवहीं ॥
वरदान मान समेत दरशन पाय सकल अघावहीं ॥ १ ॥
आनंद भरि कौशिक सु अत्रि अगस्त्य आदिक बहु मुनी।
चहुँ ओरते आये सु निज निज मंडली युत [illegible] गुनी ॥
तिन हेरि प्रभु उत्थान दै नमि उचित वर[illegible]न दये।
विधि सहित पूजे प्रेमते सब दरशलहि प्रमु[illegible] भये ॥ २ ॥
बूझी परस्पर कुशल तब बोले अगस्त्य मुनीश यौं ॥
भुविभार दीन उतार प्रभु अजहूँ न होवै कुशल क्यौं ॥
बहु कुशल सुर मुनि तबहि भे जब वध भयो घननादको।
पुनि अपर निश्चर निकर भंजे पारकह अहलादको ॥ ३ ॥
दोहा–मुनि रघुवर चित चकित ह्वै, कही कहा हे नाथ।
सकल निश्चरनते घनो, रहो तासु बल गाथ ॥ ४ ॥

तब अगस्त्य मुनि राम सों, बहु विधि करि निरधार ॥
सकल निश्चरनकी कथा, कही सहित विस्तार ॥ ५ ॥
पुनि बोले ऋषि रामसों, निश्चर प्रबल महान ॥
तब ते अति जबते दयो, पार्वती वरदान ॥ ६ ॥
जन्मतही निश्चर तुरत, माता वैस समान ॥
होत प्रौढ ताही समैं, समर योग बलवान ॥ ७ ॥

प्र० ॥ वा० उ० कां०॥ स० ४ ॥ श्लोक ॥

पुरमाकाशगं प्रादात्पार्वत्याः प्रियकाम्यया ॥
उमयापि वरो दत्तो राक्षसीनां नृपात्मज ॥ १ ॥
सद्योपलब्धिर्गर्भस्य प्रसूतिः सद्य एव च ॥
सद्य एव वयः प्राप्तिं मातुरेव वयःसमम्॥२॥इत्यादि॥

दोहा–याते बाढत अमित नित, देत सबहि संताप ॥
सो गति अजहूँ पै अबै, करि न सकैं बहु पाप ॥ ८ ॥
गो द्विज हत्या रैनि दिन, करत हुते खल भूरि ॥
रही दुखित बहु भूमि सो, भयो सकल दुख दूरि ॥ ९ ॥
अब सु ब्रह्महत्या सदा, रही चार अस्थान ॥
प्रभुहि [illegible] कारण सकल, है बहु ठौर बखान ॥ १० ॥
चार मास [illegible] विषे, एक अंशते खास ॥
चंड ब्रह्मह[illegible] करै, सरितन माहिं निवास ॥ ११ ॥
बहुरि ब्रह्महत्या प्रबल, सो इक अंश सदाहिं ॥
रहै निरंतर रैनि दिन, ऊषर धरणी माहिं ॥ १२ ॥
तिय रजवंतिनमें सदा, तीन दिवस लग जोय ॥
वास ब्रह्महत्या प्रबल, एक अंशते होय ॥ १३ ॥
सदा ब्रह्महत्या रहै, एक अंश तिन माहिं ॥
गो द्विज तिय शिशु आत्महन, अरु मिथ्या बतराहिं ॥१४॥

प्र० वा० ॥ उ० का० ॥ स० ८६ ॥ श्लो० ॥

देवानां भाषितं श्रुत्वा ब्रह्महत्या महात्मनाम् ॥ संदधौ स्थानमन्यत्र वरयामास दुर्वसा ॥ ३ ॥ एकेनांशेन वत्स्यामि पूर्णोदासु नदीषु वै ॥ चत्वारो वार्षिकान्मासान्दर्पघ्नी कामचारिणी ॥ ४ ॥ भूम्यामहं सर्वकालमेकेनांशेन सर्वदा ॥ वसिष्यामि न संदेहः सत्येनैतद्ब्रवीमि वः ॥ ५ ॥ योयमंशस्तृतीयो मे स्त्रीषु यौवनशालिषु ॥ त्रिरात्रं दर्पपूर्णासु वसिष्ये दर्पघातिनी ॥ ६ ॥ हंतारो ब्राह्मणान्ये तु मृषा पूर्ववदूषकान् ॥ तांश्चतुर्थेन भागेन संश्रयिष्ये सुरर्षभाः ॥ ७ ॥

दोहा—इन विहाय अब और थल, रहो न पातक लेश ॥
राम कृपाते रावरी, सुखी भये सब देश ॥ १५ ॥

चौ०—जो प्रभु लंकनाथको मारा ❀ सोइ बिन्दु तिहँ लोक मझारा ॥
जासु तेज बल गुण प्रभुताई ❀ आपहि प्रथम सब जात सुनाई ॥ १६ ॥
जे कुकर्म वश जीव अपारा ❀ परे दुखित बहु नरक मझारा ॥
तिन उद्धारक तिहुँ पुर माहीं ❀ तुम बिन कोउ सुरासुर नाहीं १७ ॥
सो रावण यम जीतन काजा ❀ गो यमपुर जब सहित समाजा ॥
लखि नारकी विकल विललाये ❀ दशमुखते सब जीव छुड़ाये १८ ॥

प्र० वा० ॥ उ० कां० स० २१ ॥ श्लोक० ॥

रावणो मोचयामास विक्रमेण बलाद्बली ॥
प्राणिनो मोक्षितास्तेन दशग्रीवेण रक्षसा ॥ ८ ॥
सुखमापुर्मुहूर्तं ते ह्यतर्कितमचिंतितम् ॥
प्रेतेषु मुच्यमानेषु राक्षसेन महीयसा ॥ ९ ॥ इत्यादि ॥

चौ०—सो रावणहि सहित परिवारा ❀ संयुत सैन समर संहारा ॥
पुनि नृप तिलक विभीषण सारा ❀ को प्रभु सम बलवंत उदारा १९ ॥

दोहा—इहि विधि मुनिवर बहु कथा, कहि पुनि अस्तुति कीन ॥
भई साँझ तब सबहि प्रभु, उचित वास वर दीन ॥ २० ॥
रघुवर सादर प्रीत युत, राखे मुनिवर वृंद ॥
अपर कथा नित होत बहु, छायो परमानंद ॥ २१ ॥

मिथिलाधिप केकयनृपति, काशि नृपादि अनूप ॥
जुरे अवधमें मुदित बहु, देश देशके भूप ॥ २२ ॥
द्विज मुनि कविकोविद निपुण, याचक गुणी अपार ॥
ज्ञातिवर्ग वर धनिक बहु, नर तिय वरन सुचार ॥ २३ ॥
अपर अमित जन अवधमें, छाये सब कहँ राम ॥
मान दान सादर सकल, करि राखे निज धाम ॥ २४ ॥
बीते बहु दिन प्रीति वश, राम जान नहिं देत ॥
ते अतिही आनंदमें, भूले सकल निकेत ॥ २५ ॥

चौ०-तब मुनिगण रामहि समुझाई ❀ गये अनंदित बिदा कराई ॥
विपुलमहीप राज धन धामा ❀ रामहिं अर्पि लहो विश्रामा ॥२६॥
राम उदार धर्म धुर [illegible] ❀ यथा उचित नृपनीति निहारी ॥
दीन बहोरि रा[illegible] काही ❀ कोऊ यह न कीन कोउ नाहीं२७॥
राम नीति युत सब रुचि राखी ❀ तिन प्रति मधुर गिरावर भाषी ॥
सहित प्रीति नृप नीति रसाला ❀ भये बिदा मुद सकल भुपाला२८
प्रभु अनुजनले संग नरेशा ❀ गये पाय रघुवीर निदेशा ॥
तिनहिं राज धन अर्पण कीना ❀ उचित बहोरि ताहि सो दीना २९
विपुल वस्तु धन राज समाजा ❀ लाये अनुज निकट रघुराजा ॥
सो लखि तुरत राम सब दीने ❀ यथा योगपरितोषित कीने३० ॥
याचक भये समस्त अयाची ❀ ऋधि सिधि फिरैं अवधमें नाची॥
इहि विधि होत अनंद सदाई ❀ रामराज वसुधा सुखछाई ॥३१॥
प्रति दिन होम दान सुरपूजा ❀ करि पुनि करैं काज निज दूजा॥
ऊंच नीच जे गुणि जन आवैं ❀ तिन सबकी अभिलाष पुजावैं३२
देश कोश कृत नैनन देखैं ❀ न्याय माहिं निजपर नहिं लेखैं ॥
पालैं प्रजहि पुत्र सम जानैं ❀ यथा योग सबही सनमानैं॥३३॥

दोहा-साम दान अरु दंड पुनि, भेद पराक्रम बुद्धि ॥
कृपा रोष वसुगुण उचित, चहिय भूप महँ शुद्धि ॥ ३४ ॥
ते सब युत रघुवंश मणि, राज करत निरद्वंद्व ॥
सकल चराचर लोक तिहुँ, रहत सदा सानंद ॥ ३५ ॥

चौ०-कबहुँ अहेर करैं वनजाई ❀ संग सखा सेवक तिहुँ भाई ॥
कबहुँ सैन जोरैं इकठाई ❀ निरखैं वीर शस्त्र निपुणाई॥३६॥
होहिं प्रसन्न देहिं बकशीशा ❀ करैं अनेक जनन जन ईशा ॥
कबहुँ सकल गुणि गणन बुलावैं ❀ गुनहिं परस्पर प्रगट करावैं ३७॥
कबहुँ सब पुरवासिन जोरैं ❀ करि बहु नीति निदेश निहोरैं ॥
कबहुँ सखा सेवकन बुलाई ❀ सिखवहिं रीति प्रीति हुलसाई ३८
कबहुँ प्रात सरयू अस्नाना ❀ करहिं देहिं विप्रन बहु दाना ॥
गृह अनुजनके कबहुँ सिधारैं ❀ कबहुँ सखनके भवन पधारैं ३९॥

दोहा-उचित प्रजा सेवक कबहुँ, विनय करैं युत प्रीति ॥
राम जात ताहू सदन, भक्ति वश्य सह रीति ॥ ४० ॥

चौ०-सब मातनके भवन सिधावैं ❀ चहूँ बन्धु समभाव बढावैं ॥
जननी सखी जिती बहु वामा ❀ मातसरिस सब जानत रामा४१॥
त्यौं सिय सब सासुन सम जानैं ❀ तिहुँ देवरन पुत्र इव मानैं ॥
भगिनी नित्य आय शिर नावैं ❀ जनकसुता बहु प्रीति बढ़ावैं ४२॥
तिहूँ बंधु नित सिय पगपरसैं ❀ बाल सखाहू चरणन दरसैं ॥
पुरवासिनि रनिवास सिधारैं ❀ दान मान सबही सतकारैं ॥४३॥
सखा ज्ञाति गृह औसरमाहीं ❀ सासु संग आज्ञा लै जाहीं ॥
पुत्रवधू चहुँ धर्म सयानी ❀ प्रमुदित रहैं निरखि सब रानी४४
तिहुँ भगिनी सिय रीति निहारी ❀ करैं उचित कृत तिहि अनुसारी॥
सीता सबहि सुनीति सिखावैं ❀ सो लखि सकल सासु हुलसावैं४५

दोहा-पुत्रवधू चहुँ पुत्र चहुँ, परम परस्पर प्रीत ॥
धर्म रीति मर्याद कुल, संयुत सब नृपनीत ॥ ४६ ॥
इहि विधि अति आनंद युत, रहत सबैं नर नारि ॥
धन्य धन्य सुर मुनि सकल, वर्णत अवध निहारि ॥४७ ॥
प्रजा धर्मरत ज्ञान युत, विरुज सुखी गुणवंत ॥
संतति संपति सुरुचिमय, आनँद दशहु दिगंत ॥ ४८ ॥
जन इच्छित बरसैं जलद, धरणी धान्य अपार ॥
रामराज प्रमुदित सबै, होत सु जै जै कार ॥ ४९ ॥

सीतारामहि सुमिरिकै, दृढ विश्वास कराय ॥
रसिकविहारी हीयकी, सब अभिलाष पुजाय ॥ ९० ॥
ब्रह्मादिक सुर बृंद अरु, नारदादि ऋषिराज ॥
नित प्रति आवत अवधमें, राम दरशके काज ॥ ९१ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० श्री० रामचंद्र राज्यरीति वर्णनो नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

---

दोहा—इहि विधि दशरथ चक्कवै, नृप सुत वर श्रीराम ॥
सार्वभौम दृढ राज्य शुभ, करत धर्म युत काम ॥ १ ॥
मात बंधु सेवक सखा, अपर सकल नर नारि ॥
धन्य राम सब कहत हैं, प्रीति सुनीति निहारि ॥ २ ॥
समै समै प्रति होत हैं, सकल काज सब ठौर ॥
अवध भूप श्रीराम इक, तिहूँलोक शिरमौर ॥ ३ ॥
एक दिवस रघुवंशमणि, विचरत सरयूतीर ॥
संग बंधु सेवक सखा, अपर विविध जन भीर ॥ ४ ॥
लखि सरयूतट रेणुवर, मृदुल विमल रघुराज ॥
राजे ताबिच मुदित महि, संयुत सकल समाज ॥ ५ ॥
ताछिन बहु नर नारि तहँ, ऊंच नीच सब कोय ॥
यथायोग प्रभु दरश लहि, अति आनंदित होय ॥ ६ ॥
विविध प्रजा चहुँ वरण अरु, मुनि तापस वर संत ॥
दरश करत आवत चलत, बैठत जात अनंत ॥ ७ ॥
यूथ यूथ मिलि विविध जन, इत उत निकट सु दूर ॥
बैठि यथोचित परस्पर, बतरावत सुख पूर ॥ ८ ॥
श्रीरघुचंद समीप इत, होत परम आनंद ॥
कहत सुनत वर बैन बहु, प्रमुदित सज्जन वृंद ॥ ९ ॥
सो०—ताछिन प्रभु ढिग आय, रसिकविहारी दीन इक ॥
पद गहि शीशनवाय, बोलो विकल अधीर अति ॥ १० ॥

सवैया कवित्त।

उत वीत गई लरकाइँ सबै वा अजानतामें कछु जानो नहीं ॥
तिमि जात जवानी कुसंगहिमें छिन एक सुसंग जु आनो नहीं ॥
कर पाय सुधा तजि दीनो मैं हाय हलाहलखाय अघानो नहीं ॥
रसिकेस वृथा यह जन्म भयो सिय रामको नाम कमानो नहीं ११

दोहा–यौं कहि पुनि कर जोरिकै, भाषि विनय युत बैन ॥
अधम उधारन नाम सुनि, हौं आयो तुव ऐन ॥ १२ ॥

सोरठा–तासु विनय सुनि लीन, कछु विहँसे तिहि ओर लखि ॥
पै नहिं उत्तर दीन, तब बोले पुनि दीन वह ॥ १३ ॥

सवैया कवित्त।

गीध गयंदगनी गनिका सवरी कपि रीछहि आदि अनेकू ॥
तारे तबै रसिकेस तिनै हितकीन न लीन अलीन विवेकू ॥
पातकी मोहिँ महा लखि राम न त्यागो दयालु जु आपनि टेकू ॥
पाँवरो बावरो डावरो धावरो रावरो है अवलंब जु एकू ॥ १४ ॥
टेरत दीन ह्वै दीन जबै तबही तिहिकी सुधि लेतहो लाघो ॥
रावरि रीति सदाकी बँधी अब सो मरयादकी लीक न नाघो ॥
पातक पुंज भरो रसिकेस पै धाय परो तुव पाय पै राघो ॥
राखत आये की लाज सबै प्रभु सामुहे जाय तौ खाय न बाघो १५

दोहा–यौं कहि पुनि बोलो निडर, मोहिं नहीं कछु लाज ॥
कठिन ताहि जाको विरद, होय गरीबनिवाज ॥ १६ ॥

सवैया कवित्त।

खैंच कसी है कुकर्मनते कटि शीश अधर्मनको धरो गट्ठा ॥
मोहिँ न जानि परै कछु भार करों नितकार यही हिय कट्ठा ॥
योंहीं चहूं बहु डोलतहौं दुहुँ कंध उठायके लोभकेलट्ठा ॥
देखि दशा रसिकेस किया जग राम जुरावरो होत है ठट्ठा ॥१७॥

दोहा–सुनि रघुवर मुसक्यायकै, पुनि हेरे तिहि ओर ॥
कछू न उत्तर दीन तब, बोले वचन कठोर ॥ १८ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

करम खुटैला वरणाश्रम टुटैला मंजु धरम छुटैला जाति पाँतिते उठै-
ला है ॥ दीनको जुटैला अं॰ मलीनको लुटैला सदा आन वान

कान सान मान ते रुठैला है ॥ मनको मुटैला पातकीनको पुटैला चित्त चाहको चुटैला झूठ यशको झुठैला है ॥ रसिकविहारी तोहिं नीकी भांति जानौं राम द्विजको कुटैला भीलनीको तू जुठैला है१९॥ शबरी अहल्या गणिकादि दुराचारी भारी ऐसी ऐसी घनी अधम कुनारिनको रंगी तू ॥ वायस निषाद गीध राकस अपावन ये गज कपि रीछ भूर कूरनको अंगी तू ॥ काम क्रोध लोभ मोह विवश मलीन दीन दुःखित दरिद्री इमि रागिनको ढंगी तू॥रसिकविहारी भली भाँति पहिचानो राम हौंतो तोहिं जानो है सदाते नीच संगी तू ॥ २० ॥

सवैया-कवित्त ।

लूटि लयो तिहुँ लोकनमें यश भारी न काम कहूँ कछु कीधो ॥
पाहन भील निशाचर कीश उधारे तिनै रहो काम सुसीधो ॥
दीनदयालु कहाय भले रसिकेस सुगीधेहो तारिकै गीधो ॥
जानि परै तुमैं राम तबै जब मोसम पातकिसे हठि वीधो ॥ २१ ॥

दोहा-सुनि हँसि विकल सु दीन गुणि, कृपा करी रघुवीर ॥
हनुमंतहि आज्ञा दई, तिहि धराय बहु धीर ॥ २२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ये हो अंजनीके पूत देत हौं रजाय यह रसिकविहारी मो अनन्य भक्ति पावही ॥ काम क्रोध लोभ मोह दुरित दरिद्र दोष कोऊ दुख याके नेक निकट न आवही ॥ नाम रूप लीला धाम बहु गुण ग्राम सत्य सकुल चरित्र मो समस्त दरशावही ॥ सहित अनंद निर-द्वंद यश गावै भूरि फेरि ह्वै निशंक मम संनिध रहावही ॥ २३ ॥

दोहा-सुनि प्रभु आयसु पवनसुत, कही धीर दै ताहि ॥
हम तुव रक्षक हैं सदा, दोऊ लोक बनाहि ॥ २४ ॥
सुनि सुदीन कर जोरिकै, भाषी हनुमत पाहिं ॥
मो अवगुण जित देखियो, निज दिशि लखो सदाहिं ॥२५॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

जो कछु सकल कर्म करिहौं करे मैं करौं तिनकी प्रतीतिहिय रंचहू न धारी हैं ॥ रसिकविहारी दृढ राखो है विश्वास येही केसरी-

किशोर मम रक्षक सु भारी है ॥ ह्वैहै लोक दोऊ सुख संपति सुयश सदा सुधरै सुधारी सुधरैगी बात सारी है ॥ मेरी प्रभुताई करौ प्रभुता तिहारी यह जो पै लघुताई करौ लघुता तिहारी है ॥ २६ ॥ जानत हौं नीकी भांति मेरे मैं कुकर्मनको याते अकुलात उर आवत न थीरता ॥ ये हो रामदूत अब ऐसी कृपा कीजे जाते सकल अनंद होय धार चित्त धीरता ॥ नीके कर्म कीने सब नीको फल देत सोई कीनी तुम यामें का कहावै तुव मीरता ॥ रसिकविहारी कर्म खोटे हू किये पै मोहिं नीको फल दीजे तो तिहारी वीर वीरता ॥ २७ ॥

दोहा– सुनि हनुमत भाषी तबै, त्याग सकल अब सोक ॥
राम कृपा तुव सबहि विधि, शुद्ध भये दुहुँ लोक ॥ २८ ॥
रसिकविहारी दीन तब, कहि जैजै रघुचन्द ॥
करन लगो विनती विपुल, पुलकित परमानन्द ॥ २९ ॥
तब रघुवीर कृपालु तेहि, सादर निकट बुलाय ॥
अभय कियो कर शीश धर, गयो सुपद शिरनाय ॥ ३० ॥
रसिकविहारी दीन द्रुत, तहँ ते मुदित सिधार ॥
आय पुकारो पाहि कहि, कनक भवनके द्वार ॥ ३१ ॥
दीन गिरा सुनिकै सिया, भेजी अली उताल ॥
सपदि आय बूझो सुतब, बोलो सब निज हाल ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

रहत अनीता रंचनीता ना पुनीता कर्म धर्म ते अतीता ज्ञान गुणत न गीताको ॥ जन्म सब वीता विपरीता औकुरीता बीच सहज अभीता हौं सभीता नाहिं भीता को ॥ काल यौं व्यतीता नेक मनको न जीता कबौं कीनी ना सुरीता औ भरो ना हियरीताको ॥ वेद ना अधीता पुण्य पूरन न कीता मोहिं रसिकविहारी है भरोसो एक सीताको ॥ ३३ ॥ जाकी ओर ताकी नेक, नजरकृपा की कोर ताकी करताकी लिपि दूर कर ताकी है ॥ अमित गुण की तौ क्षमा की यह काकी वाणि कीरति सुधाकी चंद्रमा की समता की है ॥ शारदा रमाकी मति छाकी क्यो समाकी होय रसिकविहारी हित हेत किमि थाकी है ॥ दीनसुखदाकी खल सैन दुख दाकी शुभ दृष्टि पुण्यपाकी मिथिलेशकी सुताकी है ॥ ३४ ॥

दोहा—रसिकविहारी दीन इमि, कही सखीहि निहोरि ॥
हौं आयो स्वामिनि शरण, कहिय वेगि कर जोरि ॥ ३५ ॥
अली दयालु सुजाय द्रुत, सियहि कहो सब हाल ॥
सुनि शिशु जानि समीप तिहि, लियो बुलाय उताल॥३६॥
रसिकविहारी दीन तब, धाय चरण गहि लीन ॥
त्राहि त्राहि कहि जोरि कर, पुनि बहु विनती कीन ॥ ३७॥

घनाक्षरी कवित्त।

कुटिल कुपंथी है कुकर्मी औ कुसंगी सदा कुमति कुतर्की क्रूर कपटी कुकामको ॥ कायर कलंकी क्रुद्ध कुयशी जुकामी कुत्स कुवसी कठोर औ कुचाली हौं कुठामको॥ दुष्ट दुराचारी दीन दुखित दरिद्री द्रोही दाया हीन दंभी दोष भाजन अदामको ॥ रसिकविहारी सुखकारी अवलंब मोहिं स्वामिनी तिहारे पदपंकज ललामको॥३८॥ कीरति तिहारी तिहुँ लोक उजियारी भारी भाषैं वेदचारी सुखकारी दीन जनकी ॥ हौं तौ दृढ़धारी यही हृदय विचारी निज मन वच काय गति रावरे चरनकी ॥ रसिकविहारी ओरहेरौकृपाकोरकरि राखेही बनैगी लाज किंकर करनकी ॥ काहू की न आश सब जगते निराश भयो मोकों बडी आश सिया स्वामिनी शरनकी ॥ ३९ ॥ जाय हौं न और ढिग दीनता सुनाय हौं न ध्यायहौं न और यश और को न गायहौं ॥ खायहौं न औरको प्रसाद चित्तलाय हौं न चाय हौं न और शीश और को न नायहौं ॥ रसिकविहारी मैं कहाय सिय रामजूको भूलिहूके कबहूं न औरको कहाय हौं ॥ गहे दृढ जान हौं तौ सकल अभीष्ट फल स्वामिनी तिहारे पद पंकज ते पायहौं॥४०॥

चौ०-दीन वचन सुनि जनकदुलारी ❀ कृपा दृष्टि करि ताहि निहारी॥
रसिकविहारी शिर कर धारी ❀ कियो अभै दुहुँ लोक मझारी४१॥
सखी चारुशीलाहि बुलाई ❀ कर गहि सौंपा हिय हुलसाई ॥
शरण लहो मम रसिकविहारी ❀ याहि सदा राखियो सुखारी॥४२॥
तब सो अति अनंद उमगाई ❀ सविनय स्वामिनि पद शिर नाई॥
कहनलगो दंपति गुण गाथा ❀ रसिकविहारी अति सुखसाथा४३॥

दोहा–स्वामिनि हियकी मृदुलता, इत अलि करैं बखान ॥
उत रघुवर उर सरलता, लखि सबही सुखमान ॥ ४४ ॥
रसिकविहारी दीन ह्वै, भाषे वचन कठोर ॥
सो क्षमिकै पुनि अति कृपा, कीनी राजकिशोर ॥ ४५ ॥
क्षमा दया श्रीरामकी, लखि सब करैं बखान ॥
धन्य धन्य रघुवीर सम, स्वामी कोउ न आन ॥ ४६ ॥
ताछिन बोले राम सों, कपिपति दुहुँ कर जोर ॥
सब कहँ आदर देत प्रभु, निरखि चकित चित मोर ॥ ४७ ॥
रंच दीन ह्वै आय फिरि, करैं कोटि अपराध ॥
सो क्षमिकै कीजे कृपा, प्रभु हिय दया अगाध ॥ ४८ ॥
तब रघुवर हँसिकै कही, सुनौ सखा दृढ़ वैन ॥
बडो कहावो लोकमें, यह साधारण है न ॥ ४९ ॥
धन ते गुन ते रूप ते, कुल ते वयते नाहिं ॥
बडो कहावै जाहि ते, ते लक्षण ये आहिं ॥ ५० ॥
दीननके अवगुण क्षमै, मेटै दुखित कलेस ।
यथायोग सब आदरै, सोई बडो सुदेस ॥ ५१ ॥

सवैया–कवित्त ।

जू कहि बोलै यथोचितसों अरु तू कहि बोलै न बोल कड़ो ॥
आसन देत विठारत पास औ आवत जात जु होवे खडो ॥
योग जितो जिहि आदर होत तितो तिहि हेत सदा उमड़ो ॥
और की राखै बड़ाई भली विधि सो जगमें रसिकेस बड़ो ॥ ५२ ॥
दोहा–पुनि जगमें छोटे बडे, सब प्रकारके लोय ।
पै ऐसे अति स्वल्प हैं, शुद्ध हृदय जिहि होय ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ढूँढ़े नर नारी बहु बालक जवान बूढ़े रूढ़े और गूढे तिनै बुद्धि ते विचारे भाफ ॥ देखे तौ दुरंगी कोउ काहु के न अंगी होत स्वारथके संगी परकाज हेत आवै जाफ ॥ रसिकविहारी यही रीति मैं निहारी चहूँ तब या उचारी बात साँची चूक कीजो माफ ॥ दानी गुनी ज्ञानी मानी जगमें घनेरहि पै होत है करोरनमें

कोऊ एक जीको साफ ॥ ५४ ॥ खूबीमें खुवत कोऊ डूबत डिमाक माहिं कोऊ गरकाब ह्वै गरूर भूरमें गडै ॥ कोऊ मतवारो मतवारो वनि बैठत है कोऊ आन आन के कहे ते आन में अडै ॥ वित्त वसुधा औ वाम हेत तजि हेत सबै जितै अवलोकौ तितै एक एक ते लडै । रसिकविहारी कोउ सज्जन मिलै है तबै ताको अविलोकि घनो चैन चित्तमें चडै ॥ ५५ ॥

दोहा—तब भाषी कर जोरिकै, भरत सुमति प्रभु पाहिं ॥
काहूको कह दोष सब, माया विवस भुलाहिं ॥ ५६ ॥
काम क्रोध मद लोभ अरु, मोह प्रबल ये पांच ॥
इनके होत अधीन तब, सबहि सुरासुर नाच ॥ ५७ ॥
हैं पांचहु ये प्रबल पै, अधिक सबहि ते लोभ ।
दुहूँ लोक नाशक दुखद, करै सदा मन छोभ ॥ ५८ ॥

सवैया कवित ।

ज्यों मद मत्त मतंग बली निबली अति होत जुपंक रहै खुभि ॥
ज्यों वर वीर सुधीरहु होय अधीर जबै दृग तीर अडै चुभि ॥
दारु विधीरसिकेसमलिंद ज्यों होत अधीन सुपंकजमें गुभि ॥
त्यों मतिमंत रु संत गुणी बहु वेवस होत जु लोभ परै लुभि ५९॥

दोहा—सो सुनि बोले लषण ते, लोभ करैं भल काज ॥
विन धनके जगमें कछू, होय नहीं सुख साज ॥ ६० ॥

सवैया कवित्त ।

पैसहिते सुख होय सबै अरु पैसहिते दुख छूटत गाढू ॥
पैसहिते जग काम चलै अरु पैसहिते सतकार हो बाढू ॥
पैसा नं हो तब और कहा समबंधिहु होत सुद्वार न ठाढू ॥
पैसा रहे रसिकेस जु पास तौ होंय घने श्वशुरे अरु साढू ॥६१॥

दोहा—सो सुनि बोले शत्रुहन, सबकी है मर्याद ॥
मर्यादा युत काज भल, त्यागे ताहि विषाद ॥ ६२ ॥

सवैया कवित्त।

ख्यात चहूँ यह ताहि कहूँ न मिलै सुख जो मर्याद चलै नघि ॥
सूखतहै अति बेगहि सो जल जो सरिता सर सीम बहै नघि ॥

याते अनंद चहै रसिकेस तौ लोक दुहूनकी लीक नहीं नघि ॥
देखहु कैसो कलेश लहो मिथिलेशसुता धनुरेख कढी नघि६३॥
चौ०–तबहिं विभीषण बात उचारी ❀ जो मम भ्रात सरिसनरनारी
करै सकल मर्याद बिहाई ❀ ताहि कहौ का चलै उपाई ॥६४॥
सो०–सुनत वचन श्रीराम, मुसक्याने मुख वसन दै ॥
जाम्बवंत मतिधाम, तब भाषी लंकेशप्रति ॥ ६५ ॥
कोऊ हो नर नारि, क्रूर कृपण वर धर्मगत ॥
ताको संग न कारि, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ६६ ॥
तब बोले रघुचंद, सत्य कही ऋछराजपै ॥
जो मन होय प्रबंद, करै कोउ तिहिको कहा ॥ ६७ ॥
ताछिन पवनकुमार, बिनय करी कर जोरिकै ॥
कहा प्रबल उपचार, जाते मन बंधन रहै ॥ ६८ ॥
सुनि बोले श्रीराम, मन बंधन करिवो कठिन ॥
बहु सुर मुनि मतिधाम, विवसरहैं याते सदा ॥ ६९ ॥
विविध उपाय उदंड, सो मन बन्धन हेत हैं ॥
साँचो सदा अखंड, सबते उत्तम यत्न यह ॥ ७० ॥
मनबंधनके काज, प्रीति करै सज्जन विषे ॥
त्यागि सकल जग काज, तौ पुनि वेवस होय सो ॥७१॥

सवैया कवित्त।

है मति क्रूर महाबल भूर छुटै तब काहुके हाथ न लागा ॥
ज्ञान विराग जंजीरन ते जकरो तिन तोरि फिरै चहुँ भागा ॥
जो रसिकेसनिशंक चहूँ तरु लाज ढहावत है मदपागा ॥
सो मन मत्तमतंग अधीन ह्वै आप वधै हठि प्रेमके धागा ॥७२॥
दोहा–यौं कहि बोले फेरि पै, कीजे प्रेम विचारि ॥
हो अनंद दुहुँ ठौर जिहि, सो लीजे निरधारि ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त।

प्रीति निभै न कबौं तिहिसों जिहिके हिय मां हिम अंतरहायद ॥
तासों मिलै न कबौं सुख काहुको जा मनमें कट मध्य वसायप॥

याहिते नेह करौ उहिसों जिय जाको सदा सर और जनायल ॥
जो रसिकेसरहौ इहि भाँति तौ नंदके आदि हमेश मिलायव ७४
दोहा—पुनि सो काज न कीजिये, जाते लघुता होय ॥
नीति प्रीति वररीति युत, करै काम भल सोय ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

लौकी बात तासों कहै जाको जी गँभीर होवै वासों कहिये ना जो कहत फिरै चहूँ ॥ जैये तिहि पास जो गयेको पास राखै मान जौन मान राखै तौ न जैये भलो होतहूं ॥ रसिकविहारी होय नेहीतो सनेह कीजे नेही जौ न होतौ त्यागि दीजे भूपहो जहूँ ॥ आनवान मान सान कान निज चाहै तब येही ठान ठानैं घर बाहर रहैंकहूँ७६
दोहा—ताछिन बोले लषण पुनि, दुखमें सुधि न रहाय ॥
तब भाषी प्रभु तबहिं दृढ, रहै धीर सो आय ॥ ७७ ॥

सवैया कवित्त।

टूठहु नाहिं रहैं तरु कोउ नवै जब लागत है वन ठाढा ॥
वृक्ष जु कोउ जरै उजरै विन शाख सुपत्र रहै तहँ ठाढा ॥
सो फिरि होत हरो रसिकेश सपल्लव फूलै फलै बहु बाढा ॥
त्यौं सुख आन न त्यागै कबौ कहुँ कैसहु आय परै दुख डाढा७८
दोहा—कोऊ साँचे जीयते, शुभ प्रणगहै दिढाय ॥
ताहि प्रथमहो दुखहुतो, अंत सुखहु ध्रुव आय ॥ ७९ ॥

सवैया कवित्त।

त्रास कछू न कबौं तिहिको जिहिको जिय रंचहु होय न काचू ॥
चाहै इकंतरहै नितही अरु बैठहिं चाहै सदा मिलि पांचू ॥
सत्य सुसत्यहि सत्य भलो रसिकेश कहौं ध्रुवरेखहि खांचू ॥
देखो सिया प्रहलाद भिया इमि साँचहि आवै कबौं नहिं आंचू८०
दोहा—राम वचन सुनिकै तबहि, कह सुकंठ कर जोरि ॥
नाथ सिया प्रहलाद सम, ह्वैहै दृढ़ता थोरि ॥ ८१ ॥
सुनि रघुवर भाषी सखा, लोक अमित नरनारि ॥
गुण अवगुण मिश्रित सकल, हेरो बुद्धि विचारि ॥ ८२ ॥

पैहो दुर्गुण गुण कहूँ, गुण कहुँ दुर्गुण होय ॥
प्रकृति समै अरु विवश वश, गुण अवगुण दुहुँ जोय ॥८३॥
याते जे बुधिमंत ते, करत समस्त विचार ॥
सत्य शुभाशुभ शुद्धता, सब विधि लेत निहार ॥ ८४ ॥
केते अंतर शुभ सकल, ऊपर लगत कुभेष ॥
केते अंतर अशुभ पै, प्रगट परैं शुभ देख ॥ ८५ ॥
सो अंतरगति लषणकी, बुद्धि सहज नहिं होय ॥
करै घनो सतसंग सो, ज्ञान चहै जो कोय ॥ ८६ ॥
विना ज्ञान गति अंतरी, नहीं परै पहिचान ॥
बिन पहिचाने शुभ अशुभ, कर्म किये बहु हान ॥८७॥
याते मो मत है यही, भाषों सहित उमंग ॥
सकल कुसंगहि त्यागि कै, सदा करै सतसंग ॥ ८८ ॥
सुनि रघुवरके बैनवर, मुदित भये सब कोय ॥
दृढ़ धारी सतसंगते, दुहूँ लोक सुख होय ॥ ८९ ॥
इहि विधि वाक्य बिलास बहु, होत अनेक प्रकार ॥
कहत सुनत सब जन उचित, सह चहुँ राजकुमार ॥ ९० ॥
अपर अनेक विनोद वर, नृत्य गान रस रंग ॥
हास विलास सुहोत बहु, सब उर भरी उमंग ॥ ९१ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० वाक्य विलास
वर्णनो नाम चतुर्थो विभागः ॥ ४ ॥

---

दोहा—श्रीकौशलपति निकट उत, होत अपार अनंद ॥
इत जहँ तहँ बैठे विविध, कहत सुनत जन वृंद ॥१॥
संत विप्र मुनिमंडली, जुरीं होत सतसंग ॥
वर्णत सुमुख मुनीशबहु, प्रभु यश सहित उमंग ॥ २ ॥
ताछिन सुमुख मुनीशते, बोले हरषि सुयज्ञ ॥
कहिय उपासक रीतिवर, मुनिवर वर सर्वज्ञ ॥ ३ ॥

चौ०-सुनि मुनि सुमुख परम सुखमाना ❀ तिन सराहि बोले मतिमाना
हो वसिष्ठ सुत परम प्रवीना ❀ तुमहि विदित सब हम लखि लीना४॥
पै कछु निज मतिके अनुसारा ❀ कहिहौं यदपि सुभेद अपारा ॥
है परन्तु यह गुप्त बखाना ❀ याते वरणौं सभा प्रमाना ॥ ५ ॥
पुनि कबहूं येकांत मझारा ❀ कहि हैं हम समेत विस्तारा ॥
यह उपासना रीति अनूपा ❀ जानिलहै जन शुद्ध स्वरूपा ॥ ६ ॥
यों कहि पुनि बोले मुनिनाथा ❀ सुनिय सुयज्ञ विशदवर गाथा ॥
परम गुप्तसो गुप्तहि राषौं ❀ है प्रसिद्ध योगे सो भाषौं ॥ ७ ॥

दोहा-सुर नर सब रघुचंदको, ध्यावैं मन वच कर्म ॥
करैं अनन्य उपासना, लहैं शुद्ध पद पर्म ॥ ८ ॥
सो उपासना पंचविधि, मुख्य प्रथम शृंगार ॥
सख्य दास्य वात्सलय पुनि, है ऐश्वर्य विचार ॥ ९ ॥
जो अपने हित सत्य यह, राखे सदा विचार ॥
हम दंपति की हैं सखी, सो जानौं शृंगार ॥ १० ॥
याही अंतर दासिका, आदिक भाव अनेक ॥
मिथिला अवध प्रसंग युत, जानौ सहित विवेक ॥ ११ ॥
जो दृढ जानै हीय दृढ, अपने हेत सदाय ॥
राजकुँवरके हम सखा, सोई सख्य कहाय ॥ १२ ॥
सुहृद नर्म सचिवादि बहु, भेद सकल इहि माहिँ ॥
जाति विजाति कुटुंब कुल, रीति घनी दरशाहिं ॥ १३ ॥
जो ध्रुव दशरथनंदको, सेवहि स्वामी जानि ॥
सत्य दास हो आपतिहि, दास्य उपासन मानि ॥ १४ ॥
मात पिता गुणि आप कहँ, जो दृढ प्रीति कराय ॥
बाल लखै दशरथ सुतहि, सो वात्सलय कहाय ॥ १५ ॥
जो श्रीराजकिशोरको, परब्रह्म दृढ मानि ॥
ध्यावैं सबचर अचरमें, सो ऐश्वर्य बखानि ॥ १६ ॥
ये वर पंच उपासना, तिनके निज निज ठाम ॥
सकल उपासक जन लहैं, जहाँ मोद विश्राम ॥ १७ ॥

चौ०-जिते उपासक हैं शृंगारी ❀ तिहूँ लोक कोऊ नर नारी ॥
तिनको पूजनीय है जानौ ❀ कनकभवन वर मुख्य बखानौ १८
सख्य उपासक हेत प्रमाना ❀ रंगभवन है पूज्य प्रधाना ॥
दास्य जनन लग रतन सिंहासन ❀ जो वरराज्य तिलकको आसन १९
वातसल्य जन हित सो ठामा ❀ जन्मसदन जहँ प्रगटे रामा ॥
थल ऐश्वर्यिनको वह आई ❀ बैठि जाहिं जहँ ध्यान लगाई २०

दोहा-पंच उपासकहेत ये, मुख्य पंच अस्थान ॥
अपर सबहि सब पूज्य है, सरयू अवध प्रधान ॥ २१ ॥
याही विधि सिय रामको, ध्यावत हैं सब कोय ॥
भुक्ति मुक्ति वर भक्ति रुचि, होय सुपूरित होय ॥ २२ ॥
जे प्रवीन ते भूलिहू, भक्ति मुक्ति नहिं चाय ॥
निज सुभक्ति सिय रामकी, चाहत कृपा सदाय ॥ २३ ॥
अति उदार मृदु चित्त पुनि, समरथ सीताराम ॥
रसिकबिहारी हीयके, पूजैं सबही काम ॥ २४ ॥
अतिसमर्थ सिय राम सों, होहि भक्ति आधीन ॥
भक्ति नाम आधीन है, नाम सुगुरु आधीन ॥ २५ ॥
गुरु सतसंग अधीन है, संग सुभाग्य अधीन ॥
भाग्यहीन बहु जन्मके, ले पति कर्म मलीन ॥ २६ ॥
सो कुभाग्यको जो चहै, हो सुभाग्य सुखधाम ॥
तौ अनन्य दृढ नेम ते, सुमिरै सीताराम ॥ २७ ॥
सुनि सुयज्ञ आनंद ह्वै, कही सहित सनमान ॥
धन्य धन्य ऋषिराज वर, बहु गुणज्ञान निधान ॥ २८ ॥
ताछिन अपर सुभक्त वर, बोले शीश नवाय ॥
मुनिवर पुनि उपदेश कछु, कीजै कृपा दिढाय ॥ २९ ॥
जाते दोऊ लोकको, होय शुद्ध निरवाह ॥
सोई शिख शुभ दीजिये, दाया युत मुनिनाह ॥ ३० ॥
तब मुनि बोले प्रेम युत, प्रश्न करौ तुम जोय ॥

दुहूँ लोक अनुकूल हम, उत्तर देवैं सोय ॥ ३१ ॥
सुनि प्रमुदित ह्वै सुमति जन, ह्वै इक मुख सब कोय ॥
करत प्रश्न मुनि तासुको, उत्तर वर्णत जोय ॥ ३२ ॥

प्रश्न ॥ करैक्या ? ।

उत्तर-सिया राम भजिये सदा, करै दान सनमान ॥
सतसंगति दाया क्षमा, येही बात प्रधान ॥ ३३ ॥

प्रश्न ॥ संग किसका करै ? ।

उत्तर-संत सुजन पंडित चतुर, इनको कीजे संग ॥
कै अपने दृढ़ मीतको, जानो वैन अभंग ॥ ३४ ॥

प्रश्न ॥ सज्जन कौनहै ? ।

उत्तर-दयावंत दानी गुनी, रामभक्त रतधर्म ॥
अविरोधी सज्जन भले, शुभ संतत सत कर्म ॥ ३५ ॥

प्रश्न ॥ दुर्जन कौनहै? ।

उत्तर-धर्म विरोधक पापरत, कपटी लोभी जान ॥
रामविमुख दुर्जन लखौ, वचन सबै दृढ़मान ॥ ३६ ॥

प्रश्न ॥ सुखकाहेमेंहै? ।

उत्तर-राम भजन दानादि बहु, सुख है प्रीय मिलाप ॥
येकाकी सुनिरास पुनि, जानौ सज्जन आप ॥ ३७ ॥

प्रश्न ॥ दुखकाहेमें है ? ।

उत्तर-राम विमुख दाया रहित, दुखहै प्रीय बिछोह ॥
परबश निर्धन निर्गुणी, वचन सबै जन जोह ॥ ३८ ॥

प्रश्न ॥ मित्र कौहै? ।

उत्तर-विद्यामित्र बखानिये, पुनि चित भावै सोय ॥
तन मन धनते जो चहै, लखौ सुजन सब कोय ॥ ३९ ॥

प्रश्न ॥ पढै क्या? ।

उत्तर-सधै लोक परलोक दुहुँ, बढै हिये आनंद ॥
सोई पढिबो चाहिये, होवे बुद्धि अमंद ॥ ४० ॥

प्रश्न ॥ सुनिये क्या ? ।

उत्तर-राम कथा सुनिये सदा, चतुराईकी बात ॥
विविध प्रसंग सुग्रंथके, लखौ सुजन अवदात ॥ ४१ ॥

प्रश्न ॥ रहिये किस रीति? ।

उत्तर–सबसों नमि रहिये घने, मनमें दीन सदाय ॥
लोक वेद दोऊ लिये, समुझौ सुजन दिढाय ॥ ४२ ॥

प्रश्न ॥ जाना किस जगे? ।

उत्तर–जैयेकैती रथनकै, राम कथा जहँ होय ॥
कै दुहुँ लोक बनै तहाँ, यह समुझौ सब कोय ॥ ४३ ॥

प्रश्न ॥ कमावै क्या ? ।

उत्तर–नाम कमावै रामको, कै यश लोक मझार ॥
कै सुख दोऊ ठौरको, लीजे वचन विचार ॥ ४४ ॥

प्रश्न ॥ विचारै क्या ? ।

उत्तर–लोक और परलोकको, कीजे सदा विचार ॥
आपरूप पररूपको, वचन सुनौ यह सार ॥ ४५ ॥

प्रश्न ॥ त्यागिये क्या? ।

उत्तर–कामादिक चारहु तजो, पुनि जो सियवर हीन ॥
अरु कुसंग अभिमानको, जानौ वचन प्रवीन ॥ ४६ ॥

प्रश्न ॥ गहिये क्या? ।

उत्तर–गहिये सकल सुधर्म निज, गुणधीरज मन नैन ॥
नेह नेम अरु शत्रुकों, ये जानौ दृढ़ बैन ॥ ४७ ॥

प्रश्न ॥ शत्रु को है ? ।

उत्तर–तन धन हित घातक रिपू, अरु कामादिक जान ॥
कुसमय सम शालक सदा, वचन लेहु दृढमान ॥ ४८ ॥

प्रश्न ॥ विश्वास किसका करै? ।

उत्तर–श्रीसीता अरु रामको, चहिये दृढ विश्वास ॥
कै पुनि साँचे मित्रको, मानौ वचन सुपास ॥ ४९ ॥

प्रश्न ॥ गुरू को है? ।

उत्तर–भव बन्धन छोरै सबै, ताको गुरू बखान ॥
रक्षक अरु शिक्षक लखौ, हेरो हरषि सुजान ॥ ५० ॥

प्रश्न ॥ मोक्षकैसे होवैहै ? ।

उत्तर–राम भक्ति हिंसा रहित, जानौ मोक्ष प्रमान ॥
बचै सुपर संतापसे, गहियो वचन प्रधान ॥ ५१ ॥

प्रश्न ॥ नरककाहे से होवैहै? ।

उत्तर–पर पीडित निंदा निरत, हिंसक राम विरोध ॥
गुरु द्विज शाप सुमित्रकी, नरक होय जिय शोध ॥ ८२ ॥

प्रश्न ॥ अमर कौन है? ।

उत्तर–सुकृती सुयशी रामरत, योगी योग प्रवीन ॥
सदा अमर सो जानिये, वेद वचन रसलीन ॥ ८३ ॥

प्रश्न ॥ मृतक कौन है ? ।

उत्तर–राम विमुख अयशी सदा, मृतक समान सुजान ॥
नीच देव सेवक सबै, देखौं वचन प्रमान ॥ ८४ ॥

प्रश्न ॥ सार क्या है ? ॥

उत्तर–प्रीति राम द्विज संतमें, दया अधिक जिय माहि ॥
ज्यों चाहै त्योंही रहै, सार गहै शुभ ताहि ॥ ८५ ॥
इहि विधि प्रश्न अनेकके, मुनिवर उत्तर दीन ॥
पुनि सबही दिशि हेरिकै, बोले वचन प्रवीन ॥ ८६ ॥
लोक और परलोकमें, सुखद सत्य शुभसार ॥
राम नाम सांचो सदा, अपर असत्य असार ॥ ८७ ॥
यातें कैसहु कीजिये, भजन बनै जिमि जोय ॥
भाव कुभाव सुविधि अविधि, राम जपे सुख होय ॥ ८८ ॥
सियाराम की भक्ति दृढ, सियाराम गुणग्राम ॥
सियारामकी ध्यान नित, सियारामको नाम ॥ ८९ ॥
नाम प्रभाव अपार है, विधि हरि हरहु न जान ॥
मैं वरणौं किहि भाँतिते, अति मतिमंद अजान ॥ ९० ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

ताप दूर करबेको सीतकर सोहैसीत तमके नशायवेको भानुकी समान है ॥ बुद्धिके बढायवेको शारदासे बुद्धिवंत वित्तपूरिवेको जो कुबेर सो महान है ॥ पालिवेको विष्णु उपजैवेको विरंचि ऐसो खलके संहार हेत शंभुसो प्रधान है ॥ अभिमत देनवारो रामनाम

कामतरु रसिकविहारी भला राम नाम गान है॥६१॥काम क्रोध लोभ मोह मारबेको मारन है विधि हरि हर आदि मोहिबेको यंत्र है॥ महा दुख दारिद्र त्रितापको उचाटन है आकरषवेको सुख संपतिको तंत्रहै ॥ कठिन कुचालरत इन्द्रिनके हेत असतंभन प्रबल भूरि परम सुतंत्र है ॥ रसिकविहारी राम नाममें प्रयोग षट रामवश्य करबेको वसीकर मंत्रहै ॥ ६२ ॥ जगत अथाह सिंधु भरोहै कुमति नीर पावत न थाह कोऊ सुर मुनि राज हैं ॥ काम क्रोध लोभ मोह भँवरगंभीर परै तामें जलजंतु भूर वासनादराज हैं ॥कोऊ बहैं बूडे कोऊ बूड बच डूब पुनि कोऊहैं विकल चढे ज्ञानकी जहाज हैं॥ तेईहै निशंक भये रसिकवि-हारी पार रामनामसेतुपै चले जे तजिकाज हैं ॥६३ ॥ नामके भरोसे सब भाँतिते निशंकरहैं लोक परलोकको उपाय ना करत हैं॥ नामके भरोसे उपजावैं विधि पालैं हरि हरहू संहारे नाम ओटलै तरत हैं॥नामके भरोसे भील सबरी सुगीध कीश भये बडभारी राम जाको सुमिरत हैं ॥ रसिकविहारी राम नाम अवलंब बडो जाते दिन रैनि यमराज हू डरत हैं ॥ ६४ ॥

दोहा—ऐसो नाम अनूप जो, नहिं सुमिरै मन लाय ॥
कोऊ कैसहु होय तिहि, जन्म अकारथ जाय ॥ ६५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

योग जप साधै कोटि देव अवराधै करै संयम समाधै निरूपाधै हो न पावैना ॥ ज्ञान अरु ध्यान मान पूजा असनान दान निगम पुरानके बखान सुख आवैना ॥ तीरथ घनेरे नेम यज्ञ बहुतेर प्रेम रसिकबिहारी रूप फेरते सुहावैना ॥ येते हैं निकाम कोऊ कामके न काम कछु ह्वै हैं नहिं काम जौलों राम नाम ध्यावैना ॥ ६६ ॥ पढो चारों वेद औ अठारह पुराण षट शास्त्र यंत्र मंत्र तंत्र आदिक प्रवीनता ॥ गान तान आदिक अनेक विद्यामें प्रधान बहु गुन ज्ञान धन माननमें पीनता ॥ रूपमंतनीके मतिमंत औ कहावै संत फिरेसे दिगंतनमें जैहैना अधीनता ॥ रसिकविहारी सब भाँति भलो चाहो-तौपै जपौ राम नाम जाते मिटत मलीनता ॥ ६७ ॥

सवैया कवित्त।

सी कहते सब सिद्धि मिलै अरु ता कहते तन आनँद आवै ॥
रा कहते रस होत महा कहतेही मकार महत्व बढ़ावै ॥
जो रसिकेस प्रतीति समेत सुवर्ण भले ये चहूँ चित लावै ॥
होय उजागर लोक तिहूँ विचताहि हिये सियराम लगावै ॥६८॥

दोहा—कहत राम सीता मिलत, सीता कहतहि राम ॥
रीति अनोखी देखिये, सुमिरत सीता राम ॥ ६९ ॥
राम विना सीताभजै, सीता विन जो राम ॥
होय ताहि फल है सकल, पूरो पुजैन काम ॥ ७० ॥
जे जन प्रीति प्रतीति युत, सुमिरें सीता राम ॥
सुख पावैं दुहुँ लोकते, लहैं सदा विश्राम ॥ ७१ ॥

प्र० ॥ गुणावली ग्रंथे ॥ श्लो० ।

सीतया सहितं रामं सीतां रामेण संयुताम् ॥
न स्मरेत्स फलं पूर्णं लभते न कदाचन ॥ १ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्रीति राम नाम सों प्रतीति राम नाम सों सुरीति राम नाम सों सबहि भाँति भांतिये ॥ आशराम नामसों विलास राम नाम सों सुपास राम नाम सों अनेक विधि जानिये ॥ लोक राम नाम परलोक राम नाम सों हे रसिकविहारी सो विचार चितठानिये ॥ राम नामको विहाय पावै जो पियूष सोहै हलाहल की समान तामें धूर सानिये ॥ ७२ ॥

दोहा—करे लोकपरलोकके, साधन वृथा निकाम ॥
भये सकल निष्फल जु पै, भजे न सीता राम ॥ ७३ ॥

सवैया कवित्त।

मूड़ मुडाय कहाय कै साधु लगाई विभूति कहा तौ भयो ॥
जग लोग रिझाय घने रसिकेश रचोहन धाम कहा तो भयो ॥
नख केश बढाय बिछायकै चाम धरो बक ध्यान कहातो भयो ॥
हढनेह न लायो सियावर सों नरजन्म लियेही कहातो भयो ॥७४॥

घनाक्षरी कवित्त।

रूप गुण धनमें जु शंका अति होत आय त्याग औ विरागमें अनेक विघ्न लेखिये ॥ रसिकविहारी यज्ञ योगमें उपाधि भारी देहमें मरन नेहमें बिछोह पेषिये ॥ भूत प्रेत पूजे गति अंतकी नशात सबै जगमें वृथाही पचि दुःख अवरेखिये ॥ जामें अवलोकौ एक एक है कलंक तामें सीता राम नामैं निकलंक सदा देखिये ॥ ७५ ॥

दोहा—सीता राम सुनाम यह, सकल सिद्धिको मूल ॥
ताहि त्यागि साधत अपर, साधन मति भ्रम भूल ॥ ७६ ॥
सो यह भ्रम सतसंग बिन, कबौं न होवै दूर ॥
याते तजै कुसंग सब, जो चाहै सुख पूर ॥ ७७ ॥

सवैया—कवित्त।

ग्राम नशै धन धाम नशै सुत वाम नशै सब काम कुढंगू ॥
राज नशै सुख साज नशै जग लाज नशै औ नशै वर अंगू॥
मान नशै तन प्राण नशै गुण ज्ञान नशै दुख होय अभंगू ॥
याते सुदूर रहौ रसिकेश जु भूलि कबौं करियो न कुसंगू ॥७८॥

दोहा—पै कहुँ कहुँ संसारमें, धूतहु धरत सुभेष ॥
याते बुद्धि विचार युत, संग कीजिये देख ॥ ७९ ॥

सवैया—कवित्त।

डिंभ दिखावत लोगनको अति झूठे सुनावत ज्ञानके गाथे ॥
औरनको उपदेशैं विराग सु आप घने जगजालमें गाथे॥
बैलसे डोलत हैं नित गैल करैं बहु फैलहु लोभसे नाथे ॥
ऐसन ते रसिकेसबचै हठि सोई नशै जो लगै इन साथे ॥ ८० ॥
औरहि काह सुझावहि ते सुजनै अपनेहीं न औगुण सूझे ॥
औरहि काह बुझावहिं ते नर आपुहिं जे सब भाँति अबूझे ।
औरहिते सुरझावहिका अति आपुहि जे जग जाल अरूझे ॥
भाषतहैं रसिकेस सुनौ लखि भेष पतावनहीं विनबूझे ॥ ८१ ॥

क्षौर करावतहैं शिखते नखलों कहुँ केश को लेश नराखत ॥
भेस बनाय सुदेस सुदेस फिरैं सब वेस छऊ रस चाखत ॥
ठानै प्रपंच क्षमा नहिं रंचहु तोष न नेकमें रोषके माखत ॥
पूछत हैं रसिकेस कोऊ तब फूलि हिये हम साधु हैं भाषत ८२॥
दोहा—बहु नख जटा बढायकै, माला तिलक सुधार ॥
प्रगट भले जिनके हिये, लोभ कपट आगार ॥ ८३ ॥
कष्ट सहैं तन मन मलिन, योगी सिद्ध लखाय ॥
काम क्रोध मद लोभमें, पागे रहैं सदाय ॥ ८४ ॥
ज्ञान ध्यान पूजन पठन, त्याग योग जप दान ॥
जगत रिझावनको करैं, भरे लोभ अभिमान ॥ ८५ ॥
ऐसे जन कोऊ अजहुँ, कहूँ कहूँ दरशाहिं ॥
गृही विरक्त अनेक इमि, कलियुग चहुँ प्रगटाहिं ॥ ८६ ॥
पुनि मतवादी होत बहु, तिनहुं संग सुख नाहिं ॥
जिनके वचननको सुनत, भ्रम बाढै मन माहिं ॥ ८७ ॥

सवैया—कवित्त ।

एकहि मंडित एकहि खंडित कीनो जु पंडित ह्वै यह सूझो ॥
है रसिकेस कहा इहिमें दिनरैन वृथा मत वादमें झूझो ॥
ताहि कहा नर जानि सकै विधि जाहि विचारत होत अबूझो ॥
नेति कहै जिहि भेदहि वेद जु वेदहु ते अति भेद है गूझो ॥८८॥
द्रोही महा मतिमंद ते मूढ भये जु हरी हरके मत खंडू ॥
लोक नशै परलोक नशै तिनको सबही विधि होत कुभंडू ॥
है उनकी वर विद्या वृथा कछु ज्ञान न आयो रही मति चंडू ॥
न्हायो मतंग ज्यौं आपनेही कर लै अपने शिर डारत पंडू८९॥
भये मतवारे भये मतवारे करैं मत वाद करै मतवादी ॥
हरी हरहैं न हरी हरहैं न हरीहर हैं यौं ठनै बकवादी ॥
लखैं न गुणैं न लखैं नगुणैं जिंहि अंत न आदि न अंत न आदी॥
कहै रसिकेस कहै रसिकेस सुदोऊ अनादि हैं दोऊ अनादी९०॥

दोहा–इहि विधि सुमुख मुनीश वर, करत हुते उपदेश ॥
ताछिन इक तापस जटिल, आयो तहाँ कुभेष ॥ ९१ ॥
इक कौपीन कमंडलू, धूर भरे सब अंग ॥
कर लीने कंथा मलिन, ठाढो आय कुढंग ॥ ९२ ॥
ताहि निरखि अज्ञान जन, हँसे परस्पर हेरि ॥
सोलखि तापस क्रोध भरि, बोलो तिन प्रति टेरि ॥ ९३ ॥

सवैया कवित्त ।

सूखेचनाहि चबात कबौंरहै भूखें कबौं कबौं खात है खाझा ॥
कोउके द्वार कबौं नाहिं याचत चित्त रहे खुसहाल में वाझा ॥
होत वही रसिकेस सदा करतार लिखो जु ललाट के माझा ॥
कैसहु हैं हम नीके बुरे पै कहो कछु याहुमें काहु को साझा ॥ ९४ ॥
घी अरु खांड मिले तो खुशी औ खुशी है मिलै जुपै रूखियै भाजी ॥
सूखियै रोटी को टूक मिले खुशी है खुशी जो मिले थारिहि साजी ॥
कंथा मिलै तो खुशी खुशी शालपै प्यादे खुशी औ खुशी चढे वाजी ॥
राजी रहैं रसिकेश घने नित हैं हम रामकी राजीमें राजी ॥ ९५ ॥

दोहा–यौं कहि बोलो जटिल पुनि, करिय नहीं अभिमान ॥
गति अलक्ष है रामकी, कोऊ कछू न जान ॥ ९६ ॥
बने विनाशत छिनकमें, विनशे बनत उताल ॥
भूलिहु कै हँसिये न लखि, काहू बिगरे हाल ॥ ९७ ॥
सो सुनिकै इक विप्रवर, बोलो गनक सहेत ॥
जैसे जाके ग्रह परत, तिहि तैसो फल देत ॥ ९८ ॥
ताहि निदरि तापस बहुरि, कहे कुपित ह्वै वैन ॥
केवल परधन हरन बुधि, और ज्ञान कछु है न ॥ ९९ ॥

सवैया कवित्त ।

दोछिनहू न भरोस तिही तनुको बहु वर्षकी आयु कहे शठु ॥
बापुरो तू वह जाने कहां पढ़ि ज्योतिष ज्ञान विहीन रहो लठु ॥